श्रीः

ज्योतिष्मती

हेमन्ताङ्क

वर्ष ५ सं० २०१८

संख्या २ माघ

वार्षिक मूल्य ६)

इस अङ्कका मूल्य १।।।)

सञ्चालक और सम्पादक
श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी
ज्योतिषाचार्य

विषय-सूची

'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' सं० २०१९ वि०

[सम्पादक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

सदाकी भांति यह पञ्चाङ्ग अपने चमत्कारी फलादेश और गणितकी शुद्धतासे परिपूर्ण तो है ही । साथ ही अष्टग्रहीका आगामी वर्षमें कहां क्या प्रभाव पड़ेगा—इसका विशद विवेचन आपको इसी पञ्चाङ्गमें मिलेगा। अनुभूत सिद्ध मंत्र-यंत्र औषधि प्रयोगमें इस वर्ष दरिद्रतानाशक त्रिलोह-मुद्रिका, लक्ष्मीदाता सिद्ध यंत्र, पत्नी-प्राप्ति एवं वर-प्राप्तिके सिद्ध मंत्र प्रयोग और पुत्र-प्राप्ति तथा परिवार नियोजनकी सिद्ध औषधियां पञ्चाङ्गमें प्रकाशित की गई हैं । कागज और सुन्दर छपाई इस वर्षके पंचांगकी विशेषता है । छपते ही हाथों-हाथ बिक रहा है, अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष रही हैं अतः नीचे लिखे मुख्य विक्रेताके पतेसे शीघ्र मंगवा लें, अन्यथा गत वर्षकी भांति विलम्ब करनेसे निराश होना पड़ेगा।

पृष्ठ १२२, मूल्य साधारण संस्करण (न्यूजप्रिण्ट अखबारी-कागज) के पंचांगका १.०० । राज संस्करण (व्हाइट प्रिण्ट सफेद बढ़िया कागज) का १.२५ । एक पंचांगका डाक रजिस्टरी व्यय ७५ नये पैसे।

इस वर्ष हमने पंचांगके अधिकृत मुख्य विक्रेता (सोल एजेण्ट) राजप्रकाशन अजमेर को नियुक्त किया है अतः पंचांगके सभी आर्डर नीचे लिखे पते पर अजमेर भेजें । —व्यवस्थापक 'श्रीविश्व-विजय-पञ्चाङ्ग'

प्राप्ति स्थान—राजप्रकाशन, पुरानी मण्डी, अजमेर (राजस्थान)

❀ श्रीः ❀

ज्योतिष्मती

संरक्षक—

हिजहाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ गजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरे

*

सहायक—

श्रीमान् नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' साहब, अध्यक्ष नगरपालिका सोलन।
श्रीमान् सेठ ब्रजगोपालजी दम्माणी, बुलियन-एशोशियेशन बिल्डिंग, बम्बई-२
श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)।
श्रीमान् मेसर्स झुम्बरलाल नथमल झंवर, मालेगांव (नासिक)।
श्रीमान् रामचन्द्र हरिराम मानधन्या, मालेगांव (नासिक)।

*

सम्पादक—

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

*

प्रकाशक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

❋ 'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य ❋

उद्देश्य—

१—भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२—भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३—ज्योतिर्विज्ञानकी सर्वतोमुखी उन्नति और ज्योतिषशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) पांचसौ एक रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) एकसौ एक रुपये प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे।

(३) जो सज्जन ११) से १००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सदस्य मा जायेंगे।

(४) ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ६.०० छः रुपये और एक प्रतिका १।।।) एक रुपया ७५ नये पैसे है।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतनकी ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएँ सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(७) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे का अंक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं।

'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ४.७५ रु०, दो अङ्कोंका मूल्य ३.५०, और एक अङ्कका मूल्य १.७५ मनीआर्डर द्वारा पेशगी आने चाहिएँ। वी० पी० नहीं भेजी जावेगी।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो वसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिखकर केपिटल लेटर (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट और टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला पूर्णिमा) को प्रत्येक ग्राहक के नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है।

ग्राहक नम्बर स्मरण रक्खें

यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होने की तिथिसे १५ दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए। जो अपना ठीक शुद्ध ग्राहक नम्बर नहीं लिखेंगे उनको और १५ दिनके बाद अंक न मिलनेकी शिकायत लिखने वालोंको दुबारा अंक नहीं भेजा जावेगा, यह नोट करलें।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (शिमला)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[हेमन्ताङ्क]

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिः प्रबन्धैः समम्
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष ५	सोलन, पौष शु० १५ शनिवार सं० २०१८ वि० राष्ट्रिय मिति (सौर) ३० पौष, शाके १८८३	संख्या २

ज्योतिष्मती-कालिका

नृत्यन्तीव पदक्रमैरभिनवैस्तीव्रैस्तथा कोमलैः
कालं कालगतं कलाङ्ककलया सञ्जीवयन्ती स्थिता ।
सम्पत्तिं ददती सुखं विदधती ज्ञानं समातन्वती
पायाद् विश्वविलास लास-ललिता 'ज्योतिष्मती' कालिका ॥

जगन्नाटककी प्रमुख सूत्र-धारिणी स्वच्छन्द विहारिणी भगवती ज्योतिष्मती श्रीकालिका तीव्र एवं कोमल पदन्याससे ताण्डव एवं लास्य नामक नृत्योंसे अभिनय कर रही हैं;—काल वशंगत महाकालको भी अपने अमृत निःस्पन्दी पदस्पर्शसे उज्जीवित कर रही हैं। इनके समाश्रयणसे सम्पत्तिका अधिगम होता है, सुखकी उपलब्धि होती है, एवं-ज्ञानकी प्राप्ति होती है। अतः हमारी प्रार्थना है कि वह विश्वका संरक्षण करे ।

(पदक्रम, काल एवं 'ज्योतिष्मती' आदि पदसे एक अर्थान्तरकी भी अभिव्यक्ति होती है।)

कालिका स्वरूपिणी 'ज्योतिष्मती' पत्रिका विश्वका कल्याण करे। यह सरल एवं कठिन पदध्वनिमय लेखोंसे वह नृत्य करती है कि हृदय उच्छ्वसित हो उठता है, यह अपने अभिनव निबन्धोंसे मृतप्राय काल-शास्त्र (ज्योतिःशास्त्र) को इस प्रकार पुनःरुज्जीवित कर देती है कि विज्ञान चकित होता है, तथा यह 'व्यापारिक भविष्य' आदि लेखोंसे सम्पत्तिका, प्रमोदात्मक प्रबन्धोंसे सुखका, एवं धार्मिक तथा शास्त्रीय लेखोंसे ज्ञानका प्रदान कर सुविज्ञोंको बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

—सदाशिव दीक्षित

सम्पादकीय विचार—

परम प्रभुके चरणोंमें

आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैः अद्या वृणीमहे । सत्य सवं सवितारम् ॥ (ऋ० ५—८२—१४)
तत् सवितुः वृणीमहे, वयं देवस्य भोजनम् । श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि ॥ (ऋ० ५-८२-१)
नमः सायं नमः प्रातः, नमो रात्र्या नमो दिवा । भवाय च शर्वाय च उभाभ्यामकरं नमः ॥
(अ० ११—२—१६)
नमस्ते भगवन् ! अस्तु, नमस्ते भगवन् ! अस्तु ॥ (यजु० ३—६—२१)
स्वस्ति नो अस्तु, अभयं नो अस्तु । नमो अहोरात्राभ्यामस्तु ॥ (अ० १६—८—७)

जमुनाके तटसे उठी यज्ञ-ज्वालाओंके साथ राजधानीमें भारतके डेढ़-सौ पण्डितोंने घोषणा की है कि विश्वमें शान्ति होगी। अष्टग्रहीके भयसे भारतमें सर्वत्र यज्ञानुष्ठान जप संकीर्तन हो रहे हैं। नगरसे लेकर छोटेसे ग्राम तक जितने छोटे बड़े यज्ञानुष्ठान नाम-संकीर्तन एवं प्रभु-प्रार्थनाएँ अब हुई और हो रही हैं उतनी पहले कई दशकोंमें सुनाई नहीं दीं। भय बिना प्रीति या प्रार्थना भी नहीं होती, प्रार्थनामें बड़ा बल है। इस युगका महापुरुष प्रार्थनाकी वेदी पर ही मारा गया, और गोली लगने पर उसके मुंहसे यही शब्द निकला—"हरे राम" ईश्वरार्पण जीवन ही सार्थक और पूर्ण है। जब आज मन संशयग्रस्त है, बुद्धि ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पा रही, किस मार्गसे जावें, यह तय करना कठिन हो रहा है, तब उसकी ही शरणमें जाना उचित है, जो इसका उत्पादक पालक और अन्तमें संहारक है। एक ओर जब हम चन्द्रलोकमें पहुँचने वाले हैं, वहां पहुंचनेके लिए मार्ग तैयार कर रहे हैं, तब दूसरी ओर मानवका बीज तक नष्ट कर देनेकी तैयारी कर रहे हैं और मेगेटन बमोंके विस्फोटसे यह जगत् भयभीत है, इस दुविधामें उसके चरणोंमें जानेके सिवाय और क्या मार्ग है ? अतः आध्यात्मिक शान्तिके लिए, आधिदैविक और आधिभौतिक शान्ति के लिए भी परमप्रभुका मंगलमय ईश्वरका स्मरण कीजिए, ध्यान कीजिए और उसको नमस्कार कीजिए। वह शक्ति देगा, बल देगा, और सद्बुद्धि देगा, उससे शक्तिमान् और बलवान् होकर आगे बढ़िए, यह वर्ष आप सबके लिए मंगलमय हो। यही परम प्रभुसे विनती है।

ज्योतिष विज्ञान है

भारतके प्रधानमंत्री ज्योतिषको विज्ञान नहीं मानते हैं। यद्यपि नेहरू मंत्रिमंडलका प्रत्येक मंत्री ज्योतिषियोंसे परामर्श करके कोई नया कार्य करता है। परन्तु यह तो एक विश्वास का भाग है, यह कहा जा सकता है। किन्तु, ज्योतिष विज्ञान है और यह सिद्ध करनेकी आवश्यकता निरन्तर अनुभव की जा रही है। इस प्रसंगमें एक उदारण देना ठीक होगा।

'सूर्यसंहिता' की एक प्रतिलिपि ताल पत्रों पर लिखी श्री उमेश कवि (भावनगर) के पास है। इसमें भावी निर्वाचन और विश्वकी अन्य अनेक समस्याओं पर कुछ भविष्यवाणियां भी हैं। उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है। अवश्य ही संस्कृतमें कहीं कहीं अशुद्धियां रह गई हैं जो लेखककी असावधानीसे भी सम्भव है।

"क्रान्तिकालो लोकराज्ये विशेषतः श्वेतवस्त्रे बहुराजा (भविष्यन्ति) स्वकीय देशभाक्स्तथा स्वतंत्रता प्रणालि च बाले वृद्धे परिवर्तनम् (?) प्रमन्योहम् कालकर्म प्रभावतः।" अर्थात् संक्रमण या क्रान्तिकालमें देशमें निराशाका विस्तार और प्रसार होगा और निर्वाचन-संग्राम व्यर्थकी उत्तेजनाके साथ चलेगा. और बुद्धिहीन परस्पर विरोध विरोधी दलोंमें होगा। श्वेत वस्त्रधारी शासकोंकी चुनावमें विजय होगी।

इसमें आगे कहा गया है—

विधादो नृपति जने राजा प्रजा प्रवर्गंच कलहे सार-सारिका विपाके पश्चात्तापो स्याज्जलनं कल्पनं तथा विपाके सफलो सार इह जन्मे अवनितले धर्मतत्वं अधर्म-तत्वं गणनामैव गीयते, वर्ण प्रभाव लुप्तोस्या आश्रमो अपि तद्वत विचित्र मेदिनी वर्गे बंधनस्त्यागो भविष्यति समाजे नामकर्मस्य उच्यते भास्करो मुनि समाजे बंधन-त्याग भक्ष्येध्ये अपि तद्वत वसुहीना वसुन्धरा लोके राजा-हीना च मेदिनी उक्तर्सो हीनवर्गस्य उन्नति नीचता स्तथा कामिनी धर्मशुल्लिन्या कर्म केशेपि तद्वत् विचित्र मेदिनी वर्गे कालक्रमो यथारवै तदा समय समाकालो प्रश्नकर्ता भविष्यति ।"

अर्थात् धार्मिक जीवनके प्रति उदासीनता रहेगी, जाति और परम्परागत बन्धनों व वृद्धोंके प्रति असम्मानका भाव रहेगा, एक विचित्र प्रकारके निश्चय वाली जनताकी मान-सिक प्रवृत्ति होगी। जीवनका मूल्य उलट-पलट जायगा, असन्तुलन रहेगा, कानून शिथिल होगा, अनुशासनका अभाव होगा, सेवाके नाम पर दिखाऊ काम होंगे। भोजनमें कोई विवेक न रहेगा—इस प्रकारका जीवन होगा। निम्न जातिके लोग शासक होंगे, और उच्च जातियोंके लोगोंका पतन होगा। स्त्रियां सतीत्वकी रक्षाकी ओरसे लापरवाह होंगी, बेचैन रहेंगी, शान शौकत पसन्द करेंगी, बाहरी रूप पर अधिक ध्यान देंगी। पिछले कर्मोंके कारण इस प्रकार का विचित्र जीवन होगा।

ताल-पत्रकी आयु निश्चित करना कठिन नहीं है। 'सूर्य-संहिता' ने प्रश्नकर्ताको उपर्युक्त उत्तर दिया था। यह ब्रिटिश शासनकी स्थापनासे पहले ही दिया गया होगा। विदेशी शासनके प्रभावने सामाजिक जीवनमें जो परिवर्तन किया है, और कांग्रेस-शासनमें जीवन जो रूप ग्रहण कर रहा है, उसको यथार्थरूपमें जिस ज्ञानके द्वारा बताया है, उसको क्या विज्ञान माननेसे इन्कार किया जा सकता है ?

भारत के पड़ौसी राष्ट्रोंमें ज्योतिर्विदोंकी कुछ भविष्य-वाणियां सत्य सिद्ध होनेपर वहाँकी सरकार द्वारा वे सम्मा-नित किये जाते हैं, पर ज्योतिषके उद्गमस्थान भारतके ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंकी एक नहीं, देश विदेशकी अनेक भविष्य वाणियां—युगपुरुष महात्मा गांधी और गृहमंत्री पन्तके निधनका समय तथा प्रधानमंत्री नेहरूके सम्बन्धमें की गई भविष्य वाणियाँ तक—अक्षरशः सत्य सिद्ध होने पर भी देशके ज्योतिर्विदों और इस महान् ज्योतिर्विज्ञान पर प्रधानमंत्रीके द्वारा प्रहार होते रहते हैं। इस सम्बन्धमें आज दि० १५-१-६२ के अंकमें दिल्लीके सुप्रसिद्ध सह-योगी दैनिक 'नवभारत टाइम्स' ने सम्पादकीय 'विचार-प्रवाह स्तम्भ' में जो लिखा, वह हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं—

"बर्मी ज्योतिषीका सम्मान

बर्माके ५४ वर्षीय ज्योतिषी 'ऊ थानमांग' को बर्मा-सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है, क्योंकि उनकी दूसरे महायुद्ध तथा १९६० के चुनावमें यूनियन-पार्टीकी विजय की भविष्यवाणियां सही निकलीं। भारतके पड़ोसी अन्य देशोंमें भी ज्योतिषियोंका सम्मान होता है। भारतमें अजीब हालत है। केन्द्रके और राज्योंके अधिकांश मन्त्री ज्योति-षियोंसे अपना भविष्य जाननेको व्यग्र रहते हैं। संसद और विधान-मंडलोंके सदस्योंमें अधिकांश ज्योतिष पर विश्वास करते हैं। जो पूरा विश्वास नहीं करते, वे भी दृढ़तापूर्वक नहीं कह पाते कि वह अविश्वसनीय ही है। ज्योतिष विश्वसनीय है अथवा अविश्वसनीय, इस प्रश्न पर अपनेको अविश्वासी घोषित करके अगर कोई चुनाव लड़े, तो इस देशके ही नहीं, गैर कम्युनिस्ट विश्वके किसी भाग, किसी सम्प्रदाय और किसी जातिमें उसे विजयी बनाने वाले लोग अत्यन्त थोड़े ही मिलेंगे। फिर भी भारत के जनतंत्रवादी प्रधानमंत्री ज्योतिषको निरर्थक बतानेका कोई अवसर नहीं छोड़ते। दूसरोंको उनकी सलाह है कि "दिमाग की खिड़की बन्द मत करो।" वे खुद अपनी उस सलाह पर अमल करना शायद अनिवार्य नहीं मानते।

पश्चिम एवं ज्योतिष

कहा जाता है कि नेहरूजीकी शिक्षा पश्चिममें हुई और इसलिए वे ज्योतिष पर विश्वास नहीं करते। सच तो यह है कि पश्चिम वाले ज्योतिषको पश्चिमकी ही उपज मानते हैं। वे तो यह भी कहते हैं कि भारत और चीनमें यूनानी ज्योतिष-सिद्धांतोंका ही ग्रहण किया गया है। प्राचीन कालके अंग्रेज कवियोंकी अनेक कविताएँ समझना कठिन होगा, यदि ज्योतिष-विषयक प्राविधिक शब्दोंकी जान-

कारी न हो। आधुनिक अंग्रेजीमें भी उन शब्दोंकी संख्या थोड़ी नहीं। चौसर, मिल्टन और शेक्सपियर तो ज्योतिषमें विश्वास रखने वाले थे ही, बेकन एवं ब्राउन जैसे अपने समयके ज्योतिषियोंकी क्षमताके आलोचकोंने भी ज्योतिषको निरर्थक नहीं बताया। ज्योतिषका मूल सिद्धान्त यह है कि 'संसारचक्र एक निश्चित विधानके अनुसार चल रहा है एवं आकाशमें जो नक्षत्र हैं, उनसे पृथ्वी अप्रभावित नहीं रह सकती।' इस सिद्धान्तकी अकाट्यतामें सन्देह करना तो दुराग्रह जैसा ही है। ज्योतिषी उस विधानको जाननेका प्रयास करने वाले लोग हैं। अगर वे पूरी तौर पर विधान को नहीं जान पाते, तो इसका अर्थ यह कैसे होगा कि उसे जाननेकी चेष्टा निरर्थक या अवैज्ञानिक है? संसारका कोई विज्ञान पूर्ण नहीं।"

बर्लिनका प्रश्न

लाओस, कांगो, वियतनाम, और बर्लिन विश्व-समस्याएँ हैं, और इनके ऊपर विश्व-शान्ति निर्भर करती है। इनमें भी बर्लिन प्रश्न सर्वतोपरि भयानक है। सोवियत रूस और पश्चिमी राष्ट्र इस विषयमें कोई समझौता कर सकेंगे, इसकी आशा नहीं है। क्योंकि इसके साथ दो जीवन-प्रणालियों, दो प्रकारके सामाजिक जीवनों और आर्थिक प्रणालियोंको स्वीकार करनेके प्रश्न सम्बद्ध हैं। दोनों पक्ष शान्ति तो चाहते हैं, किन्तु दोनों सह-अस्तित्व के लिए तैयार नहीं है। जर्मनी विभक्त है। दोनोंमें दो सरकारें और दो सेनाएँ ही नहीं है, यदि यही होती तो दोनोंका मेल हो सकता था, और तब बर्लिन प्रश्न ही उत्पन्न न होता। बर्लिन प्रश्न इसलिए उत्पन्न हुआ है कि विभक्तजर्मनीके दोनों भागोंका जीवन-आदर्श और विचार दृष्टिकोण पृथक् पृथक् है और यदि एक मास्कोकी ओर देखता है, तो दूसरा वाशिंगटनकी ओर देखता है। बर्लिन प्रश्न इस प्रकारसे रूस और अमेरिकाके विश्व-प्रभुत्वका प्रश्न है। यदि ये दोनों महान् राष्ट्र विश्व-प्रभुत्वका विचार त्याग दें, जर्मनीसे दोनों अपनी सेनाएं बुला लें और जर्मनों को उनके भाग्य पर छोड़ दें, जर्मन-जीवनमें हस्तक्षेप न करें, तो बर्लिन प्रश्न क्षणोंमें हल हो सकता है। परन्तु यह न रूस चाहता है, और न अमेरिका। अतः बर्लिन प्रश्नके रूपमें रूस और अमेरिकाके विश्व-प्रभुत्वका प्रश्न हमारे सामने सदा बना रहता है, और जब तक कि इन दोनों विश्व शक्तियोंकी शक्ति है, तब तक यह बना रहेगा।

गोवा स्वाधीन

भगवान् श्रीपरशुरामके यज्ञोंसे पवित्र, श्रीकृष्ण व जरासन्धके युद्धोंका रणक्षेत्र गोवा पुर्तगाली दानवी और आसुरी शासनसे मुक्त हो गया है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम पूर्ण हो गया। पुर्तगीजोंने गोवाको १५१० में बीजापुरकी आदिलशाहीसे लिया था, और विजयके बाद जो कोई व्यक्ति दिखाई दिया, उसको उन्होंने कत्ल कर दिया था और मन्दिरों एवं मस्जिदोंको आग लगा दी थी। ईसाई सभ्यता इस रूपमें भारतमें ४५१ वर्ष पहले आई थी। आज उसका अन्त हो गया। १९६२ का प्रारम्भ इस हर्ष से हो रहा है, यह एक शुभ सूचना है।

यूरोप और भारतका, यूरोप और एशियाका सम्बन्ध सर्वप्रथम गोवा द्वारा हुआ था। वह विजित और विजेताका सम्बन्ध था, वह अब समाप्त हो गया है। इससे ब्रिटेन नाराज है, अमेरिका क्षुब्ध है। क्योंकि वे श्वेतांगोंकी श्रेष्ठताके चिन्ह स्वरूप गोवा पर पुर्तगाली शासन देखना चाहते थे। श्वेतांगोंका दावा कि "परमात्माने उनको दुनिया पर राज्य करनेके लिए बनाया है, वे विश्वको सभ्यता और संस्कृति सिखानेके लिए राज्य कर रहे हैं" नष्ट हो गया है। अतः पश्चिमी राष्ट्रोंका यह करुण क्रन्दन है कि शान्त भारतने तलवार उठाई।

'मारमोगुआ' का बन्दरगाह संसारके अच्छे बन्दरगाहों मेंसे एक है। यहां बड़ेसे बड़ा जहाज आ सकता है। नौ अड्डेके यह उपयुक्त है। 'नाटो' शक्तियोंकी दृष्टि इस पर थी। अमेरिकी परराष्ट्र मंत्री स्व० डलेसने इसी उद्देश्यसे अधिनायक डा० सालाजारकी इस बातका समर्थन किया था कि गोवा पुर्तगालका प्रान्त है, यद्यपि संयुक्तराष्ट्रने गोवाकी पुर्तगालके उपनिवेशोंमें गणना की थी। अमरीकी प्रतिनिधि अडाली स्टीवंसनने दुःखके आंसू बहाये हैं कि गोवा लेकर भारतने संयुक्तराष्ट्रका घात किया है। किन्तु वे भूल गए कि जब अमेरिकाने गोवाको पुर्तगालका प्रान्त बताया था तब उसने ही संयुक्तराष्ट्रकी अवज्ञा और अवहेलना

करके उसकी जड़ पर कुल्हाड़ा चलाया था। औपनिवेशिक शासनकी समाप्ति पर प्रसन्न होना चाहिए था, परन्तु पश्चिमी देश रो रहे हैं। क्यों? क्योंकि वे उपनिवेश छोड़ना नहीं चाहते। जो शेष बचे हैं, उनको अपने प्रभुत्व में रखनेके लिए कटिबद्ध हैं। गोवा-मुक्तिने रहे सहे उपनिवेशोंकी मुक्तिका मार्ग खोल दिया है। जैसे १९४७ में भारतीय स्वाधीनताने एशिया और अफ्रीकाकी स्वाधीनताका द्वार खोल दिया था। नीदरलैण्ड इसीलिए परेशान है। फ्रांस और ब्रिटेन चिन्तित हैं, क्योंकि अफ्रीकामें स्वाधीनता का निनाद गूंज रहा है। डा० सालाजारकी गद्दी हिल गई है। 'बेजा-विद्रोह' ने बता दिया है कि डा० सालाजारका अधिनायकत्व अब टिक नहीं सकता। पश्चिमी यूरोपियन राष्ट्र जोकें थी, उनसे एशिया और अफ्रीकाकी मुक्ति सब प्रकारसे अभीष्ट थी। इसके बिना एशिया और अफ्रीकाकी गरीबी दरिद्रता और कंगाली कभी दूर न होती।

निसर्ग रमणीय गोवा यात्रियोंके लिए रमणीक स्थान है। गोवाका लोहा प्रथम श्रेणीका है। सह्याद्रिके प्रपातों से बिजली पैदा होगी और इसके वनोंकी लकड़ी नये-नये उद्योगोंको जन्म देगी। भूगर्भमें छिपी सम्पत्ति बाहर निकलेगी। देशकी समृद्धि बढ़ेगी। पंजिमके हवाई अड्डे पर बड़ेसे बड़ा जेट विमान उतर सकता है। सामरिक दृष्टिसे यह महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। गोवा सिंधुसागर (अरब समुद्र) में भारतका प्रहरी होगा, और पाकिस्तान पर कड़ी नजर रख सकेगा। पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तानको जोड़ने वाला समुद्री मार्ग भारतके नियंत्रणमें आ गया है। विभक्त पाकिस्तान अब और एक दूसरेसे दूर हो गया है। युद्धकी अवस्थामें ये दोनों एक दूसरेकी सहायता न कर सकेंगे। जल थल नभ तीनों भागों पर भारतका प्रभुत्व अब स्थापित हो गया। गोवाके भारतमें अन्तरलीन होने पर यदि पाकिस्तान चिल्लाए रोए, ब्रिटेन अमेरिकासे अपील करे तो क्या आश्चर्य!

ब्रिटेन पराजित

क्रिकेट-जगत्में ब्रिटेनको एक और गहरा धक्का लगा है। भारतीय क्रिकेट खेलकी निन्दा करनेमें ब्रिटिश पत्रोंने कुछ उठा नहीं रखा था। बम्बईमें मैचके अनिर्णीत रहने पर उन्होंने भारतीय खिलाड़ियोंको दब्बु और भीरू तक कहा और लिखा कि ये लोग नीरस, ऊबा देने वाला खेल खेलते हैं। भारतीय खिलाड़ियोंका अपमान करनेके लिए बम्बई में ब्रिटिश दल नायक डेक्सटरने कभी गोलन्दाजी न करने वाले रिचार्डसनसे गोलन्दाजी कराई। किन्तु कानपुरमें उनको भारतका तेज दिखाई दिया, और उनको पराजय सामने दिखाई देने लगी। कलकत्तेके ईडन गार्डनके मैदानमें इंग्लैण्ड १८७ रनोंसे हारा। भारतकी इंग्लैंड पर यह तीसरी विजय है। १९३२ से भारत और इंग्लैंडके बीच टेस्टमैच हो रहे हैं। २९ टेस्ट मैचोंमें भारत तीन हीमें जीता है, और वह भी भारत भूमिमें। पहली विजय उसने १९५०-५१ में पाई थी। किन्तु कलकत्तेकी विजयने भारत की दिग्विजयका मार्ग प्रशस्त कर दिया है। कलकत्ताने बता दिया कि भारतके खिलाड़ी 'टीम-स्प्रिट' दल-भावनासे खेलनेमें समर्थ हैं, वैयक्तिक यश और गौरवके लिए नहीं, अपितु दल और देशके गौरवकी रक्षाके लिए सामूहिक रूप से खेलनेमें समर्थ हैं। क्षेत्र-रक्षण, गोलन्दाजी और बल्लेबाजी, इन तीनोंमें भारतने ब्रिटेन पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। अभी २ ये पंक्तियां छपते समय १५ जनवरीको मद्रास में भी ब्रिटेन भारतके द्वारा बुरीतरह १४७ रनोंसे पराजित हुआ है। भारतीय क्रिकेटके इतिहासमें इस विजयके साथ १५ जनवरीको एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।

दूर ही दूर

ब्रिटेन और पाकिस्तान भारतसे दूर ही दूर होते जा रहे हैं। पाकिस्तान तो भारतके साथ सम्बन्ध तक नहीं रखना चाहता। इसका नया प्रमाण है कि अहमदाबादमें हुए अन्तर्राष्ट्रीय हाकी मैचमें ब्रिटेन और पाकिस्तान ये दोनों सम्मिलित नहीं हुए। विभिन्न देशोंकी भारत समेत दश टीमें इस मैचमें शामिल हुईं। किन्तु पाकिस्तान इसमें सम्मिलित नहीं हुआ। क्रीड़ा-जगत्में भी वह भारतसे बैर रखता है, प्रतिस्पर्धा नहीं, यह इससे प्रकट है। पाकिस्तानका अहमदाबाद न आना इस दृष्टिसे स्मरणीय रहना चाहिए। भारतके प्रति उसका भाव मैत्रीपूर्ण नहीं है।

काश्मीर पर पाकिस्तान आक्रमण करेगा, यह आशंका अनेक बार प्रकट की गई है। उसका यह भाव उसको पुष्ट

करता है। काश्मीर पर हमला करनेके विचारसे वह चीनसे भी मैत्री कर रहा है, यद्यपि इस्लाम और कम्युनिज्ममें 'अहिनकुलवत्' वैर है। अतः पाकिस्तानकी गति-विधि पर सतर्क दृष्टि रखनेकी आवश्यकता है। काश्मीरकी प्रतिरक्षाको भी सुदृढ़ करना चाहिए।

पटना कांग्रेस

पटना कांग्रेसने एक बात स्पष्ट कर दी कि भारतीय जनता प्रधानमन्त्रीको राष्ट्रपुरुष मानती है और उनके दर्शनोंके लाभको सौभाग्य मानती है। कांग्रेसके अधिवेशनमें पांच लाख नर-नारियोंका समवेत होना यही सूचित करता था। प्रधानमंत्री भी इस बातको अनुभव करते थे। यदि प्लेटफार्म पर्याप्त ऊंचा होता तो दर्शकोंको प्रधानमन्त्रीके अनायास दर्शन हो जाते और दर्शक भी प्लेटफार्मके अन्दर न बढ़ते।

निर्वाचनसे पहले कांग्रेसका यह अधिवेशन कांग्रेसकी विजयके अनुकूल वातावरण बनानेके लिए किया गया था। अतः कांग्रेसके अध्यक्ष श्री संजीव रेड्डीके भाषणमें किसी नई बातको खोजना व्यर्थ है। परन्तु राष्ट्रीय एकताकी बात इस भाषणमें दुहराई गई है। किन्तु राष्ट्रीय एकताके लिए क्या करना चाहिये, यह अध्यक्षने नहीं बताया। जातिवाद बुरा है, ठीक है परन्तु इसका अन्त करनेके लिये कांग्रेसने क्या किया?

जातिवाद भारतकी प्रगतिमें बाधक है, प्रधान मन्त्रीने भी यह बात दोहराई है। परन्तु प्रश्न यह है, क्या जाति-वाद आजके समान पहले भी कभी बाधक सिद्ध हुआ था? शिवाजीका महाराष्ट्र राज्य क्या सूचित करता है? क्या उसकी स्थापनामें जातिवाद बाधक सिद्ध हुआ? उस समय जातिभेद था, परन्तु केवल धार्मिक कृत्यों और संस्कारों के समय ही। सामाजिक और राजनीतिक एवं आर्थिक जीवनमें इसका कोई स्थान न था। भोजन तकमें न था। पेशवा मराठे सरदारोंके साथ एक पंक्तिमें बैठकर भोजन करता था और पेशवाकी स्त्री या घरानेकी नेतृ सबको समान भावसे आदरसे परोसती थीं। आज यदि जाति-भेद विषमरूप में हमारे सामने है, तो इसके लिये दोषी कौन है? क्या आज के अंग्रेजी पढ़े लिखे बाबू और राजनीतिक नेता नहीं हैं, जिन्होंने अंग्रेजोंके देखा-देखी अपना एक पृथक् वर्ग बनाया हुआ है। विभेदात्मक भावना और विभाजक रेखा अंग्रेजों ने पैदा की है, विषमता उत्पन्न करनेका मूल अंग्रेजी है। किन्तु कांग्रेस और कांग्रेसी नेता विष बेलको ही अमृत-बल्लरी मानते हैं। इस अवस्थामें क्या राष्ट्रीय एकता उत्पन्न हो सकती है?

जातिभेद इस देशसे नष्ट होने वाला नहीं है, यह एक ऐतिहासिक सत्य है। हाँ, इसका महत्व अवश्य राष्ट्रीय जीवन और सामाजिक जीवनसे नष्ट किया जा सकता है। भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीरने जाति-भेदका अन्त कर दिया था, यह कहा जाता है। किन्तु इसके बाद भी आज जातिभेद विद्यमान है। अतः इस ऐतिहासिक सत्यको अनुभव किया जाय। जाति भेदका अन्त करनेका उपाय है, भारतीय दृष्टिकोणको उत्पन्न किया जाय और भारतीय दृष्टिकोणका निर्माण किया जाय। क्या सरकारी नीति और कांग्रेसके चुनावके लिए उम्मीदवार चुननेकी प्रक्रिया इसमें सहायक है? कांग्रेसी नेता पहले अपने व्यवहार और जीवनसे दिखाएं कि वे एकमात्र भारतीय दृष्टिसे काम करते हैं, अन्यसे नहीं, तब राष्ट्रीय एकता उत्पन्न होनेका मार्ग स्वतः प्रशस्त हो जायगा।

भारतके प्रति गौरव नई पीढ़ीमें अंग्रेजी पढ़ानेसे उत्पन्न न होगा। यह संस्कृत पढ़ानेसे होगा। परन्तु संस्कृत के अध्ययनकी ओर आजके शासकों और शिक्षाधिकारियों का ध्यान ही नहीं है। संस्कृतकी पढ़ाई प्राइमरीसे ही अनि-वार्य होनी चाहिए। किन्तु आज तक देशके नये शासकोंने इस सचाईको नहीं समझा। भारतीय भाषाओंमें एकता भी संस्कृत ही पैदा कर सकती है, और इसका अध्ययन ही इस देशमें एक लिपिकी समस्याको हल करेगा। देश भरमें एक लिपि होनेसे राष्ट्रीयताको बल मिलेगा। किन्तु संस्कृत की अनिवार्य शिक्षा देनेके लिये आज तक किसीने नहीं कहा। अंग्रेजी लादी जा रही है और देशमें अनैक्य और वर्ग भेद उत्पन्न किया जा रहा है। अतः राष्ट्रीय एकताके महत्वको बार-बार बतलानेके बदले आवश्यकता इस बातकी है कि उसके लिए कोई कार्य किया जाय।

—

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

अष्टग्रहीसे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं ।

भारतीय गणराज्यके १३ वें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

प्रत्येक वस्तुका संयोग और वियोग महाशक्ति कालीकी इच्छा पर ही है । कालके 'कालपन' का ही दूसरा नाम काली है । सबसे आद्यतत्व सबसे बड़ा होनेके कारण 'महाकाल' कहा जाता है और उसकी सर्वतन्त्र-स्वतन्त्रताको 'महाकाली' कहते हैं । महाकाली महाकालके साथ जो क्रीड़ा करती है उसमें अनन्त ब्रह्माण्डोंके सृष्टि-स्थिति-संहार होते रहते हैं । निग्रह और अनुग्रह यही दो इनके मूल हैं और इन दोनोंका 'वागर्थाविव' सम्बन्ध है । वस्तुतः ये दो नहीं एक ही है, इस बातको पूर्णरूपेण अनुभूत कर लेने पर कभी भी अकल्याण नहीं होगा और यही वस्तुतः महाकालीकी समाराधना है । इसी कारण दैवज्ञ जो कुछ विचार प्रकट करता है वे आभास मात्र ही होते हैं । उनका ठीक-ठीक होना उसी महाकालीकी इच्छा पर है । अपनी माता कितनी भी भयानक हो, वह अपने पुत्रके लिये भयानक नहीं । और हो भी तो उसे छोड़कर पुत्र कहां जाय ? इसलिये उससे डरकर ही खाली काम चल नहीं सकता । उसकी आराधनासे दैवज्ञ अपनी दृष्टिको बहुत दूर तक विस्तृत कर सकता है । जहां दैवज्ञकी विस्तृत दृष्टिमें अशुभ घटनाएँ घटनेकी सम्भावना हो सकती है वहीं शुभ घटनाएँ घटनेकी भी सम्भावना रहती ही है । अशुभ घटनाओंको डरावने शब्दोंमें प्रकाशित कर साधारण जनताको भयभीत करना आर्ष-दृष्टिमें मान्य नहीं हो सकता । दैवज्ञको चाहिए कि शुभाशुभ घटनाओं का संकेत वह अवश्य करे, पर लोगोंको उद्बोधित करते हुए संयत भाषामें, ऐसा ही ऋषियोंका आदेश है । और फिर भविष्यतकी घटनाओंके सम्बन्धमें शतप्रतिशत यथार्थ वर्णन कर सकना बड़े-बड़े योगसिद्ध महापुरुषोंके लिये भी जो कठिन है वह एक साधारण दैवज्ञ कैसे ठीक-ठीक प्रकाशित कर सकता है । फिर भी विगत २८ वर्षोंसे अपने पंचांग और पत्रिकामें हमने भविष्यकी जिन महत्वपूर्ण घटनाओंका उल्लेख किया, वे यथासमय अक्षरशः यथार्थ घटित हुई । वह सब उन राजराजेश्वरी भगवती श्रीमहाकालीकी इच्छानुसार ही हुआ, परन्तु उन घटनाओंके प्रत्यक्ष होनेसे ज्योतिर्विज्ञानका गौरव अवश्य बढ़ा । अस्तु ।

'अष्टग्रही' से भयभीत न हों

यह अंक पाठकोंके हाथोंमें पहुँचते ही एक सप्ताहके अन्दर सप्तग्रही बन जायेगी और दूसरे सप्ताहमें ४ फरवरीको चिरप्रतीक्षित अष्टग्रही सम्पन्न होगी। इस समय भारतमें सर्वत्र 'अष्टग्रही' का भय भीषण रूप से व्याप्त है । इसका एक सुपरिणाम तो स्पष्ट देखनेमें आ रहा है कि प्रत्येक नगर एवं ग्राम तकमें बड़े छोटे शांतियज्ञ, अखण्ड नामसंकीर्तन, एवं प्रभुप्रार्थनाएँ हो रही हैं । दुराचारी जन भी भावी भीषण अनिष्टके भयसे सदाचार एवं भगवच्चिन्तनकी ओर अग्रसर होते देखे गये हैं । चाहे तात्कालिक ही हो, पर इस भयने भ्रष्टाचारका-आंशिक रूपमें अवरोध अवश्य किया है । दण्ड भयसे ही प्रजाका शासन सुव्यवस्थित रूपेण चल सकता है । आज प्रजामें शासनका वास्तविक भय न होनेसे ही भ्रष्टाचार-निरोधविभागके होने पर भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है । रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं । ऐसे अनाचारी क्रूरकर्मा लोगोंका ही इस अष्टग्रहीके प्रभाव से अधिक विनाश होगा, सदाचारी सज्जनोंको भय नहीं है । यह हम गतवर्षके पंचांग और 'ज्योतिष्मती' में भी लिख चुके हैं । शास्त्रकारोंने स्पष्ट कहा है ।

"दुराचाररताः सर्वे क्रूरा नश्यन्ति जन्तवः ।"

इस समय दुराचारीजनोंकी अपेक्षा सज्जन अधिक भयभीत हैं, कई पत्र हमारे पास आ रहे हैं । कई स्नेही

सज्जनोंने प्रत्यक्षमें भी पूछा है कि—"कौनसा स्थान सुरक्षित है? वहीं चले जावें?" इत्यादि।

हम स्पष्ट बता देना चाहते हैं कि दिल्ली, पंजाब, हिमाचलप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेशकी जनताको इस अष्टग्रहीसे अभी भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं। ३, ४, ५ फरवरीको यहां कोई बड़ी दुर्घटना नहीं होगी। यह हम गतांकमें और पंचांगमें भी स्पष्ट बता चुके हैं कि अष्टग्रहीके तीन दिनमें ३, ४, ५ फरवरीको सर्वत्र एक जैसा प्रकृति-प्रकोप या उत्पात कथमपि सम्भव नहीं। कूर्मचक्र एवं सर्वतोभद्र चक्रके अनुसार वायव्यकोण एवं अग्निकोणके प्रान्त विशेषमें कहीं भयानक प्रकृति प्रकोप भूकम्पादिको सम्भावना है। अन्यत्र यत्र-तत्र शीतकी प्रबलता, हिमपात, ओलावृष्टि, रोगभय आदिसे हानि होगी और छोटी बड़ी दुर्घटनाएं सम्भव होंगी। आगामी वर्षोंमें इसका प्रभाव यत्र-तत्र होता रहेगा। इसका विशेष विवेचन हमने 'अष्टग्रही का संसार पर प्रभाव' नामक अपनी ३०० पृष्ठकी पुस्तक और सं० २०१६ के 'श्रीविश्व-विजय-पंचांग' में भी किया है, वहां देखें।

अष्टग्रहयोग पूर्ण नहीं है

३ फरवरीको सायंकाल ५-४१ पर चन्द्रमाके मकर राशिमें प्रवेश करने पर 'अष्टग्रही' प्रारम्भ होगी और ५ फरवरीको सायंकाल ५।१८ पर चन्द्रमाके कुम्भ राशिमें जाने पर समाप्त हो जावेगी। यहाँ आठों ग्रह एक राशिमें होनेसे 'अष्टग्रही' कह सकते हैं पर 'अष्टग्रहयोग' नहीं, क्योंकि उत्पातकारक शनि मंगल (दोनों ग्रह) सूर्य, चन्द्र बुध शुक्रसे १२ से १४ अंश तककी दूरी पर है और गुरु तथा केतुसे शनि मंगल क्रमशः १५-१६ अंशोंकी दूरी पर हैं, अतः यह अष्टग्रही योग पूर्ण न होकर षड्ग्रही पूर्ण योग है। योग युति वा ग्रहयुद्ध समान अंश होने पर ही माना जाता है, केवल एक राशिमें आनेसे पूर्ण योग नहीं कहा जाता। ताजिकमें इत्थशालादि योग भी ग्रहोंके दीप्तांशान्तर्गत होने पर ही माने जाते हैं। पूर्ण भविष्यत् इत्थशाल योग तो मंद गति ग्रहसे शीघ्रगति ग्रह केवल आधीकला न्यून होने पर ही माना जाता है। अभी इस अष्टग्रही विषय पर अर्ध-काण्डवाचस्पति वयोवृद्ध विद्वान् श्रीमान् पण्ड्या मोती लालजी नागरसे हमारी चर्चा हुई तो उन्होंने भी अपना यही स्पष्ट अभिमत व्यक्त करते हुए बताया कि—ज्योति निबन्धमें भी गर्ग लल्लादि आचार्योंके मतसे यही प्रतिपादित किया है कि दो ग्रहोंका परस्पर योग १५ अंशके अन्तर्गत होने पर आरम्भ होता है, और जितने अंशोंमें समीप आते जावेंगे उतना ही योग बलवान् बन जावेगा। शनि मंगल यहां गुरुसे १५-१६ अंश दूर होनेसे यह योग पूर्ण नहीं है। ज्योतिर्निबन्धे गार्ग्यः—

तिथिभागान्तरस्थौ यौ ग्रहौ तौ योगसंज्ञितौ।
तत्तुल्यांशैः फलं पूर्णं न्यूनं न्यूनाधिकैर्भवेत्॥

लल्लः—

योगा यथोक्तफलदाः कलार्धभागैक संस्थितानाञ्च।
अप्राप्तातीतानामिच्छामात्रं फलं भवति॥

यहां षड्ग्रही योग पूर्ण है। षड्ग्रही योग भी संसार में उत्पात एवं अशान्तिकारक माना गया है। इसका पूर्व रूप प्रकाशमें आ रहा है। इसी षड्ग्रही व अष्टग्रहीके अनि-ष्टफल निवारणार्थ भारतमें सर्वत्र लक्षचंडी अयुतचंडी सहस्र-चंडी, शतचण्डी यज्ञ, शांतिपाठ, नामसंकीर्तन आस्तिक जनोंके द्वारा हुए और हो रहे हैं। अतः उन आस्तिक जनों को तो भयका कोई कारण ही नहीं है। श्रद्धा भक्तिसे महा-मायाकी शरणमें जाने वालेकी सभी आपत्तियां दूर करनेकी गारण्टी तो माँने स्वयं "तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्य संशयम्" इन शब्दोंमें ले रक्खी है। इतने पर भी जो लोग डरते हैं, उन्हें या तो माँकी वाणीमें विश्वास नहीं है, या स्वयं अपने आप पर—कर्तव्य पर—विश्वास नहीं है। संशय-ग्रस्त प्राणी अपना कल्याण नहीं कर सकता 'संशयात्मा विनश्यति' इसलिए निःसंशय निर्भय होकर अपने कर्तव्य-मार्ग सत्पथ पर डटे रहना ही बुद्धिमत्ता है।

व्यापारी भी निर्भय रहें

इस अष्टग्रहीसे व्यापार-जगत्में भी बड़ी हलचल है। बड़े व्यापारियोंमें उदासीनता है। यदि फरवरीमें कहीं कोई थोड़ी भी अफवाह फैली या छोटा-मोटा भूकम्पका झटका लगा तो मण्डियां चौपट हो जाना सम्भव है। ऐसा करके व्यापारी वर्ग अपना ही अहित करेंगे। दृढ़प्रतिज्ञ निर्भय व्यापारी ही सफल हो सकता है। धनोपार्जन करने वाले

व्यापारीको तो यह धारणा बना लेनी चाहिए कि "मैं तो अजर अमर हूँ। चाहे बम वर्षे या भूकम्प आवे तो भी अपने मार्ग से नहीं डिगूंगा।" ऐसे दृढ़ प्रतिज्ञ व्यापारी पर ही लक्ष्मीकी पूर्ण कृपा होती है। शास्त्रकारोंने भी लिखा है—"अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्।" इसका उदाहरण कुछ वर्ष पूर्व कलकत्तेमें देखा जा चुका है। कलकत्तामें बम फटनेके समय जो व्यापारी बाजार छोड़ भाग गये वे आज दीन हीनावस्थामें मारे-मारे फिर रहे हैं और उस आतंक के समयमें जो साहस पूर्वक डटे रहे वे आज लक्षाधीश कोट्यधीश हैं। अस्तु।

भारतीय गणराज्यके १३ वें वर्षका भविष्य

सं० २०१८ वि० माघ कृष्ण ५ शुक्रवारको इष्ट घट्यादि १२।१२ दिनांक २६ जनवरी १९६२ ई० को मेष लग्नके १९वें अंश पर भारतीय गणतंत्रका १३वां वर्ष प्रवेश होगा। उस समय की ग्रह-स्थिति (कुण्डली) यह है—



इस वर्षमें दशम भावमें सप्तग्रही गोलयोग बन रहा है अतः भारतके लिए यह वर्ष ऐतिहासिक, आशातीत उलटफेर वा उलझनपूर्ण सिद्ध होगा। गणतंत्र जन्मलग्नका अधिपति और वर्षका भाग्येश मुन्थेश गुरु नीच राशिमें पापाक्रान्त है, मुन्था १२वें पापदृष्ट है, यह सब राष्ट्रमें आर्थिक संकट, अनैक्य अपव्यय, अनाचार, अकाल (दुर्भिक्ष) अशान्ति, अनारोग्य एवं अराजकताके द्योतक हैं। वर्षकी प्रथम तिमाही राष्ट्रके लिए अग्निपरीक्षाकारक है। प्रकृति प्रकोपके साथ ही देश-द्रोहियोंके हथकण्डोंसे शासकवर्गका सन्तुलन बिगड़ेगा। कर-भारसे प्रजा पीड़ित रहेगी। पक्षपातपूर्ण अननुभवी व्यक्तियोंके प्रवेशसे शासन शक्तिमें बाधा उपस्थित होगी। इस वर्षका राजा गुरु निर्बल है, वर्षका नाम 'राक्षस' है और दैत्यगुरु शुक्र ही इस वर्षके प्रधानमंत्री हैं अतः इस वर्षमें राक्षसी अमानवी कृत्य अधिक होंगे। दुष्टोंसे भय, भांति-भांतिके रोग आतंक और दुर्भिक्षसे प्रजा पीड़ित होगी। विवेक और सद्भावनाका ह्रास होगा। स्वजनोंसे संघर्ष वा वैर बढ़ेगा। व्ययस्थ पापदृष्ट मुन्थाका फल शास्त्रकारोंने यों लिखा है—

> व्ययेऽधिको दुष्टजनैश्च संगो
> रुजा तनौ विक्रमतोऽप्यसिद्धिः।
> धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था
> यदा तदा स्याज्जनतोऽपि वैरम्॥
> स्वामिसौम्येक्षणात्सौख्यं चुतदृष्ट्या भयं रुजः।
> ददाति मुथहा तस्मात्फलमस्या निरुच्यते॥
> वर्षलग्नात् सुखास्तान्त्यरिपुरन्ध्रे ष्वशोभना।

पड़ौसी राष्ट्र नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, लङ्का और भारतमें मद्रास, महाराष्ट्र तथा पूर्वी विभागमें शासन तन्त्रमें अकल्पित उलट-फेर होंगे। प्रांतीय मंत्रि-मंडलोंमें विरोधी तत्त्वोंकी गति-विधसे सरकार परेशान होगी। गणतंत्र वर्षलग्न और जगत् लग्नाधिपति मंगल सप्तमेश शुक्रके साथ बलवान् है अतः युवक समुदाय एवं महिलाओं में उच्छृंखलता पराकाष्ठा पर पहुँचेगी। कला और संस्कृति के नाम पर चरित्रकी दुर्गति होगी। सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्रोंमें पूंजीका दुरुपयोग होगा। किन्हीं दो प्रधान पुरुषों का अवसान होगा। इस वर्षमें आषाढ़ कृष्ण पक्ष १३ दिन का है—यह संसारके लिए अनिष्टप्रद है—"त्रयोदश दिने पक्षे तदा संहरते जगत्।" ज्येष्ठ कृष्ण ४ दि० २३ मई ६२ से आश्विन शु० १२ दि० १० अक्टूबर ६२ तक शनि वक्री रहेगा। इसी अवधिमें आषाढ़ शु० ३ दि० ४ जुलाई से कार्तिक शु० २ दि० २९ अक्टूबर तक गुरु भी कुम्भराशिमें वक्री रहेगा अतः ज्येष्ठसे कार्तिक तकका समय संसार और भारतके लिए भी अमंगलकारक है। आश्विन शु० १ दि० २९ सितम्बरसे पौष कृष्ण २ दि० १३ दिसम्बर ६२ तक मंगल राहुके साथ नीच राशिमें शनिसे प्रतियोग करेगा अतः यह अवधि विशेषतः कार्तिक मास महान् कष्टदायी सिद्ध होगा। यहां कहीं महामारी आदि रोग, कहीं युद्ध, कहीं अतिवृष्टि अनावृष्टि, तूफान भूकम्प

संस्कार ग्रन्थोंमें ग्रहयोगोंका विवरण—

ग्रहोंका प्रभाव जगत् पर स्वाभाविक है।

[पद्मभूषण श्री पं० सूर्यनारायण व्यास ज्यौतिषाचार्य]

[श्रद्धेय व्यासजी अन्ताराष्ट्रिय-ख्यातिप्राप्त ज्योतिर्विज्ञानाचार्य हैं। 'ज्योतिष्मती' के पाठक आपके मौलिक विचारोंसे अवगत होते रहते हैं। ज्योतिषके अतिरिक्त हमारे संस्कार ग्रन्थोंमें भी ग्रहोंका प्रभाव स्पष्टरूपसे प्रतिपादित है—इसका दिग्दर्शन आपने इस लेखमें कराया है। प्रधानमंत्री श्रीनेहरूजी ग्रहोंके प्रभावको नहीं मानते। इनके मानने न माननेसे शास्त्रका कुछ बनता बिगड़ता नहीं। किसी जन्तु विशेषको यदि सूर्य दिखाई न दे और वह कहे कि 'सूर्य है ही नहीं' तो इससे सूर्यके अस्तित्वमें कोई अन्तर नहीं आता। यदि मानवका परिश्रम और पुरुषार्थ ही सब कुछ है तो पंचवर्षीय योजनामें करोड़ों रुपयेके व्यय और प्रबल पुरुषार्थसे भी अभीष्ट सिद्धि क्यों नहीं होती? ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर जिस समय बाढ़ आदि प्रकृतिप्रकोपकी सूचना दी जाती है—उसी समयमें भयानक बाढ़ आदिसे जन-धनका भीषण विनाश क्यों हो जाता है? यदि 'अष्टग्रही'का प्रभाव नहीं है तो इसी वर्षमें इतनी भीषण बाढ़ें और शीतलहर क्यों आई? जितनी दुर्घटनाएं पहले कभी सुननेमें नहीं आईं उतनी इस वर्ष क्यों हो रही हैं? अभी-अभी दक्षिण अमेरिकामें बर्फकी चट्टानका वज्रपात होनेसे अनेकों ग्राम क्यों नष्ट हो गये? जिसमें लाखों प्राणियों और करोड़ोंकी सम्पत्तिका विनाश क्यों हो गया? सैकड़ों वर्षोंमें पहले कभी ऐसी दुर्घटना क्यों नहीं घटी? यह सब ग्रहोंके प्रभावका ही परिणाम है। राष्ट्रनायकोंकी बुद्धिमें विकार एवं विनाशकी सूचना ग्रहोंके प्रभावसे ही मिलती है। यदि भारतीय जनता ग्रहोंके नेष्ट प्रभाव और उसको मिटानेके लिए ईश्वरीय सत्ताको न मानती तो भारतके कोने-कोनेमें इतने यज्ञानुष्ठान एवं नाम-संकीर्तन कभी न होते। नेहरूजी या शासन एड़ी चोटीका जोर लगाकर भी कभी जनताको इतने सदनुष्ठानोंके लिए प्रेरित नहीं कर सकते थे जितने कि इन ग्रहोंके प्रभावने धर्म प्राण भारतीय जनताको इस ओर प्रवृत्त किया है।

—सम्पादक]

आठ ग्रहोंके एकत्रित होने पर इस देशके ही नहीं अन्य देशोंके विचारशीलोंने भी शास्त्रीय और वैज्ञानिक दृष्टिसे विचार, एवं चिन्ता व्यक्त की है, विभिन्न प्रकारके विचार प्रकट हुए हैं। और उपायोंकी भी चर्चा हुई है। देशभरमें अनेक

तो कहीं भयानक खान रेल यान दुर्घटनाओंसे भयंकर विनाश होगा। किसी प्रदेशमें सैनिक क्रांति और राजनैतिक हत्या होगी। शनि मंगल योग-प्रतियोगसे ज्वालामुखी स्फोट, भूकम्प, समुद्री तूफान, जलप्लावन और कारखानोंमें हड़ताल व तोड़-फोड़से हानि होती है। इस वर्ष शनि मंगल गुरुका अनिष्टकारी प्रभाव अधिकतर अफ्रीका, इंग्लैंड, फ्रांस, हालेण्ड, डेन्मार्क, अमेरिका, रशिया और पूर्वमें जापान, चीन आस्ट्रेलिया, हिन्दचीन, बर्मामें विशेष होगा। पूर्व पश्चिम की अपेक्षा भारतमें जन-धन हानि कम होगी। क्योंकि धर्मप्राण भारतका अधिपति गुरु नीचस्थ होते हुए भी गण-तन्त्र वर्ष-प्रवेशके समय नवांशमें उच्चका लाभस्थ है और वर्षेश मंगल उच्चराश्यंशमें दशमस्थ है, यह भारतकी राष्ट्रीय शक्तियोंको सुदृढ़ संगठित बनाकर सभी सम्भाव्य आपत्तियोंसे पार ले जानेमें सक्षम सिद्ध होगा। लिखा भी है—"सबलेऽब्दपतौ खस्थे राज्यार्थ सुखकीर्तयः।"

तृतीय पंचवर्षीय योजना

भारत सरकारकी ओरसे तीसरी पंचवर्षीय योजना चालू हो गई है, इसमें अरबों रुपयोंका आनुमानिक व्यय है। विदेशोंसे भी इस योजनाकी सफलताके लिए सरकार ने करोड़ों रुपयोंका आश्वासन प्राप्त किया है। योजनाकी रूपरेखासे प्रत्येक भारतीय प्रसन्नताका अनुभव करेगा। परन्तु परिणामतः इस योजनासे देश-विदेशके बड़े-बड़े उद्योगपति ही अधिक लाभान्वित होंगे। सर्व-साधारण जनताको इच्छित लाभ प्राप्त न होनेसे योजनाके प्रति उदासीनता व्यापेगी। विवेकशून्य स्वार्थी कर्मचारियोंके कारण भी द्रव्यका दुरुपयोग होगा और कुछ तात्कालिक परिस्थितियां ऐसी उत्पन्न हो जावेंगी कि योजनाकी निर्धारित पूरी राशि उस लक्ष्यमें न लगकर देशकी सुरक्षा संगठन एवं अन्यान्य आवश्यक कार्योंमें व्यय करनी पड़ेगी। योजनामें जितनी विशाल धनराशि एकत्र करनेकी घोषणा की गई है उतनी पूर्ण होनेमें भी कुछ बाधा पड़ेगी। निष्कर्षमें कहा जा सकता है कि इस तृतीय पंचवर्षीय योजनामें तो भारत को प्रकृति-प्रकोप, राजनैतिक उलट-फेर एवं आर्थिक संकटमें से गुजरना पड़ेगा। फिर भी भारत औद्योगिक क्षेत्रमें पर्याप्त उन्नति करेगा और आगामी चतुर्थयोजनाके लिए पूर्ण शक्ति संचयमें लगेगा।

स्थानों पर विभिन्न यज्ञ— यागके आयोजन हो रहे हैं। यह चिन्ता एक साथ आठ ग्रहोंके एकत्रित हो जानेके कारण ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिसे स्वाभाविक ही है। यह अपने-अपने विचारकी बात है कि कुछ लोग इसे अति भयानक सूचित करें, तब कुछ लोग साधारण चिन्ता बतला रहे हैं। आठ ग्रहोंका एकत्र होना साधारण घटना नहीं है। जो लोग राहु और केतुको ग्रह नहीं उपग्रह मानते हैं, उनकी दृष्टिसे भी यह सप्तग्रह युति हो जाती है। सप्तग्रहोंके संयोगको भी शास्त्रकारोंने कम चिंता जनक नहीं बतलाया है। ज्योतिःशास्त्रकी बात क्षणभर छोड़ भी दें तो संस्कार-ग्रंथोंने भी इन युतियोंको ठीक नहीं बतलाया है।

'रुद्र-यामल' ग्रंथमें विभिन्न-युतियोंके विषयमें स्पष्ट लिखा है—कि चार ग्रहोंके एकत्रित होने पर दुर्भिक्ष होता है, अनेक महारोग उत्पन्न होते हैं। राष्ट्रक्षय होता है। और वृष्टिनाश होता है। इसी प्रकार पांच ग्रहोंके संयोग पर दुर्भिक्ष, संकरता, जनक्षय, राज्योंसे विरोध, गर्भपात आदि होते हैं।

और छह ग्रहोंके संयोग होने पर मंत्रियोंका नाश। पशु-अश्व आदि में भय, जनक्षय, पट्टराज्ञीका विनाश, अथवा महान् भय उत्पन्न होता है।

तथा सप्त ग्रहोंके समायोगपर शासकका मरण होता है। जगत्में प्रलय जैसी स्थिति हो, जगत् मानवहीन होता है।

यदि इनमें सूर्य न हो तो यह योग महान् अद्भुत हो जाता है। और चन्द्रके अभावमें योग हो तो जगत्में प्रलय प्रस्तुत कर देता है।

किन्तु अमावस्याको तो सूर्य-चन्द्रका समागम होना स्वाभाविक ही होता है। तथा चन्द्र अदृश्य होता है। किन्तु सूर्य इस अष्टग्रहीमें ग्रहण-ग्रस्त होनेके कारण कुछ भागोंमें तो वैसे भी अदृश्य हो जाता है। आगे चलकर उसी 'यामल' में बतलाया है कि जिन नक्षत्रों पर यह ग्रह-युति होती है—उन नक्षत्रोंमें उत्पन्न प्राणियोंमें महारोग, और महाभयका संचार होता है। अर्थनाश, स्थाननाश, मानहानि, मानव पीड़ा, वात-पित्तजन्य महापीड़ा, भय, यह स्थिति छः माहके अन्दर तक रहती है। आयु, और अर्थ हानि संभव होती है। यामलके वे श्लोक 'शान्ति-मयूख' ग्रंथके पृष्ठ ८९ पर इस प्रकार दिए हैं—

"दुर्भिक्षादि भयं चैव चतुर्ग्रह समन्वये।
महारोग भयं राष्ट्रक्षयो वृष्टिविनाशनम् ॥१॥
पंचग्रह समायोगे दुर्भिक्षं संकरादिकम्।
जनक्षयो नृपैर्वैरं अर्थनाशस्तु जायते ॥२॥
ग्रहषट्क समायोगे मंत्रिणो मरणं भवेत्।
पश्वश्वादि भयं सर्व संकरादि जनक्षयः ॥३॥
पट्टराज्ञी विनाशश्च महाभयमथोपिवा।
सप्तग्रह समायोगे क्षितीश मरणं ध्रुवम् ॥४॥
जगत्प्रलयमेवापि तदा निर्मानुषं जगत्।
अत ऊर्ध्वं महोत्पात नाना दुःख महाकुलम् ॥५॥
सूर्यस्माद्व्यतिरिक्त श्चेत्तदा योगो महाद्भुतः।
बिना चन्द्रेण योगोऽपि जगत्प्रलय कारणम् ॥६॥
तदृक्षजात जन्तूनां महारोगो महाभयम्।
अर्थनाशः स्थाननाशो मानहानिर्नृपीड़नम् ॥७॥
वातपित्तादि सम्भूत महापीड़ा महद्भयम्।
समायोगग्रहा नृणां दोषान्कुर्वन्ति सर्वदा ॥८॥
षण्मासाभ्यंतरे वापि आयुहानिः श्रियस्तथा।

'शांति मयूख'ने इस प्रकारके ग्रह संयोग और उनके विषय परिणामोंसे रक्षाके लिए ग्रहोंकी शांतिका विधान भी बतलाया है। वह नवग्रह-यज्ञ है। उसका विधान और साधनाका सविस्तर विवरण दिया है। अवश्य ही यह विधान बहुत व्यवस्थित, सयुक्तिक लगता है। क्या ही उत्तम होता कि देशके विभिन्न भागोंमें होने वाले यज्ञ उसी विधानके अनुरूप किए जाते, और एक रूपताके साथ प्रयुक्त होते। गत अक्टूबर माससे ही क्रमशः कुछ ग्रहोंकी युतिका क्रम आरंभ हो गया है। और तदनुसार विषमताएं भी बढ़ी हुई दिखाई देने लगी हैं। चार और पांच ग्रहोंके संयोगके कारण यामलमें सूचित 'अश्वरोग' भी देशके विभिन्न भागोंमें विस्तृत हो गया है।

अष्ट ग्रहोंका विस्तार सारे गगन मण्डल पर हो रहा है। जो लोग इनके महत्वको जान सकते हैं वे इस संयोग को चिंताकी दृष्टिसे देखे यह उचित ही है। परन्तु जो लोग इसके महत्वको ठीक नहीं आंक सकते, वे भी अपनी आंखोंसे आकाशमें एकत्रित होने वाले आठ-आठ ग्रहोंको देखकर आश्चर्य चकित तो अवश्य ही हो सकते हैं। आज

विश्व का भविष्य : १९६२ ई०

[श्री बी० व्ही० रमन सम्पादक 'एस्ट्रालाजीकल मेग्जीन']

आजके बौद्धिक जगत्की प्रवृत्ति है कि पश्चिमी विज्ञान के विश्वासोंके अनुकूल जो न हो, उसको अस्वीकार कर दिया जाय। हरेक वैज्ञानिक अपने परिवेशनोंके अनुसार सोचता है। उनका यह विश्वास प्रतीत होता है कि जो कुछ सामयिक और चालू सिद्धान्तोंके विपरीत हो, उसको स्वीकार न किया जाय। ज्योतिषका अध्ययन—लौकिक राजनीतिक व सामाजिक घटनाओंका व अन्तरिक्षीय अलौकिक घटनाओंके साथ पारस्परिक सम्बन्धके अध्ययनकी अब और उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। ग्रहमण्डलके चक्र और इस भूलोकमें घटित घटनाओंके बीच निश्चयसे कार्य-कारण सम्बन्ध है। प्राचीन ऋषियोंने आत्म-ज्ञान और पर्यवेक्षण द्वारा ज्योतिषके नियमोंका पता लगाया है और इन नियमों के द्वारा भविष्यका पूर्वाभास हम पा सकते हैं।

बर्लिनके प्रश्न पर जब अमेरिका, और रूसके दो प्रमुख व्यक्ति एकट्ठा होते हैं तो सभी राष्ट्रके राजनीतिज्ञ चिंता, और सावधानी पूर्वक उनके अनुकूल या प्रतिकूल परिणामों को देखनेके लिए सतत चिंता सेवित करते रहते हैं। तब विश्वके समस्त वातावरणको संतुलित रखने वाली खगोल की ग्रह शक्तियां अद्भुतरूपसे सहसा एकत्रित होने जा रही हो तब कुछ जुम्मेदार कहे जाने वाले लोग उनके महत्व से इंकार करें, या उपेक्षा करें यह दुर्भाग्यकी बात ही है। वे लोग मानव निर्मित 'एटम्' से महानाशकी कल्पना तो कर सकते हैं, पर महानाशकी साधन-सामग्रीके निर्माताके मानसको प्रभावित करनेवाली, या प्रेरित करने वाली शक्तिसे इन्कार करें यह कितनी विचित्र बात है। 'एटम्' का निर्माण तो असेंसे हो रहा है। क्या कारण है कि वे प्रहारके कारण अब तक नहीं बने ? उन परिस्थितियों के निर्मित होनेकी सूचना ही यह आठ ग्रहोंका संयोग दे रहा है। वह जिस दूषित वातावरणके होनेकी सूचना कर रहा है, उससे सावधानीका संकेत मिल सकता है। एटमूके प्रहार हो जाने पर सवाधानीका प्रश्न ही नहीं रहेगा।

१९६२ का उदय ऐसे समय हो रहा है, जब विश्वकी स्थिति अव्यवस्थित, गड़बड़ और पेचीदी है। विरोधी पक्षोंमें विश्व प्रभुता पानेके लिए तीव्र संघर्ष हो रहा है। इसके कारण संसारको जिस विपत्तिका सामना करना पड़ेगा वह बहुत भयंकर है। इस कारण ज्योतिषकी दृष्टिसे १९६२ का भविष्य जानना बहुत रुचिकर होगा। यह वर्ष अधिकतर 'शुभकृत' के नामसे प्रसिद्ध होकर चांद्र वर्षमें रहेगा। इस भूमण्डलमें होने वाली सहस्रों घटनाओंका जानना न सम्भव है न उन सबका ज्ञान प्राप्त करनेकी आवश्यकता ही है। अतः यहां हम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातोंका ही विचार करेंगे, जिनका इस विश्वके बड़े-बड़े देशों पर प्रभाव पड़ने वाला है, जिससे उत्तरदायी व्यक्ति सूत्रधार शासक वर्ग और नेतृमण्डल बुराई और अनिष्टके परिणामोंको कम करनेके विचारसे सावधानतापूर्ण आवश्यक पूर्व कार्रवाई कर सके।

राष्ट्रीय या राजनीतिक ज्योतिषमें मंगल और सूर्य सदा महत्वपूर्ण हैं। ये राजसत्ता, कुलीनता, राजनीतिक मूल्य, योद्धा वर्ग और शक्तिपूर्ण कार्योंके सूचक हैं। शुभकृत मंत्रिमंडलमें इन दोनों ग्रहोंका अभाव महत्वपूर्ण है और विश्वकी राजनीतिक स्थिति पर इसका विशेष प्रभाव पड़ेगा। शुक्रका प्राधान्य है, और यह विलासिता व स्त्रियोंका प्रतिनिधि ग्रह है। यह चार विभागोंका मंत्री है—मेघ व व्यापार का स्वामी है, इसके अतिरिक्त प्रधान सेनापति होनेके साथ-साथ प्रधानमंत्री हैं। सूर्य और मंगलका अभाव बताता है कि विचित्र घटनाएं घटित होंगी। लोग एक ओर अधिक विषयी, भौतिकवादी, आरामकी जिन्दगी पसन्द करने वाले, सुख और विलासका जीवन बितानेकी इच्छा रखने वाले होंगे, दूसरी ओर अधिसत्ता सेनाके हाथमें अधिकाधिक मात्रामें पहुँचती जायगी, राजनीतिक नेताओंका कार्य गौण हो जायगा। वर्षका राजा बृहस्पति है, और यह न्याय व धर्मका राज्य चाहेगा, परन्तु यह ध्वज मात्र शासक होनेके कारण कुछ कर न सकेगा। शुक्र स्त्री ग्रह है, और यह प्रधानमंत्री और प्रधान सेनापति है, अतः विश्वकी समस्त बातोंका यह नियंत्रण करेगा। शुक्र अश्विनी नक्षत्र समूह

के मध्य है और यह केतुके नियंत्रणमें है। अतः चोटीके पुरुषोंके निर्णयोंको प्रभावित करनेमें स्त्रियां प्रतिकूल दिशा में कार्य करेंगी और इस प्रकार तनाव और अस्थिरताकी शक्तियोंका बल बढ़ायेंगी। राजा बृहस्पति और प्रधानमंत्री व प्रधान सेनापति शुक्र परस्पर तीव्र शत्रु हैं। दोनोंके मध्य संशय बना रहेगा, और यह सरकारके प्रमुखों और सेना के प्रमुखोंके बीच मेल न होने देगा। समस्त विश्व पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और राजा व मंत्रीके मध्य मतभेद और परस्पर अविश्वास बना रहेगा और इसका घातक परिणाम होगा।

ग्रह मंत्रिमंडलके प्रत्येक मंत्रीके विभागोंको यदि अलग-अलग देखा जाय, तो वह परस्पर विरोधी प्रतीत होगा। परन्तु अनुभवी ज्योतिषी उपयुक्तका चुनाव कर युक्ति-युक्त तथा उचित निष्कर्ष पर पहुँच सकता है। नवों स्वामियोंमें, निस्संदेह, अधिकांश शुभ-फलदायी हैं। किन्तु शुक्र-शुभग्रह होता हुआ भी अच्छा परामर्शदाता नहीं हैं। यह अपने प्रतियोगी दिव्य ग्रह बृहस्पतिके समान यथार्थमें शुभ नहीं है। प्रकृतिसे यह पक्षपाती है, प्रवृत्तिसे भौतिकवादी है और यह दृष्टिकोणको अविकृत नहीं रखता। यह 'असुर-गुरु' है, अतः यह न्याय तुलाको एक समान नहीं रखता। इस वर्षके ग्रह मंत्रिमण्डलमें इसकी प्रधानता है। अतः पुरुषों का दृष्टिकोण अधिक साहिष्णु होगा, परन्तु शासकोंका दृष्टिकोण इसी कारण और अधिक विकृत होगा। सूर्य और मंगलका अभाव इस बातका ही द्योतक नहीं है कि बड़े-बड़े देश शस्त्रीकरणमें सिर तोड़ प्रतियोगिता करेंगे, नख से चोटी तक शस्त्रास्त्रोंसे लैस होंगे, बल्कि इस बातका भी सूचक है कि सेना अधिकाधिक शक्ति और अधिकार प्राप्त करेगी। राजनीतिक नेतागण अपनी अदूरदर्शिता और विवेकहीनताके कारण किए गए कार्योंके परिणामोंको होने देनेसे रोकनेमें असमर्थ रहेंगे। राजा बृहस्पति अवश्य राज-नीतिज्ञोंमें धर्म-बुद्धि जागृत करेगा, परन्तु बलवान् न होनेसे वह व्यवहारतः कुछ न कर सकेगा, नैतिक मूल्योंकी उपेक्षा की जायेगी, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पारस्परिक संशय अवि-श्वास दुर्भावना मतिविभ्रम आदिके आधार पर स्थिर होंगे।

ग्रह मंत्रिमंडलमें शनिको विशेष काम दिया गया है। यह मजदूर वर्गकी शक्तिके लिए कुछ ह्रासका सूचक है। राजनीतिक पेंडुलम निश्चयसे दक्षिण पक्षकी ओर जायगा। ज्योतिष शास्त्रके अनुसार शुभकृत् वर्षका फल है—

पृथ्वी पर विविध व रम्य उत्सव होंगे, परन्तु लोग रोग और असुरक्षाके भयसे आक्रान्त होंगे। शासक युद्ध मनोवृत्तिके होंगे और युद्ध भी होगा।

१९६२ की महत्वपूर्ण घटना है मकर राशिमें अष्टग्रहों का एकत्र होना। इस विषय पर मैं बहुत लिख चुका हूँ। अब और पिष्ट-पेषण करनेसे विशेष लाभ न होगा। परन्तु यह हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि 'प्रलय' होनेकी कोई आशंका नहीं है। फिर यह होना भी है तो शनैः शनैः, अक-स्मात् नहीं। अतः अष्टग्रहीके दिन विश्व पर कोई आपत्ति न आयेगी, यद्यपि यह सम्भव है कि प्रकृति अपना कोप प्रकट करे, पहाड़ धँस जाएं, भूकम्प आए, पृथ्वीमें दरार आ जाय आदि। किन्तु इसका प्रभाव भावी सालों और वर्षोंकी घटनाओं पर बड़े परिमाणमें और अभूतपूर्व रूपमें पड़ेगा। अतः इस बारेमें की गई भयपूर्ण भविष्यवाणियोंसे डरना न चाहिए। १९६२ के प्रारम्भमें बृहस्पति 'अतिचार' की दशामें होगा और एक दिनमें १४ चलेगा। इसकी साधारण गति ५ से ६ कला तक है। अतिचारकी दशा मई १९६२ तक रहेगी। जब सौरमण्डलका सर्वाधिक शुभ ग्रह 'अतिचार' दशामें है—भले आदमीका यह भयाक्रान्त होनेके समान है, तब अन्तर्राष्ट्रीय रंग मंच पर बहुत उलट-फेर होंगे, बाजारमें अकस्मात् उलट-फेर होगा, वित्तीय गड़बड़ें होंगी, कार्य और चिन्तनमें सन्तुलन न रहेगा। राजनयज्ञ विवेक खो देंगे और अपने कार्योंसे मानवके कष्ट बढ़ाएंगे।

सारे वर्ष शनि मकरमें रहेगा। इसका अर्थ है कि विषयी लोग विषय ग्रस्त रहेंगे, और विश्वके विभागोंमें अकाल पड़ेंगे। श्रवण ३ में २१ मईको यह वक्री होता है और श्रवण १ में पुनः ९ अक्टूबरको मार्गी हो जाता है। श्रवणका स्वामी विष्णु है जो त्रिमूर्तिमें पालक और रक्षक है। श्रवण चन्द्र नक्षत्र समूहका है। यह ब्राह्मणों, नगरों, आकाश-क्षेत्रों, चौपायों और वायव्य दिशाका यह स्वामी और नियन्ता है। शनिके वक्री होनेका समय वही है, जब मेष, वृष, मिथुन और कर्क राशिमेंसे मंगल संक्रमण करता है। २०-१०-१९६२ को मंगल और राहुकी युति हो रही

है। १८-७-६२ को सूर्य और मंगल समानान्तर होंगे। वार्षिक सूर्यग्रहण कर्कमें होगा। गर्गका विचार है कि आषाढ़ कृष्णपक्ष १३ दिन का होनेका परिणाम यह होता है कि कार्तिकमें युद्ध होता है, और कार्तिकका नया चन्द्र यदि मंगलको उदय हो तो समस्त विश्वमें आगसे हानि होती है। मईसे अक्तूबरकी इस अवधिमें विशेषतः जब सूर्य कर्कमेंसे संक्रमण करेगा, विश्व स्थिति संकटपूर्ण होगी, और युद्ध-ज्वार सर्वोच्च सीमा पर पहुँचा होगा। विश्व-शक्तियोंके सामने आई कठिनाइयोंका शान्ति-पूर्ण हल होनेकी सम्भावना क्षीण होती जायगी। किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है। नई मैत्रियां होंगी, नए संघ बनेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति नाजुक हो जायगी, संयुक्त राष्ट्रका जीवन अब-तबमें पड़ जायगा, और यदि विश्वके राजनीतिज्ञोंकी सद्बुद्धि जागृत न हुई, उन्होंने बुद्धिमत्ता और दुरदर्शिताका परिचय न दिया तो शीत-युद्ध तप्त-युद्ध में भी परिणत हो सकता है। वर्षके पहले ६ महीनोंमें मंगलकी गतिविधि नई गर्मी को पैदा करेगा, और हरेक विवादास्पद विषयमें शीत-युद्ध जोर पकड़ेगा और दोनों पक्षोंके मध्य तनाव बढ़ेगा।

वर्षमें दो सूर्यग्रहण होंगे, किन्तु भारतमें ये अदृश्य रहेंगे। ५ फरवरीको सम्पूर्ण खग्रास सूर्यग्रहण आस्ट्रेलिया ईस्टइण्डीज, चीनके पूर्वी भाग, उत्तर-पश्चिम अमेरिका और प्रशान्त महासागरमें दृश्यमान होगा। दूसरा ३१ जुलाईको होगा, और यह अफ्रीका, स्पेन, दक्षिण अमेरिका, दक्षिण अरेबिया, और उत्तरी अमेरिकामें दिखाई देगा। ये दोनों ग्रहण मकर और कर्कराशि वालोंको प्रभावित करेंगे। अप्रैलके पहले सप्ताहमें बेलग्रेड, केपटाऊन, लियोपोल्डविले और रोमके आस-पासका भाग दिव्य व भौतिक आपत्तियों का ग्रास होगा। इन जगहोंमें भयंकर भूकम्प और अन्य प्राकृतिक विपत्तियां आएंगी और जनता कानून और अधि-सत्ताके विरोधमें प्रदर्शन करेगी। यह प्रदर्शन भयंकर रूप धारण करेगा। मध्यपूर्व और हिन्द-चीनमें तनाव बढ़ेगा। फलस्वरूप मुख्य व्यक्तियोंका पतन होगा। विश्वके प्रायः सब भागोंमें अशान्ति रहेगी। भारतको इस बातसे सचेत रहना चाहिए कि वह अन्योंके मामलोंमें न फंस जाय।

भारत

धनुः २१ अंशमें दिल्लीमें उदय होगा। लग्नेश बृहस्पति दूसरे भावमें है, और शनि-केतुकी युतिके प्रभावमें है। नवांशमें लग्न तुला है और नवममें लग्नेश पापकर्तरी योग में आता है। लग्नेशकी दुर्बलताका राजनीतिक और आर्थिक जगत् पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा। ४थ विचारका घर सर्वथा अप्रभावित नहीं है क्योंकि छठे और ११ वें का स्वामी शुक्र उपस्थित है और स्वामी मंगलका तृतीय श्रेणी का ग्रह मांदी साथी है। हमारे देशके लिए भारी संकटका समय है। इसको पार पानेके लिए नेताओंको दूरदर्शिता, शुद्ध व स्पष्ट चिन्तन और यथार्थताका परिचय देना चाहिए। लग्नेश दुर्बल है और १२ वें का स्वामी मंगल साथमें है, अतः जनतामें भारी भय फैलेगा, और विपत्तियों तथा कष्टों की उसको सहज आत्मानुभूति होगी। घृणा-स्वार्थ, संशय, ईर्ष्या, द्वेष, मतिविभ्रमकी शक्तियोंसे नेतागण विभक्त होंगे और देशकी समस्याओंका ठीक-ठीक समाधान करनेमें असमर्थ रहेंगे।

वित्त पर दूसरे घरके स्वामीका अधिकार है और यहां केतुका साहचर्य है। अतः आर्थिक प्रगति होगी। किन्तु, नवांशमें शनि है, और यह पापकर्तरी योगमें है, अतः वित्तीय विषयोंके प्रति जनतामें भारी चिन्ता व्याप्त रहेगी। असूत्रित आर्थिक नीतिके कारण राष्ट्रीय सम्पत्तिका पर्याप्त अपव्यय होगा। कर-भार बढ़ेगा, खाद्य-पदार्थों और जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुओंका मूल्य ऊंचा ही ऊंचा जायगा। बहुत सम्भव है कि अमेरिकी आर्थिक सहायतामें कमी हो। नियोजन पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। संचारका स्वामी चंचल बुध है और १२ वें (और ५वें) का स्वामी मंगल है। रेल और डाक व तारके कर्मचारियोंमें भारी असंतोष रहेगा, हड़तालें होंगी। परन्तु सरकार स्थितिका सामना चतुराईसे करेगी। दो व तीन भयंकर रेल-दुर्घटनाएं होंगी। एक दक्षिणमें और दूसरी पूर्व में। ये सम्भवतः शनिसे केतु की युति (२३-५-१९६२) और शनिसे मंगलके विरोधमें होने पर (२१-१०-६२) के आस-पास होंगी। फरवरीके मध्य मंगल और शनिकी वह 'क्रान्ति' होगी, और यह भारी दुर्घटनाओं, विमानोंके गिरने, अग्निकांडों और गोलीकांडोंके होनेका सूचक है।

[शेष पृष्ठ ७२ पर]

श्रीदुर्गासप्तशती पर एक दृष्टि

[ले०—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्यौतिषाचार्य, हरियाना पंजाब]

ब्रह्मका अर्थ यास्कने किया है "परिवृढ़ं सर्वतः" जो सर्वत्र व्यापक हो वही ब्रह्म है। 'तस्मादेतस्मादाकाशः सम्भूतः आकाशाद्वायुः' उसी ब्रह्मसे आकाश उत्पन्न हुआ जिसका गुण है शब्द। वायुका गुण है स्पर्श, ये दोनों महाभूत अदृश्य समष्टि-रूपसे ब्रह्माण्डमें सदा सर्वत्र व्यापक रहते हैं। विश्वमें कहीं भी किस प्रदेशमें सूक्ष्म वा स्थूल, व्यक्त वा अव्यक्त, किसी भी परिभाषा का शब्द हो, वह अनादि कालसे आध्यात्मिक विद्य दिव्य-दृष्टि (टैलीपैथी) द्वारा प्रत्यक्षवत् सुन सकते हैं। मानवशरीरधारी योगी याज्ञवल्क्यने आकाशसे उतरते हुए आर्या छन्दोंमें 'शुकतुण्डच्छवि' आदि सूर्यस्तोत्रको सुना। शुनःशेप वशिष्ठ विश्वामित्र आदि अनेकों महर्षियोंने वैदिक सूक्तोंको सुना। सीता-हरणसे लेकर मेघनाद कुम्भकर्णके निधनको मान-मन्दिरमें कह रहे रावणसे पाताल असेरिका प्रजाधीश नरान्तकने वैभवपुरमें सुना। कुरुक्षेत्रस्थ कौरव-पाण्डवोंके युद्धको हस्तिनापुरमें सञ्जयने अक्षरशः धृतराष्ट्रको सुनाया। अधुनाऽपि कैलाश-पर्वतादियोंमें स्थित महात्माजन प्रत्यक्षवत् विश्व-व्यापी घटनाओंको देखते और सुनते रहते हैं। एवं यूरोपमें भी 'टेलीपैथी' विद्या द्वारा वैज्ञानिक वार्तालाप करते रहते हैं। वहां एक आध्यात्मिक सोसायटी बनी हुई है। इसके लिये न टेलीग्राफ, न टेलीफोन, न वायरलैसकी आवश्यकता है। यह तो रही सूक्ष्म-शब्दकी बात। स्थूलरूपमें सहस्रों मीलकी दूरी पर 'रेडियो' की स्पष्ट-ध्वनि, किञ्चित् अकिञ्चित्कालमें सुनी जा रही है। आकाशके भीतर शब्द आते ही तरंगित-स्पन्दन-गतिसे सर्वत्र व्यापक हो जाता है। अतएव उस ध्वनिको वैयाकरण विद्वान् शब्दब्रह्म मानते हैं, जिसको पातालके अदृश्यलोकसे लेकर ब्रह्मलोक तक समस्त सिद्धशक्तियां और दिव्यशक्तियां तथा देव विभूतियां सुनते ही विद्युत्तरंगके झलत्कारके समान आकर्षित हो जाती हैं।

व्यष्टिरूपमें—'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे' जैसे ब्रह्माण्डमें शब्दब्रह्मको पाते हैं वैसे ही शरीरमें भी—

"तत्प्राप्य कुण्डलीरूपं प्राणिनां देहमध्यगम्।
वर्णात्मनाऽविर्भवति गद्यपद्यादिभेदतः।"

वह शब्द वायुके संसर्गसे प्राणियोंके शरीरमें व्यापक होकर वर्णात्मिक गद्य और पद्योंकी लड़ीमें अपने स्वरूपको दिखलाता है। यही वर्णव्यूह पचास अक्षर अकारादि क्षकारान्त योग्य मनीषी द्वारा रंगविरंगे रत्नोंसे बनी मालाकी तरह ओतप्रोत, आकर्षण-विकर्षण-शक्ति-संपन्न, अनेकों भाषाओंमें राग-द्वेष वा काम-क्रोधादि और शृंगारादि रसोंका स्रष्टा माना जायेगा। तान्त्रिक ग्रन्थोंमें तो ये वर्ण सोम-सूर्य-अग्नि-स्वरूप तीन-भागोंमें विभक्त हैं। यही मंत्र-यंत्रात्मक होकर मारण, मोहन, वशीकरणादिमें अनुपम शक्तिका परिचय देते हैं। यही शान्ति और संघर्षका मूल-स्तंभ है। कारण, कि शान्ति-प्रधान, अकारादि १६ अक्षर चन्द्राधिकृत होनेसे सौम्य कहे जाते हैं। ककारादि मकारान्त २५ वर्ण सौर कहलाते हैं। शेष ९ अक्षर समस्त विश्वमें व्यापक हैं जैसे कि 'य' के वायु, 'र' के अग्नि 'ल' की पृथ्वी, 'व' के जल; और 'ह' के आकाश-संज्ञक पांच महाभुतोंसे मानवसे लेकर वृक्ष-वनस्पतियों तक सकल-सृष्टिकी रचना देखनेमें आती है। जिनका क्षेत्र ५० कोटि योजन शास्त्रोंमें पाया जाता है। यह पचास कोटि योजन ब्रह्माण्डके अर्धकपालका परिमाण है। यह आश्चर्य वा गल्प नहीं है, वस्तुतः सत्य है, यदि आप इस समष्टिका घनमूल रूपमें गणित करें तो इसी पृथ्वीका परिमाण निकल आवेगा अनुमानतः २५००० मील। एवम् इन पचास वर्णोंका समस्त वाङ्मय और पृथ्वीखण्डों पर अधिकार रहता है। कहनेका तात्पर्य यह है कि शरीरके भीतर सूक्ष्म सहस्रों नाड़ियोंके अभ्यन्तर तरंगित वायु जहां-जहां भी स्पर्श करती रहती है—वहां-वहां ही ध्वनि उत्पन्न होती है। इसी ध्वनिमें व्यापक 'य-र-ल-व-ह' वायु, अग्नि, पृथ्वी, जल तथा आकाश तत्वात्मक होनेसे अल्पप्राण कहे जाते हैं। अन्य वर्ण महाप्राण। यही अल्पप्राण; जब सहस्रदल पर्यन्त आधारादि-चक्रोंके पथसे जाकर कपालमें संभवको असंभव, असंभवको संभव करनेकी शक्ति और सर्वज्ञता दे देता है, वहीं परब्रह्मका धाम है। वहीं पराशक्तिका केन्द्र है। उसी शिरः कपालमें दो विवर गुफारूपमेंस्थित हैं, एक है शिखा

के नीचे विद्युत् सहन—जिसका नाम है मातुलिंग। जो संकल्प (इच्छा) शक्तिके उत्पन्न करनेका स्रोत है, जिसका नाम है परावस्था जिस छिद्रके कथंचित् शीतल रहजानेसे संकल्प-स्फूर्तिका द्वार बन्द हो जाता है। अतः उसी विवरके उपरिभागमें वातपुंज-शिखाका होना आवश्यक है। इसीकी उष्णतामें विद्युत्-शक्ति रहनेके कारण उत्पन्न अभिनव कल्पना, ज्ञान-विज्ञान, दूरदर्शिता, कलाकी सूक्ष्म वायु तरंगें हृदयचक्रमें पश्यन्ती-दशामें स्थूलता पाकर कण्ठकी ओर जाती हुई मध्यमावस्थामें जहां-तहां स्पर्श करती रहीं, वहां ही विचार-संचार-आदिको उत्पन्न कर अन्तमें वैखरी-अवस्थामें भावात्मक स्वरूपको साक्षात् करा देती हैं, इसीका नाम है क्रिया-शक्ति। अतएव यह धाम है अपराजिता भगवतीका। इसी कारण अंगन्यासमें—'शिखायै वषट्' इस मंत्रसे शिखा द्वारा विद्युत् परिवेशको उत्तेजित किया जाता है।

द्वितीय छिद्र (विवर) है ब्रह्मरन्ध्र। जहां पर सहस्र-दलचक्र बर्फीले कैलासकी भांति शीतल रहनेसे ज्ञान-शक्तिका स्थान माना जाता है, जिसमें कदाचित् उष्णताकया (बुखारात) पहुँचनेसे ज्ञान-शक्तिका ह्रास हो जाता है। वस्तुतः जन्मजन्मान्तरोंसे आ रही ज्ञान-शक्तिके लोपका विकास होता रहता है। ब्रह्मरन्ध्रस्थान होनेके कारण मूलतः निर्मल नहीं होता है। वास्तविक प्रकृति (ज्ञान-शक्ति) का स्वयं समय पर आविर्भाव हो जाता है। तभी तो महाकवि माघने कहा है—

"सती च योषित् प्रकृतिश्च निश्चला पुमांसमभ्येतिभवान्तरेष्वपि" एवं मातुलिंग और ब्रह्मरन्ध्र यह दोनों सरोवर इच्छा-शक्ति, क्रियाशक्ति, तथा ज्ञानशक्तिके अधिष्ठान हैं।

यही ककारादि वर्ण ही ३३ देवताओं और अकारादि १६ शक्तियोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। उनकी आभ्यन्तरी स्पन्दनता, मन्त्रों द्वारा और बाह्य स्त्रोत्र-पाठादि द्वारा देवताओंके आकर्षण हो जानेसे अभीष्ट भावनाको सर्वथा सफल करा देती है। परन्तु वे मन्त्र शुद्ध और साधक सावधान श्रद्धालु तथा विश्वासी होने चाहिये, अन्यथा कालयापनसे असफलता और अविश्वास ही बढ़ जाता है।

सहस्रों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी मंत्र प्रायः अशुद्ध ही पढ़े जा रहे हैं। प्राधान्येन मन्त्रशास्त्रमें 'दुर्गा सप्तशती' का निःसीम प्रभाव कहा जाता है। जिसका देवता है "ह्रीं" बीज नामकी भुवनेश्वरी महाशक्ति। सप्तशतीका प्रथम मन्त्र है "सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः। निशामय" अर्थः—वर्णैः सप्त रागैः (सप्तधा रागैः) सह वर्तमान इति सवर्णः तस्यापत्यं सावर्णिः रचित उत्पन्नः सूर्यसे उत्पन्न पुनः इसीको सन्देह निवृत्तिके लिए "सूर्यतनयः" सूर्यात्मज वर्ण, अर्थात् जिस वर्णका देवता है 'धाम्नांनिधिः' महातेजोंका निधि भगवान् सूर्य ऐसा है वर्ण "र्" द्वितीयपादमें 'यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः' जो मन्त्रमें यकारादिसे अष्टम वर्ण है "ह्' तृतीय पादमें 'निशा' "ई" फिर 'म्' है। मन्त्र शास्त्रमें तत्त्वात्मानः स्मृताः स्पर्शाः सकारः पुरुषो मतः। बिन्दु-रूपः' तो 'म्' से बिन्दु युक्त (ह्+र+ई-ह्रीम्) यह है मन्त्र। शेष रहा अब, 'अयः शुभावहो विधिः' इत्यमरः। अर्थात् यह "ह्रीम्" बीज शुभ 'श्वश्रेयसं शुभं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम्' इत्यमरः। कल्याणको प्रदान करता है। अयः में विसर्गलोप आर्ष है। पुनः इस मूल-मन्त्रके प्रतिपादन करनेके अनंतर मार्कण्डेयजी कहते हैं कि "तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो-मम" उसकी उत्पत्ति कब कैसे कहां हुई? इसका विस्तारपूर्वक वर्णन जो मैं कह रहा हूँ समझें (जानीहि इत्यध्याहारः)

इन तीन ही वर्णोंसे तीनों महाशक्तियोंके चरित्रोंका वर्णन किया जाता है जो कि शारदा-तिलकके अनुसार "सोमसूर्याऽग्निरूपिणी" चन्द्रमा-स्वरूप द्युलोक-निवासिनी योग-माया (स्वयं मधुकैटभको न मारनेसे) सौम्या सरस्वती का प्रथम चरित्रमें वर्णन है। मध्यम चरित्रमें—मध्यलोक निवासिनी देवताओं के—

> अतीवतेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
> ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्॥
> अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
> एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा॥

तेजसे उत्पन्न महिषमर्दिनी महालक्ष्मी, तृतीय चरित्र में धूम्रलोचन-आदिको भस्म करने वाली अग्निरूपिणी महाकालीका वर्णन है जिससे दानवोंके साम्राज्यका सूर्यास्त हो गया।

तभी तो जगदम्बाने कहा था "एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा" इति। अब इसी मुद्रित अशुद्ध सप्तशतीके पाठको अपनी श्रीपूज्य पैतृक सप्तशतीसे शुद्ध पाठ करवानेके लिए अशुद्धता दिखला रहा हूँ। उचित

समझें तो शुद्ध कर लें, अन्यथा क्षमा करना।

जैसे ब्रह्मकवचमें जगदम्बा अष्टदशभुजाके शस्त्रोंका वर्णन है। शंखं[1] चक्रं[2] गदां[3] शक्तिं[4] हलं च[5] मुसला[6] युधम्।' खेटकं[7] तोमरं[8] चैव परशुं[9] पाश[10] मेव च। कुन्तायुधं[11] त्रिशूलं[12] च शार्ङ्ग[13] मायुध मुत्तमम्। १३ सशस्त्र हाथ तो हुए तो क्या पांचों हाथ खाली हैं? शेष हाथोंके शस्त्र 'चर्म[14] खड्ग[15] च वज्रं[16] च पट्टिशं[17] मुद्गरं[18] तथा'' । अर्गला स्तोत्रमें व्यतिक्रम है। जैसे 'महिषासुर निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः। रूपं०। रक्तबीज वधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनी, रूपं०। शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनी। रूपं०। उत्तर चरित्रमें प्रथम छठे अध्यायमें धूम्राक्ष (धूम्रलोचन) सप्तममें चण्ड और मुण्ड और अष्टममें रक्तबीज तथा नवम-दशममें शुंभ-निशुंभ दोनों भाइयोंके वधका वर्णन है। हमारा पाठ है—महिषासुर निर्णाशि धूम्राक्षस्य च मर्दिनि। चण्डमुण्ड वधे देवि रक्त बीजविनाशिनी। शुम्भस्य च निशुम्भस्य सर्वदैत्यनिपातिनी। रू०॥ द्वितीय चरित्रमें "तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः'' उसको देखकर महिषासुरसे पीड़ित देवता आनन्दको प्राप्त हुए। तब क्या किया, "ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानिस्वान्यायुधानि च'' तब देवताओं ने उसको अपने-अपने शस्त्र दिये। 'च' और भी घंटा, कमण्डलु, अक्षमाला, तेजोमयी रश्मियां हार-चूड़ामणि कुण्डल, हाथोंके स्वर्णके कङ्कण आदि सभी अंगोंके भूषण, सुरापात्र आदि दिये। एवं दशम अध्यायमें—

तस्या पतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः॥

तब चण्डिकाने उस शुम्भासुरके खड्ग को और ढाल को तेज बाणोंसे काट दिया। तब घोड़े मारे गये, धनुष काटा गया और सारथि भी मारा गया। तेज बाणोंने काटा तो तलवार और ढालको, ये घोड़े सारथि कैसे मरे? धनुष कैसे कट गया? यह सारा पाठ असंबद्ध है, अतः यहां पर "अश्वांश्च पातयामास रथं सारथिना सह'' यह मध्यवर्ती पाठ लगानेसे पाठ सर्वथा संगत हो जायेगा। (शेष फिर)

आध्यात्मिक अभ्युदयमें तिथियोंकी उपासनाका महत्व

[लेखक—श्रीलक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव, उपनिरीक्षक शिक्षा शालायें टोंक (राजस्थान)]

[तन्त्र शास्त्रोंमें तिथियोंके स्वरूप एवं अर्चनकी विधियाँ वर्णित हैं, विद्वान् लेखकने प्रस्तुत लखमें उसी विषय पर प्रकाश डालते हुए मूलश्लोकोंमें तिथियोंके ध्यान एवं मन्त्रोंको उपन्यस्त किया है। लेखक स्व० स्वामी श्रीशंकरानन्दजी महाराज और स्वामी श्रीमूर्खारण्यजी महाराजके समागम सान्निध्यसे प्रतिच्छायित हैं, अतः यह लेख इस विषयके रुचिशील पाठकोंको लाभप्रद सिद्ध होगा। —सम्पादक]

वर्तमान मानव समाज हर दिशामें प्राचीन कालसे विकसित होनेका दावा कर रहा है। प्रत्येक देशमें स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा भ्रातृभावके नाम पर ऊंचे-ऊंचे झण्डे आकाशसे बातें करते दिखाई देते हैं। देश-देशमें स्वतन्त्र तथा सहयोगी समाजकी रचना हेतु बड़ी-बड़ी सभाओंका आयोजन किया जा रहा है। परन्तु वाहरे विकसित समाज! संसारमें कहीं शांतिका चिह्न ही शेष न रखा। यदि पृथ्वी पर बेरोजगारी, स्वार्थ, मंहगाई, रोग, रागद्वेष और कंगालीकी ज्वाला धधक रही है तो आकाश को प्रलयंकारी भयंकर काले-काले युद्धके बादलोंकी घटा ने घेर रखा है। कालने मानव समाजको शायद ही पहिले ऐसी बड़ी और गम्भीर चुनौती दी हो जैसी वर्तमान दशा में जबकि मानव समाज विकासके भ्रम-जालमें फँसा ऐसे बारूदके ढेर पर खड़ा हुआ है जिसके भस्म होनेमें केवल तनिक सी आगकी चिंगारीकी आवश्यकता है।

यह भी परम सत्य है कि वर्तमान कालमें जिस देश को जितना अधिक विकसित होनेका गर्व है उसको उतनी ही अपनी सुरक्षाकी चिन्ता और व्याकुलता है। आज सम्पूर्ण मानव समाजकी आंखें बड़ी आतुरतासे संसारके कोने-कोनेमें लगी हुई है कि न जाने किस समय किन परिस्थितियोंमें कहां बारूदके ढेरमें तनिक-सी चिंगारी प्रकट हो जावे जिससे प्रज्वलित अग्निकी विषधरके समान लपलपाती हुई विनाशकारी लपटोंमें मानव समाजको अपने विकास सहित सदाके लिये भस्म हो जाना पड़े।

भारत देश जिसको अनादि कालसे ऐसी परिस्थितियों

में संसारको मौतके चंगुलसे छुड़ानेका श्रेय रहा है, आज भी मौन नहीं है ।

आर्थिक संकट, सामाजिक संघर्ष, राजनैतिक भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक विषमता, धार्मिक कटुता, भाषाई विवाद तथा प्रान्तीय संकीर्णता आदि प्रश्नोंके होते हुये भी वह अब भी पीछे नहीं है। परन्तु यह बात अवश्य ही माननी पड़ेगी कि जो सफलता हमको मिलनी चाहिये थी, उसको न तो हम प्राप्त कर सके हैं और न निकट भविष्यमें करनेकी आशा ही है ।

इसका मूल कारण हमारे जीवनके मूल्योंका लोप हो जाना है, और जब तक प्राचीन मूल्योंको फिरसे स्थापित करके उनके आधार पर समाजका पुनः निर्माण नहीं हो जाता, विजयश्री हमसे उतनी ही दूर रहेगी ।

किसी देशकी शक्तिका अनुमान उसकी जनसंख्या, धन, भौतिक ज्ञान, सेना और अन्य आविष्कारों तथा खोजों से नहीं लगाया जा सकता। वास्तविक शक्तिका मापदण्ड उस देशके लोगोंके चारित्रिक विकास एवं आचरण पर निर्भर है । चरित्र-निर्माणमें समयका बहुमूल्य स्थान है। यदि हम प्रारम्भसे ही बालकको समयका सदुपयोग करना सिखा देते हैं तो चरित्र-निर्माणकी सबसे बड़ी मंजिल तय हो जाती है । विद्यार्थी जीवनको वर्षों-वर्षों का, मासों-मासों का, सप्ताहों-सप्ताहों का, तिथियों-तिथियों का तथा उनमें भी पहरों, घण्टों, मिनटों, सैकिण्डों और पलोंमें विभाजित हो जाना परम आवश्यक है। विद्यार्थीको अपने जीवनके निश्चित पलमें निश्चित कार्य प्रारम्भ करके उसको निश्चित पलमें समाप्त कर देना चाहिये। कहनेका तात्पर्य यह है कि विद्यार्थी जीवनके कार्यक्रममें यदि समय विभाग चक्रका ध्यान नहीं रखा गया तो उसकी सारी शिक्षा और उसके सर्वांगीण विकासका प्रयास एक शेखचिल्लीकी कहानी रह जाता है । उदाहरण हेतु हम बता देना चाहते हैं कि यदि अमुक तिथिको विद्यार्थीको किसी स्थान पर जाना है, यदि वह उस तिथिको उस स्थान पर नहीं पहुंचा तो लाभ दूर रहा, हानिका अधिकारी हो जाता है । समयके नष्ट करने के समान संसारमें कोई पाप नहीं माना जाता ।

यदि हम मानवकी सभ्यता तथा मानव-समाजके विकासका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें तो हमें ज्ञात होगा कि मानवने सबसे पहले समय ही के महत्वको जाननेका प्रयास किया । समयके ज्ञान प्राप्त करनेके प्रयाससे ही अखण्ड ज्ञान प्राप्तिके मार्गका विश्लेषण प्रारम्भ होता है ।

यह एक प्राकृतिक बात है कि जब मानव किसी समस्याको हल करने हेतु सोचने लगता है तो उसकी दृष्टि सहसा आकाशकी ओर जाती है । ज्ञानकी लालसामें प्राकृतिक मानवकी आंखें भी आकाश पर पड़ीं । उसने सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र आदि पर मनन करना आरम्भ किया । उनके उदय-अस्त होनेका पता लगाया, उनसे भूमण्डल तथा स्वयं पर पड़ने वाले प्रभावोंको खोजा और इस प्रकार सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्रको जन्म दिया। आकाशसे उतरकर उसकी दृष्टि पंचतत्वों पर पड़ी और समयके संयोगसे तत्व सम्बन्धी शास्त्रोंकी मौखिक रचना की गई । इसी प्रकार धीरे-धीरे अध्ययनके क्रमानुसार वनस्पति-शास्त्र, जन्तु-शास्त्र और भूगर्भ-शास्त्रों आदि-आदिको बनाया गया ।

अपने चारों ओरके ज्ञान प्राप्त करनेके पश्चात् प्राकृतिक मानवकी संतानकी दृष्टि स्वयं पर ही पड़ी, और वह स्वयं ही को खोजने लगा । इस प्रकार आत्मज्ञानका मार्ग तय हुआ । अतः यदि हम ब्रह्म-ज्ञानका विश्लेषण करें तो ज्ञान तथा तत्वज्ञान क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर विचार गणनामें आते हैं। ब्रह्मज्ञान प्राप्ति हेतु क्रमवार प्रत्येकका समय विभाग चक्रके आधार पर यथाविधि अध्ययन करना आवश्यक है । साधककी प्रत्येक पदकी सिद्धियां क्रमानुसार स्वतः ही प्राप्त होती रहती हैं ।

प्रत्येक पदकी सिद्धि उसकी साधना पर आधारित है। साधनाकी सफलता विधि पर आश्रित है, और विधिकी शुद्धताका स्रोत निश्चित समय होता है। अतः समय ही ब्रह्मज्ञानका मूल आधार सिद्ध होता है । उदाहरण हेतु यदि हमको किसी मंत्र-तंत्र अथवा यंत्रकी साधना तृतीयामें करनी है, परन्तु उस दिन मान ली जाय तृतीया केवल कुछ घड़ीके ही लिये है तो साधना पूर्ण नहीं हो सकती और यदि साधना तृतीयाकी बजाय चतुर्थीमें की गई तो फल लाभके स्थान पर हानिप्रद होगा । अतः साधकको जप करनेके पहले तृतीयाका आवाहन तथा पूजन करना चाहिये । इसका फल यह होगा कि जब तक साधकका जप समाप्त

नहीं होगा तृतीया उपस्थित रहेगी और मनोरथ सिद्ध होगा।

तिथियोंके आवाहन सम्बन्धी मंत्रोंके लिखनेके पूर्व हम श्री श्री १०८ स्वामीजी श्रीशंकरानन्दजी महाराज द्वारा साधनाके सम्बन्धमें बताई गई बातोंको अति संक्षेपमें लिखना चाहते हैं।

संकल्पके पूर्व साधकको अपनी साधनाका लक्ष्य स्वयं स्पष्ट समझ लेना चाहिए। देवता लक्ष्य-पूर्ति करता है और इसमें कोई हेरफेर नहीं होती। जैसे भक्त ध्रुवके तपका लक्ष्य राज्य-प्राप्ति था। परन्तु भगवान् विष्णुके दर्शनके समय भक्त ध्रुवने भगवान् विष्णुको ही मांगा परन्तु भगवान् विष्णुने तपके लक्ष्यके अनुसार भक्त ध्रुवको अटल राज्य ही प्रदान किया।

शुद्ध विधि लक्ष्य प्राप्तिका महत्वपूर्ण साधन है। परन्तु महादुःख व शोकका विषय है कि शुद्ध विधियां हमारे देश से गोपनीयताके कारण लुप्त सी होती जा रही हैं और उनके स्थान पर पाखण्डी गुरुओं द्वारा मनमानी विधियों का निरन्तर आविष्कार होता चला आ रहा है। देश पर इन ढोंगियोंके प्रपंचोंका आतङ्क छाया हुआ है जिसकी काली घटाने शुद्ध विधि-मार्तण्डको ढककर चारों ओर अन्धेरा कर दिया है।

सबसे महत्वपूर्ण बात वही समयकी है जो इस लेख का मूल उद्देश्य है। स्वामीजी महाराजके कथनानुसार लक्ष्यपूर्तिके हेतु साधकको अपनी आयु पर अधिकार प्राप्त करना चाहिये। लेखक स्वामीजी महाराजके उपदेशोंके समय केवल एक बालक होनेके कारण ठीक-ठीक अर्थ समझनेमें असमर्थ था। परन्तु आज जैसा भी लेखक समझ पाया है वह प्रथम तो यह है कि साधक विद्या तथा अनुभवोंके आधार पर अपनी आयु अवधि जानकर उस ही गति से लक्ष्यकी ओर प्रगति करे ताकि जीवनमें ही लक्ष्य प्राप्त हो जावे। दूसरे यदि यह सत्य है कि जीवनकी तिथियां निश्चित हैं तो उसको तिथियोंकी सिद्धि प्राप्त करना अनिवार्य है। जो निम्न प्रकार तिथि आवाहन द्वारा सरलतासे प्राप्त की जा सकती है और जिसका प्रयोग हमारे देशके ऋषि अपने जीवनमें कर चुके हैं।

तिथेर्ध्यानं बिना देवि ! तिथेर्मन्त्रं तथैव च।
अज्ञात्वा परमेशानि ! दिनकृत्यं करोति यः ॥
तस्य सर्वं भवेद् व्यर्थं दिनकृत्यं वरानने !
या तिथिः सा महामाया आद्यामूर्तिर्जगन्मयी ॥
कृष्णपक्षे कृष्ण वर्णा शुक्ले चन्द्रसमप्रभा।
द्विभुजां शुक्लरूपाञ्च खेलत् खञ्जनगामिनीम् ॥
द्विलोचनां शशिकलां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम्।
तप्तहाटकनिर्माण नानालंकारभूषिताम् ॥
दाडिमीबीज सदृशदशनद्युति शोभनाम्।
ध्यायेत् प्रतिपदं देवीं जप पूजा विशुद्धये ॥
मंत्रो यथा—श्रीं प्रतिपद्भ्यः स्वाहा ॥१॥
एवं द्विलोचनां शशिकलां शुद्धस्फटिकशोभनाम्।
शुद्धाभरण शोभाढ्यां शुक्लवस्त्र परिच्छदाम् ॥
नाना कटाक्षसंयुक्तभ्रूलता परिशोभिताम्।
सिन्दूर तिलकोद्दीप्तां खञ्जनाञ्चित लोचनाम् ॥
द्विभुजां सुन्दराङ्गीञ्च किशोरीं नवयौवनाम्।
ध्यात्वा द्वितीयां चार्वङ्गि ! जपेन्मन्त्रं यथा शृणु ॥
ऐं द्वितीयायै स्वाहा ॥२॥
शुक्लपद्म प्रतीकाशां शुक्लवस्त्र परिच्छदाम्।
शुक्लाभरण शोभाढ्यां पुण्डरीकोपरिस्थिताम् ॥
द्विलोचनां शशिकलां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम्।
कटाक्ष विशिखोपेतां द्विभुजां तृतीयां भजेत् ॥
ॐ ऐं तृतीयायै स्वाहा ॥३॥
चतुर्थी शुक्लचार्वङ्गी यज्ज्ञात्वा सिद्धितां व्रजेत्।
कुन्दपुष्पसमाभासां द्विभुजां लोललोचनाम् ॥
शुक्लवस्त्र परीधानां शुक्लाभरण भूषिताम्।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तां खञ्जनाञ्चितलोचनाम् ॥
ऐं हुँ चतुर्थ्यै स्वाहा ॥४॥
पञ्चमी शृणु चार्वङ्गि ! सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।
यज्ज्ञात्वा परमेशानि ! तिथेः फलमवाप्नुयात् ॥
शुद्ध स्फटिक संकाशां श्वेतपद्मोपरिस्थिताम्।
हास्ययुक्तां प्रसन्नास्यां कटाक्षविशिखोज्ज्वलाम् ॥
कन्दर्पधनुराकारभ्रूलता-परिशोभिताम्।
द्विभुजां श्वेतवर्णाञ्च श्वेतालंकार भूषिताम् ॥
लोचनद्वयसंयुक्तां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम्।
मृणालसदृशाकार बाहुवल्लीविराजिताम् ॥

खेलत् खञ्जन नेत्राञ्च चन्द्रचूड़ा विराजिताम् ।
ह्रीं ऐं ह्रीं पञ्चम्यै स्वाहा ॥
ह्रीं ऐं ह्रीं विशेषः ।
श्रीपञ्चमीदिने कर्तव्यं पूजनं महत् ॥
निरीक्ष्य दक्षिण नाथे यद् ध्यानपूजादिकञ्चरेत् ।
ध्यायेत् परमबले पञ्चमीं तिथिरूपिणीम् ॥
ध्यात्वा पाद्यादिकं दत्वा प्रजपेद्दशधा मनुम् ।
ततस्तु पूजयेद्देवीं शारदां वाग्विलासिनीम् ॥५॥
कुन्दपुष्प समाभासां द्विभुजां लोललोचनाम् ।
कटाक्ष विशिखोद्दीप्तां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
दाड़िमीबीज सदृश दशनद्युतिमुज्ज्वलाम् ।
शुक्लालंकारसुभगां शुक्लासननिवासिनीम् ॥
शुक्लवस्त्र परिच्छदां शुक्लहार विनोदिनीम् ।
द्विभुजां चन्द्रवदनां ध्यायेदात्मविभूतये ॥
ॐ ह्रीं षष्ठ्यै स्वाहा ॥६॥
शरच्चन्द्र प्रतीकाशां द्विभुजां शशिशेखराम् ।
लोचनद्वय संयुक्तां खेलत् खञ्जनगामिनीम् ॥
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामञ्जनाञ्चितलोचनाम् ।
कटाक्षविशिखोपेतां भ्रूलता परिशोभिताम् ॥
शुक्लासन समासीनां शुक्लाभरणभूषिताम् ।
शुक्लवस्त्र परीधानां ध्यायेदात्मविभूतये ॥
ह्रीं ॐ सप्तम्यै स्वाहा ॥७॥
राकाचन्द्र प्रतीकाशां द्विभुजां चन्द्रशेखराम् ।
पूर्णचन्द्रमुखश्रेणीं कुटिलालकशोभिताम् ॥
हास्ययुक्तां प्रसन्नास्यां श्वेतवस्त्रपरिच्छदाम् ।
श्वेताभरणशोभाढ्यां किशोरीं नवयौवनाम् ॥
माला कटाक्ष संयुक्तां भ्रूलता परिशोभिताम् ।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामञ्जनाञ्चितलोचनाम् ॥
क्रीं हुँ ऐं अष्टम्यै स्वाहा ऐं हुँ क्रीं ॥८॥
श्वेतपद्म प्रतीकाशां द्विभुजां लोललोचनाम् ।
दाड़िमीबीज सदृश दन्तपंक्ति परिच्छदाम् ॥
शुक्लपट्टाम्बरधरां शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीम् ।
ललाटे पट्टिकां शुद्धां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
नानाभरण दीप्ताङ्गी पीतगन्धप्रलेपिताम् ।
मुक्तावर्तुलहारेण कम्बुकण्ठ सुशोभिताम् ॥
नाना माल्य परिच्छन्नां चित्रराज विराजिताम् ।
ॐ हूँ नवम्यै स्वाहा ॐ ॥९॥
मल्लिकापुष्प संकाशां द्विभुजां लोललोचनाम् ।
श्वेतासनोपविष्टाञ्च शुक्लांशुक परिच्छदाम् ॥
श्वेताभरण संयुक्तां श्वेतगन्ध विलेपनीम् ।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामञ्जनाञ्चित लोचनाम् ॥
ऐं ॐ दशम्यै स्वाहा ॐ ऐं ॥१०॥
केतकीपुष्प संकाशां भ्रूलता परिशोभिताम् ।
नाना कटाक्ष संयुक्तां मत्तद्विरदगामिनीम् ॥
नानालंकारसुभगां पीतवस्त्र परिच्छदाम् ।
पीतगन्ध प्रलिप्ताङ्गीं सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
दाड़िमीबीज सदृश दन्तपंक्तिमनुत्तमाम् ।
द्विभुजां सुन्दरीं देवीं नमाम्यात्मविभूतये ॥
ॐ श्रीं ॐ एकादश्यै स्वाहा ॥ ॐ श्रीं ॐ ॥११॥
पीतपद्म समाभासां शुक्लवस्त्रपरिच्छदाम् ।
शुक्लचन्दन सिक्ताङ्गीं द्विभुजां लोललोलचनाम् ॥
शुक्लाभरण शोभाढ्यां शुक्लासन समाश्रयाम् ।
दाड़िमीबीज सदृश दशनद्युति शोभनाम् ॥
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तां ललाट-पट्टिकां शुभाम् ।
ह्रीं ॐ ह्रीं द्वादश्यै स्वाहा ॥
ह्रीं ॐ ह्रीं ॥१२॥
रक्तचन्द्र प्रतीकाशां किशोरीं नवयौवनाम् ।
रक्तचन्द्र परीधानां कुटिलालकमण्डिताम् ॥
द्विभुजां सुन्दरीं शुद्धां पूर्णचन्द्रमुखप्रभाम् ।
द्विलोचनां चन्द्ररेखां विष्णुपूज्यां वृहत्कटीम् ॥
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामञ्जनाञ्चितलोचनाम् ।
नानाकटाक्ष संयुक्तां नानाश्रृंगार शोभनाम् ॥
ध्यात्वां त्रयोदशीं देवीं प्रजपेन्मन्त्रमुत्तमम् ।
ॐ ऐं त्रयोदश्यै स्वाहा ऐं ॐ ॥१३॥
शुद्ध स्फुटिक संकाशां हरिहस्त विनोदिनीम् ।
नानालंकार सुभगां पीतमाल्य परिच्छदाम् ॥
श्वेतपद्म समासीनां द्विभुजां लोललोचनाम् ।
कटाक्ष विशिखोद्दीप्तां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
दाड़िमीबीज सदृश दशनद्युतिमुज्ज्वलाम् ।
कदम्बकोरकाकारस्तनद्वय मनोहराम् ॥
हास्य युक्तां प्रसन्नास्यां किशोरीं नवयौवनाम् ।
क्रीं ॐ ह्रीं चतुर्दश्यै स्वाहा ह्रीं ॐ क्रीं ॥१४॥

सप्तमपटले श्रीमहादेव उवाच—
पूर्णिमां श्रृणु चार्वङ्गि ! यथा सिद्धिमयो भवेत् ॥
कोटिविद्युल्लताकारां चतुर्बाहु समन्विताम् ।
पीतां शुक्ल परीधानां रत्नकुण्डल संयुक्त
स्फुरद्‌गण्ड मनोहराम् ।
त्रिभङ्ग ललिताकारां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
कटांक्ष लक्ष संयुक्तां भ्रूलतापरिशोभिताम् ।
ह्रीं ॐ श्रीं ॐ पूर्णिमायै स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ॐ ह्रीं ॥१५॥
एतत्ते कथितं देवि ! पूर्णमन्त्रं परात्परम् ।
एतास्तु तिथयो देवि ! शुक्लपक्षे वरानने ॥
कृष्णेपक्षे महेशानि ! तिथयस्तु सुशोभनाः ।
नीलाञ्जन चय प्रख्याः किशोर्य्यो नवयौवनाः ॥
तासां ध्यानं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।
दलिताञ्जनसंकाशां पीतांशुकपरिच्छदाम् ॥
पीतगन्ध प्रलिप्ताङ्गीं पीताभरण भूषिताम् ।
पीतपद्मसमासीनां किशोरीं नवयौवनाम् ॥
द्विलोचनां चन्द्ररेखां द्विभुजां कोरकस्तनीम् ।
ललाट पट्टिकां शुद्धां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
खेलत् खञ्जन गामञ्चि त्रिभीङ्गललिताकृतिम् ।
दाड़िमीबीज सदृश दशन ज्योतिरुज्ज्वलाम् ॥
कृष्णपक्षे महेशानि एतद्‌ध्यानं प्रशस्यते ।
सर्वासां परमेशानि ! एकेन भवति प्रिये ॥
सर्वासां पूर्ववन्मन्त्रममावास्यां विना शिवे !
अमावस्यामतु देवि ! श्रृणुष्व वरवर्णिनि ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ अमावस्यायै स्वाहा ।
ॐ ह्रीं ॐ ॥
अथ वक्ष्याभि सफलं पक्षध्यानं वरानने !
शंखकुन्दसमाभासां नवयौवनसंयुताम् ॥
चतुर्भुजां त्रिनयनां मत्तद्विरदगामिनीम् ।
ललाटपट्टिकामध्ये सिन्दूरतिलकास्थितिम् ॥
भ्रमद्‌भ्रमरनीलाभामञ्जनाञ्चितलोचनाम् ।
पीतांशुक परीधानां कृष्णवस्त्रोत्तरीयिणीम् ॥
नानालंकार सुभगां नीलपद्मोपरिस्थिताम् ।
घूर्णायमान नयनां नीलपद्म विधारिणीम् ॥
सदा षोडशवर्षीयां कदम्बकोरकस्तनीम् ।
हीरकद्युतिसंकाशां दशनज्योतिरुज्ज्वलाम् ॥
नानापुष्पमयैर्हारैर्नानागन्धमयीं पराम् ।
प्रत्यहं भावयेद्देवीं शुक्लपक्षस्वरूपिणीम् ॥
ऐं ऐं श्रीं श्रीं शुक्ल पक्षाय स्वाहा ।
ऐं ऐं श्रीं श्रीं ॥
कृष्णपक्ष महेशानि ! अधुना निगदामि ते ।
महामरकतश्यामां चतुर्बाहुसमन्विताम् ॥
पीनोत्तुङ्गकुचां रम्यां चित्रवस्त्र विलासिनीम् ।
नानाश्रृङ्गार वेषाढ्यां स्फुरच्चकित लोचनाम् ॥
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामञ्जाञ्चितलोचनाम् ।
कन्दर्पधनुराकार भ्रूलतापरिशोभिताम् ॥
रत्नहारेण सहितां नागहारविराजिताम् ।
पीतपद्मसमासीनां चित्र चूड़ा विराजिताम् ॥
पीत विद्युत् समाकान्तोत्तरीय वसनच्छविम् ।
पूर्णचन्द्रमुखीं देवीं कृष्णपक्षस्वरूपिणीम् ॥
ॐ ॐ कृष्णपक्षाय स्वाहा ॐ ॐ ॥

उपर्युक्त विधिके मनन तथा चिन्तनसे भारतकी महानता तथा जगत् गुरु होनेकी वास्तविकता पर स्पष्ट प्रकाश पड़ता है। यहांके ऋषि व मुनि धन्य हैं, जिन्होंने अपने सारे सुख और चैनको त्यागकर आध्यात्मिक क्षेत्रमें अनेकों खोज करके संसारको नई चेतना प्रदान की। साथ-ही-साथ यह देखकर खेद है कि जिन खोजोंसे संसार आज तक लाभ उठाता आ रहा है, भारत उससे शून्य है और आध्यात्मिकता केवल कहने और सुनने की ही बात रह गई है। क्या हुआ यदि एक दो भारतीय इस विषयमें कुछ जानकारी रखते हों। विशेषतया भारतकी अधिक जनसंख्या आध्यात्मिक विषयको केवल अलीफलैलाकी कहानियां समझती है। भौतिकवादका प्रभाव इस तेजीसे बढ़ रहा है कि समाजका अस्तित्व भारी संकटमें पड़ गया है ! आध्यात्मिक पतनका कारण तो आज प्रत्येक व्यक्ति जानता है। और यह है आध्यात्मिकवादके ठेकेदारोंकी मनमानी तथा मान, धन और बलकी गर्वयुक्त लालसा, जो उनके साथ-साथ भारतीय समाजको रसातलकी ओर घसीट ले जा रही है। परन्तु अब भी कुछ ऐसे सच्चे निःस्वार्थी और सच्चरित्र साधक उपस्थित हैं, जो भारतका ही नहीं अपितु समस्त जगत्‌के कल्याणके लिये अधिक परिश्रममें लगे हुए हैं। यह उनके महान् प्रयासोंका ही फल है कि भारतने एक बार फिर करवट बदली है और इससे प्रकट होने लगा है कि यदि प्रातः का भटका सायंकालको भी घर आ जावे तो उसे भटका हुआ नहीं मानना चाहिये।

ज्योतिषशास्त्रका महत्त्व

[लेखक—श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत विद्यावागीश विद्यानिधि]

एक कविने लिखा है—

दूतो न संचरति खे (आकाशे), न चलेच्च वार्ता।
पूर्वां न जल्पितमिदं न च संगमोस्ति।
व्योम्निस्थितं रवि-शशिग्रहणं प्रशस्तं,
जानाति यो द्विजवरः स कथं न विद्वान् ॥

इसका अर्थ यह है कि आकाशमें ज्योतिषीका कोई दूत नहीं घूमता, न कोई उसकी बात चल रही होती है न कोई पहले उसे कह देता है; फिर भी सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहणको ज्योतिषी कई हजारों वर्ष पहले जान लेता है, और बतला देता है; वह ब्राह्मण विद्वान् क्यों नहीं ? यहां पर ग्रहण पहलेसे ही बता देने वाले ज्योतिषी-ब्राह्मणकी प्रशंसा की गई है। वस्तुतः यह उस व्यक्तिकी प्रशंसा नहीं, किन्तु ग्रहण बताने वाले शास्त्रकी प्रशंसा है क्योंकि वह व्यक्ति जो कुछ जानता वा बताता है, वह ज्यौतिष शास्त्रके द्वारा ही बताता है; तब इससे उस ज्योतिष शास्त्रका ही महत्व सिद्ध होता है। 'ज्यौतिष' का अर्थ भी 'द्यु त दीप्तौ' धातुसे सिद्ध है, जो अर्थको पूर्वसे ही प्रकाशित कर देता है।

अन्धकारमें यदि प्रकाश हो जाय, तो उसमें सभी कुछ दीख जाता है। इसी प्रकार भविष्य भी विप्रकृष्ट (दूर) होनेसे अन्धकारमय वा धूमिल होता है। उसे प्रत्येक नहीं देख सकता है। युक्त वा युञ्जान योगी, दूसरा देख सकता है उसे दैवज्ञ। 'ज्यौतिषामयनं चक्षुः' ज्यौतिषको वेदकी आंख बताया गया है। सो वेदांग होनेसे वह वेदकी आंख नहीं, बल्कि संसारकी आंख है। इससे अतीत-अनागत (भूत-भविष्यत्) का वृत्त करामलकवत् हो जाता है। बड़ेसे बड़ा धीर क्यों न हो, उसकी इच्छा भविष्यत्को जाननेकी होती है, अतएव उसे ज्यौतिषशास्त्र वा ज्यौतिषीका पल्ला पकड़ना ही पड़ता है। इसी कारण ज्योतिषीको 'दैवज्ञ' कहा जाता है। 'दैवं जानातीति दैवज्ञः'। जो 'दैव' को भूत-भविष्यत्के वृत्तको जान ले, वह 'दैवज्ञ' है।

ज्यौतिषके तीन स्कन्द माने जाते हैं—(१) सिद्धान्त, (२) होरा तथा (३) संहिता ग्रन्थ (नारद संहिता आदि) इनमें मुख्यता गणित और फलितका विषय अन्तर्गत हो जाता है। गणित शास्त्र तो वादि प्रतिवादिमान्य है ही पर कई व्यक्ति फलित नहीं मानते। इस पर यह याद रखना चाहिये कि गणितका परिणाम ही तो फलित है। गणित यदि ठीक है, तो उनका परिणाम फलित भी ठीक होना चाहिए। हां, उसमें ज्यौतिषीकी समझमें भूल हो सकती है। पर इससे फलित बताने वाला ज्यौतिष शास्त्र असत्य नहीं हो जाता।

सुना जाता है कि 'पं० सुधाकर द्विवेदीने जो ज्यौतिषके महान् पंडित थे, अपनी लड़कीका विवाह फलितानुसार ठीक जांच कर लिया। उन्होंने भलीभांति देख लिया था कि—इसे वैधव्य-योग नहीं। पर फिर भी वह विधवा हो गई। इससे उनकी ज्यौतिष शास्त्रके फलितसे आस्था उठ गई, और इस विषयमें वे अर्ध-आर्यसमाजी बन गये। भूल बड़े-बड़े ऋषि-मुनियोंसे भी हो जाती है, पर शास्त्र इससे झूठा नहीं हो जाता। महर्षि श्रीवशिष्ठने श्रीरामका विवाह लग्न, तथा राज्याभिषेक-लग्न नितान्त परीक्षण करके ही तो रखा होगा, पर उन्हें राजगद्दी छोड़कर वनमें जाना पड़ा, तथा सीताका अपहार तथा त्याग आदि होकर उसे तथा श्रीरामको कष्ट भोगना पड़ा। पर क्या इससे परोक्षता-प्रतिपादक शास्त्र की ही असत्यता हो जाएगी ? नहीं ! जैसे कि कहा जाता है कि—पुरुष की भूल सम्भव हो सकती है। 'स्खलनं हि मनुष्यधर्मः'।

हमारे शुजाबाद (मुलतान) की एक घटना है कि डा० मोहनलालकी लड़की बहुत बीमार हो गई थी। पांच-छः डाक्टरोंने जिनमें एक-दो सिविल-सर्जन भी थे—मिलकर परस्पर-विचारपूर्वक राय दी कि, अब यह लड़की किसी प्रकार भी नहीं बच सकती। जिला मुजफ्फरगढ़में एक 'गोई' नामक हकीम रहता था, उसके पास रोगीका पेशाब ले जाया जाता था। वह अपने सामने रोगीके पेशाबको गिरवा

देता था, और दवाईकी पुड़िया बांधकर रोगीके लिए दे देता था। इस लड़कीका भी पेशाब वहां पर ले जाया गया और उसने दवाई दे दी, लड़की नीरोग हो गई। सभी डाक्टर हैरान थे। तब क्या इससे सरकारी समर्थन प्राप्त डाक्टरी-शास्त्रको ही गलत मान लिया जायगा ?

सन् १९१८ में एक पूर्ण सूर्य-ग्रहण हुआ था, पर किसी भी पंचागमें उसका उल्लेख नहीं था। केवल श्रीनाथ-द्वाराकी टीपमें ही लिखा था और ग्रहणसे एक सप्ताह पूर्व श्रीवेंकटेश्वर समाचार (साप्ताहिक पत्र) बम्बईमें लिखा गया था कि सूर्यग्रहण होगा। तब क्या इससे ज्योतिष शास्त्रके वादि-प्रतिवादिमान्य गणितको भी झूठा मान लिया जावेगा ? कभी नहीं। 'ज्ञानसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्य वस्तुनि' बड़ेसे बड़ा कुशल सारज्ञाता भी पुरुष हो, उससे भी भूल हो जाती है, वह संशय-ग्रस्त हो जाता है। तब वह श्रीसुधाकर द्विवेदीजीकी अपनी ही भूल रही कि—वे आत्म-निर्भर रहे और अपनी भूल उसमें न मानकर उन्होंने फलित-शास्त्रको ही असत्य मानकर विपक्षियोंको इस शास्त्र पर उपहास करनेका अवसर दे दिया।

इसीलिए आजकल कई अन्य व्यक्ति भी मानने लग पड़े हैं कि—'फलित शास्त्रमें उतनी वैज्ञानिकता नहीं, जितना कि—इसमें जनताका अन्धविश्वास है'। वस्तुतः ऐसा नहीं। व्यवस्थित ज्ञान ही 'शास्त्र' कहलाता है। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक शास्त्रकी प्रत्येक बात सदा ही सच निकले। डाक्टरी, यूनानी हिकमत वा आयुर्वेद (वैद्यक) एक शास्त्र है, परन्तु यह सभी अनुभव करते होंगे कि—कई रोगोंके निदान व चिकित्सामें यदा-कदा त्रुटियां हो ही जाती हैं, पर इससे वह डाक्टरी, वा वैद्यक-शास्त्र अशास्त्र नहीं हो जाता। जबकि सरकार ऋतु-परिवर्तन ज्ञानार्थ तथा वर्षा होगी, वा न होगी, वा कब होगी, इसके ज्ञानार्थ लाखों रुपया व्यय करती है, पर उसका परिणाम व फल आशानुरूप दृष्टिगोचर नहीं होता, तब ज्योतिष-शास्त्र पर ही दोष क्योंकर दिया जा सकता है ?

कई लोग ज्योतिष पर विश्वास न रखते हों, इससे किसी शास्त्रको गलत नहीं कहा जा सकता। ऐसे अविश्वासोंकी किसी भी कालमें कमीं नहीं रही है, पर कई सहस्राब्दियोंसे पक्ष-पक्षके द्वन्द्व चलते रहने पर भी ज्योतिष शास्त्र निरन्तर अपना अस्तित्व बनाये हुए है, और बनाये रखेगा, यही उसकी महत्ताकी कसौटी है। कोई विज्ञान केवल भावना या विश्वासके बल पर ही जीवित नहीं रहता, किन्तु उसमें रहने वाले तथ्य पर ही उसका जीवन होता है। जब कोई गणितके दो-दोके संयोगको तो मानता है, पर उसके फलित 'चार' को नहीं मानता, चाहे वह 'चार' कभी निष्फल भी हो जावे, तो यह उस पुरुषका अपना ही अज्ञान है। जिस गणितके द्वारा ग्रहयोगोंकी गतिविधिका पता चलता है, और ग्रहोंका निर्णय प्राप्त होता है, उससे बनने वाले परिणाम फलितको कोई न माननेका हठ करे, तो यह केवल उसका अपना दुराग्रह ही है। फल और प्रयोग सभी विज्ञानसे सम्बन्धित होते हैं, पर उस विज्ञानमें सफलता प्रयोगकर्ताकी प्रवीणता तथा सूक्ष्म दृष्टि पर ही अवलम्बित रहती है, भूल उसमें हो सकती है, पर निराधारता नहीं। जिन विज्ञानोंका प्रयोगसे सम्बन्ध है, उन सबमें भूल की गुंजाइश रह सकती है। एक तरहकी बीमारी पर सरकार समर्थन प्राप्त बीसियों डाक्टरोंकी क्या अलग-अलग रायें नहीं होतीं ? अलग-अलग उपचार उनसे नहीं कहे जाते ? मेडिकल साइन्सकी बहुप्रचलित दवाईसे भी क्या कभी भयंकर असफलता पल्ले नहीं पड़ जाती ? तब क्या सरकार उन डाक्टरोंके लिए भी ज्योतिषियोंकी भांति कभी मूर्खता का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करती है ?

वस्तुतः जो भी विज्ञान प्रयोग-सापेक्ष होते हैं, उनमें अत्यन्त सावधानता, सतर्कता, सूक्ष्मदृष्टिकी क्षमता और विज्ञान-सम्बन्धी गम्भीर एवं दीर्घ अनुभवकी आवश्यकता होती है। परन्तु जब समस्त सरकारी-सूत्रका सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त करने वाले विज्ञानोंमें भी भूलोंकी सम्भावनाएं कम नहीं रहतीं, तब जिस विज्ञानको अनुसन्धानका साधन सुलभ न हो और जबकि उसे राजकीय समर्थन व प्रोत्साहन प्राप्त न हो, तब उसमें कुछ भूलें रह जाएँ, तो इसमें कौन-सा आश्चर्य है ? पर इससे उस शास्त्रको ही गलत बताने लग जाना एक अक्षन्तव्य अपराध है।

ज्योतिषशास्त्र काल सूचक शास्त्र है। वह व्यक्ति व राष्ट्रके उत्थान-पतनका वृत्त सूचित करता है। राज्यों, युद्धों अथवा राज्य-क्रांति आदियोंकी बात इस शास्त्र द्वारा जानी जा सकती है। भविष्यके अन्धकारमय प्रदेशमें इस शास्त्रके

सहारे प्रवेश किया जा सकता है। आज विज्ञानका युग है, पर विश्वका कौन-सा ऐसा प्रगतिशील विज्ञान है जो भविष्य की सूचना देनेकी क्षमता रखता हो। केवल भारतका यही 'ज्यौतिष-विज्ञान' है, जिससे खगोलकी खाक छानकर निश्चित सिद्धान्तका निर्णय कर दिया जाता है। यहां भविष्यका निर्णय अनुमान द्वारा नहीं, किन्तु गणितके स्थिर नियमों द्वारा किया जाता है। प्राचीन-समाधि-धौत-कल्मष ऋषि-मुनियोंने अनुभव द्वारा यह सम्यक् जान लिया था कि—जीवन घटनाओंके साथ ग्रहोंकी स्थिति एवं गतिका घनिष्ठ सम्बन्ध है—यह जानकर उन्होंने वेदोंको मथकर उनसे उनके नेत्रस्थानीय-अंग ज्यौतिष शास्त्रका प्रवचन किया। आज भी इस सम्बन्धकी परीक्षा विज्ञ-व्यक्ति अनायास कर सकता है।

भारतीय प्राचीन ऋषि-मुनियोंने आजके दूरबीन, टेलिस्कोप आदि साधनोंसे हीन होते हुए भी केवल परमात्मा के ध्यानमें आत्माकी एकतानता वा अभेद करके तदात्मक समाधि द्वारा धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र एवं मोक्ष-शास्त्र आदि बहुत शास्त्रोंका इतना गम्भीर ज्ञान प्राप्त कर लिया था, जो आजके बहुविध-साधन सम्पन्न भी यान्त्रिक-युग की कठपुतलियों पाश्चात्य-विपश्चितोंके लिए दुर्लभ है। वे प्राचीन महानुभाव दूरवीक्षण, अणु-वीक्षण आदि भौतिक-यन्त्रोंमें विश्वास नहीं करते थे, क्योंकि इन यन्त्रोंसे अव्यभिचारी (असन्दिग्ध) ज्ञान नहीं हुआ करता। वे प्राच्य-विद्वान् योग समाधिमें विश्वास करते थे। इसके आश्रयसे वे सूक्ष्मसे सूक्ष्म, बड़ेसे बड़े; दूरसे सुदूर, विकृष्ट-व्यवहितको करतलामलकवत् देख लिया करते थे। उन्होंने इस शास्त्रको केवल ऐहिक वस्तुओं तथा स्थूल शीत-वर्षादि तक ही सीमित नहीं किया; अपितु उसे आध्यात्मिक-क्षेत्र तक तथा सूक्ष्म फलाफल तक भी पहुँचा दिया। तब केवल यह कहना भी ठीक नहीं कि—यह शास्त्र केवल आध्यात्मिक-जगत्की वस्तु है, अन्य विद्वानोंकी भांति भौतिक-जगत्की वस्तु नहीं। ऋषि-मुनियोंने मनुष्यके लौकिक-पारलौकिक दोनों प्रकारके कल्याणोंका प्रबन्ध किया था।

भौतिक-विज्ञान वाले अद्यतन-जनोंका विकासवाद केवल अतीत-कालको बताता है, परन्तु ज्यौतिषशास्त्रका विकासवाद भूत, भविष्यत् वर्तमान तीनों कालोंको बतलाता है। देख लीजिये इसके उदाहरणस्वरूप एक 'अरुणसंहिता' को ही, जिससे ज्योतिषी लाखों रुपये कमा रहे हैं। वस्तुतः यह शास्त्र कर्मवादशास्त्र है। हमारे कर्मों का, हमारे दैवका प्रकाशक है; इसीलिए इसका ज्ञाता 'दैवज्ञ' कहा जाता है। हमारा आर्थिक और बौद्धिक वैषम्य इसी कर्मवादके द्वारा सम्यक् बतलाया जा सकता है। ग्रहोंकी स्थिति बतलाती है कि—इस व्यक्तिने पूर्व जन्ममें ऐसे कर्म किये थे, जिनका इस जन्ममें इसने इस प्रकार फल भोगना है। तब ज्योतिष शास्त्र इस प्रकारके भविष्यत्को भी बता सकता है, जहां पर देश-कालसे भी अतिक्रांत अवस्था प्राप्त हो सकती है। ज्योतिष काल्पनिक शास्त्र नहीं, किन्तु ध्रुव-शास्त्र है, सिद्ध शास्त्र है, सिद्धका आदेश है।

काल परिवर्तनशील है, किसी भी कालमें जो कर्म किया जाय, उसका फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। इस सिद्धान्तको आहत करके ज्योतिष-शास्त्रका आयात हुआ है। अनुभवसे प्रतीत होता है कि काल परिवर्तनके ज्ञानमें ग्रहोंकी स्थिति तथा गति अतिशयित सहायक है। इसीलिए ज्यौतिष शास्त्रमें एतद् विषयक चर्चा मिलती है। योगदर्शन के विभूतिपादमें 'भुवनज्ञानं सूर्यसंयमात्' (३।२६) केवल सूर्यमें संयम करनेसे सारे भुवनोंका ज्ञान माना गया है। अन्य संयमोंमें सूक्ष्म व्यवहित, विप्रकृष्ट, अतीत, अनागत आदिका ज्ञान कहा गया है (योग. ३।२५) तब सूर्य तथा सूर्याश्रित ग्रहोंके माध्यमसे सांसारिक व्यक्तियोंका फलाफल-ज्ञान क्यों न हो सकेगा? इसीलिए ज्योतिषमें ग्रहोंकी चर्चा मिलती है।

ग्रहोंका प्रभाव भौतिक जगत्में भी सम्यक् दीखता है। उनसे मानसिक प्रवृत्तियां तथा आध्यात्मिक आकांक्षाएँ भी उदित हुआ करती हैं। भौतिक जगत्में हम देखते हैं कि—भूकम्प आदि घटनाएँ गुरु एवं शनिकी गतियोंसे घनिष्ठ रूपसे सम्बन्धित हैं। वृक्षोंमें जो परिवर्तन होता है, उसका सूर्यकी गतिसे सम्बन्ध है। औषधियोंमें जो परिवर्तन होता है, वह चन्द्रगतिसे वा तिथियोंसे सम्बन्ध रखता है। इसीलिए कहा जाता है कि—इस जड़ी-बूटीको इस तिथि वा इस कालमें तोड़ो, अन्य समयमें नहीं। यदि औषधियोंको लाने वाला वैद्य ज्योतिषी भी हो, तो रोगियोंके रोग दूर करनेमें बहुत सफल हो सकता है। इसी प्रकार

ज्योतिषी वैद्य भी हो और प्रत्येक पुरुषकी शारीरिक स्थिति को जाननेकी शक्ति रखता हो, तो वह भी फलाफल बतलाने में सफलता प्राप्त कर सकता है। तब 'सोना और सुगन्ध' की चरितार्थता हो सकती है।

प्रत्येक परमाणुकी रचना वा शक्तिके साथ सौर-परिवारके ग्रहोंकी स्थिति तथा गतिका घनिष्ठ-सम्बन्ध होता है। उसका वैज्ञानिक कारण जो बहुत समयके बाद ठंडा होकर निवासके योग्य बना; जिसमें इसी सूर्यके कारण स्थावर-जङ्गम सृष्टि हुई। तभी तो कहा है—'सूर्य आत्मा जगत-स्थुषश्च' (वा० यजु ७।४२), तब सूर्यजात पृथ्वीमें तथा पृथ्वीजात स्थावर-जंगम व्यक्तियों पर सौर-जगत्‌का प्रभाव भी क्यों न पड़े? चट्टानोंका निर्माण व विनाश, वर्षाका भाव व अभाव सूर्य पर ही निर्भर है। वर्षा आदिका हमारी कृषि, हमारे स्वास्थ्य और हमारी आर्थिक स्थिति पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है—यह सर्वजनसंवेद्य है।

ध्वनि, उष्णता, प्रकाश, आकर्षण, विद्युत् और ईथर भिन्न-भिन्न शक्तियां हैं, यह सब सूर्यकी शक्तियां हैं, और सूर्यसे ही आती हैं। कालके गर्भमें प्रविष्ट हुई यह शक्तियां ही उत्पत्ति-स्थिति एवं प्रलय करने वाली होती हैं। वैज्ञानिक-विद्वान् भी इन शक्तियोंको सूर्य तथा उनसे जनित ग्रहोंमें मानते हैं। पल-पलमें हम इन शक्तियोंसे प्रभावित होते हैं। ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार इन शक्तियोंमें वृद्धि एवं ह्रास हुआ करते हैं। अपनी-अपनी शारीरिक स्थितिके अनुसार उनमें भिन्न-भिन्न परिणाम भी हुआ करते हैं। पृथ्वी, जल, वायु एवं ताप आदिमें परिवर्तन सूर्यकी दशाके कारण ही होता है। भिन्न-भिन्न देशके पृथ्वी, जल, वायु, ताप आदिका भिन्न-भिन्न प्रभाव भिन्न-भिन्न देशकी जातियोंमें भिन्न-भिन्न पड़ा करता है। मद्रासी वा पंजाबी, पठान व हिन्दू, अंग्रेज व हिन्दुस्तानीके आकार-प्रकार व स्वभावादिमें कितना अन्तर हुआ करता है।

मनुष्यका निर्माण केवल जन्मसे ही नहीं, परिस्थितिके अनुसार भी हुआ करता है। बालक जब उत्पन्न हो, तब तात्कालिक परिस्थितिका भी उस पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। उस समय जैसी ग्रहस्थिति होती है, उसका प्रभाव उस पर अनिवार्य हुआ करता है। कोई जन्मसे ही राजकुमार होता है, कोई निर्धन-गृहमें जन्म लेकर परिस्थितियोंका दास बनता है। मनुष्य पूर्वजन्मके अपने-अपने कर्मके अनुसार ही भिन्न-भिन्न परिस्थितियोंको प्राप्त होता है। उसी अव्यक्त कर्म परम्पराको ज्योतिषशास्त्र ग्रह विज्ञान द्वारा व्यक्त कर दिया करता है। यह एक प्रसिद्ध पद्य है—

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च,
द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये,
धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तम्॥

अर्थात्—यह सूर्य-चन्द्रादि सभी पुरुषोंका वृत्त जानते हैं। तब इन सभी पर आधारित ज्योतिष शास्त्र भी इन्हें दुह कर इनसे हमारे कर्मके फलाफलको प्रकट कर दिया करता है। यह ग्रहमण्डल उस फलका द्योतक भी होता है, वाचक भी। द्योतक होनेसे वह उस फलको प्रकाशित करता है, और वाचक होनेसे जब हम उस ग्रह पर प्रभाव डालने वाली ज्योतिष-शास्त्रोक्त विविध वस्तुओंको उस ग्रहके नाम से अर्पण करते हैं अथवा विविध रत्नों व धातुओंको अंगूठी आदिके रूपमें धारण करते हैं, तब उस ग्रहका दुष्प्रभाव भी प्रायः शान्त हो जाता है। तब उन्हीं ग्रहोंका शास्त्र ज्योतिष यदि अतीतानागत वर्तमान फलाफल बताया करता है, तब इसमें अवैज्ञानिकता कुछ भी नहीं। [क्रमशः]

—

महामहोपाध्याय पं० श्रीमथुराप्रसादजी दीक्षितके दो अद्भुत ग्रन्थ 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको
आधे मूल्यमें
'भक्त सुदर्शन नाटक' (हिन्दी टीका सहित)
मूल्य २) रु० डाक रजिस्ट्री खर्च ७० नये पैसे
'केलिकुतूहल' (हिन्दी टीका सहित) आयुर्वेद विज्ञानका अद्भुत ग्रन्थ। मूल्य ४) रु०, डाक रजिस्टरी खर्च ८० नये पैसे। 'ज्योतिष्मती' के ग्राहक दोनों ग्रन्थ अर्ध मूल्य ३) और डाक रजिस्टरी व्यय १) कुल ४) भेजकर प्राप्त कर सकते हैं वी० पी० नहीं होगी।
'व्यवस्थापक' ज्योतिष्मतीनिकेतन,
सोलन (शिमला)

'मानस' में शकुन-विचार

[लेखक — श्री गिरीशदत्त तिवारी, एम० ए०]

गोस्वामी तुलसीदासजीने "नानापुराण निगमागम सम्मत" रामचरित-मानसकी रचना की । अतः शास्त्र-सम्मत अन्य बातोंके साथ-साथ उनमें प्रत्येक अवसर पर शुभाशुभ फलोंका संकेत करने वाले 'सगुनों' पर भी विचार हुआ है । इस दृष्टि से शास्त्रोंमें जो शुभ या अशुभ लक्षण माने गये हैं, उन्हें शुभ या अशुभ परिणाम देने वाला चित्रित किया गया है । पुरुषों एवं स्त्रियोंके भेदसे भी शकुनमें भेद चलता है, विशेषतः अंग-स्फुरण आदिमें । उसका भी सम्यक् निरूपण 'रामचरित मानस' में मिलता है ।

सर्वप्रथम उमा-शम्भु-विवाह के समय मंगल एवं शुभद 'सगुन' का उल्लेख मिलता है—

लगे सँवारन सकल सुर, वाहन विविध विमान ।
होहिं सगुन मंगल सुभग करहिं अपछरा गान ॥

इसके बाद जनकपुरीमें 'सीता दर्शन' के समय भगवान् रामचन्द्रजीके शुभद अंग स्फुरित होते हैं—

सो सब कारन जान विधाता ।
फरकहिं सुभद अंग सुन भ्राता ॥

इससे मंगलमय प्रसंगकी उपस्थितिकी पूर्व-सूचना मिली । इसी प्रकार गौरी पूजनके उपरान्त सीताजीके वाम अंग स्पन्दित हुए—

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल-मूल, वाम अंग फरकन लगे ।

इसके उपरान्त जब अयोध्यामें बरात चलनेकी तैयारी हो रही थी, उस समय अनेक प्रकारके सुन्दर सगुन हो रहे थे—

चढ़ि-चढ़ि रथ बाहेर नगर, लागी जुरन बरात ।
होत सगुन सुन्दर सवहि, जो जेहि कारज जात ॥

इस व्याहके लिये तो सारे सगुन एक साथ ही उपस्थित हुए, क्योंकि वे स्वयंको ही सच्चा सिद्ध करना चाहते थे—

बनइ न बरनत बनी बराता ।
होहिं सगुन सुन्दर सुभदाता ॥
चारा चाषु बाम दिसि लेई ।
मनहुं सकल मंगल कहि देई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा ।
नकुल दरस बन काहू पावा ॥
सानुकूल वह त्रिविध बयारी ।
सघट सबाल आव बर नारी ॥
लोवा फिरि-फिरि दरसु देखावा ।
सुरभी सनमुख सिसुहिं पियावा ॥
मृगमाला फिरि दाहिनि आई ।
मंगल गन जनु दीन्हि देखाई ॥
छेमकरी कह छम बिसेखी ।
स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥
सनमुख आयउ दधि अरु मीना ।
कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥
मंगलमय, कल्यानमय, अभिमत फलदातार।
जनु सब सांचे होन हित भए सगुन एक बार ॥
मंगल सगुन सुगम सब ताके ।
सगुन ब्रह्म सुन्दर सुत जाके ॥
राम सरिस बरु, दुलहिन सीता ।
समधी दशरथु-जनकु पुनीता ॥
सुनि अस व्याहु सगुन सब नाचे ।
अब कीन्हें विरंचि हम सांचे ॥

यही नहीं महाराज दशरथके पास जनकजीने मंगल-सगुनकी वस्तुएं—दधि, दूर्वा, रोचन, फल-फूल, नव-तुलसीदल इत्यादि भेजीं—

मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये ।
बहुत भांति महिपाल पठाये ॥

विवाहके मुहूर्तमें सगुन सजाये गए—

संख निसान पवन बहु बाजे ।
मंगल कलस सगुन सुभ साजे ॥

इसी प्रकार जानकीजीकी विदाके समय

सीय चलत व्याकुल पुरवासी ।

होहिं सगुन सुभ मंगलरासी ॥
सुमिरि गजानन कीन पयाना ।
मंगलमूल सगुन भये नाना ॥

इसी प्रकार भगवान् रामचन्द्रजीके अयोध्या पहुंचने पर भी नाना प्रकारके सगुन हुए।

राम राज्याभिषेक-प्रसंगमें भी राम एवं सीताजीको नाना शुभ शकुन हुए—

राम-सीय तन सगुन जनाए।
फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहिं।
भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥
भए बहुत दिन अति अवसेरी।
सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरत सरिस प्रिय को जग मांही।
इहइ सगुन फल दूसर नाहीं ॥

शास्त्रोंमें शकुनके फलाफलोंका विस्तृत विवेचन मिलता है। पुरुषके दाहिने बाहुके स्पन्दनका फल प्रियजन संयोग माना गया है; पर स्त्रियोंके लिये दाहिने अंगका स्पन्दन अनिष्टकर माना गया है। कैकेयीकी दाहिनी आंख फड़क कर अपशकुन बतला रही थी—

सुनु मन्थरा बात फुर तोरी।
दाहिन आंख नित फरकइ मोरी ॥
दिन प्रति देखऊँ रात कुसपने।
कहउं न तोहि मोह बस अपने ॥

इसी प्रकार भगवान् रामके बनको प्रस्थान करते समय लंकामें असगुन हुए—

कुसगुन लंक अवध अति सोकू।

शुभाशुभ सूचक शकुन अनागत, अदृष्ट भविष्यकी सूचना देते हैं—

अनरथु अवध आरम्भेउ जब तें।
कुसगुन होहिं भरत कहं तब तें ॥
देखहिं रात भयानक सपना।
जागि करहिं कटु कोटि कलपना।

इसी प्रसंगमें इस अपशकुनके निवारणकी विधि भी कही गयी है—

विप्र जेवांई देहिं दिन दाना।
शिव अभिषेक करहिं विधि नाना ॥

और फिर भरतके अयोध्यामें प्रवेश करते ही अपशकुन होते हैं—

असगुन होहिं नगर पैठारा।
रटहिं कुभांति कुखेत करारा ॥
खर सियार बोलहिं प्रतिकूला।
सुनि-सुनि होइ भरत मन सूला ॥

इसके उपरान्त छींकका शुभाशुभ फल भी बताया गया है —

दीख निषादनाथ भल टोलू ॥
कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
एतना कहत छींक भई बांए।
कहेउ सगुनि अन्ह खेत सुहाए ॥
बढ़ एक कह सगुन बिचारी।
भरतहिं मिलिअ न होइहि रारी ॥
रामहि भरत मनावन जाहीं।
सगुन कहइ अस विग्रहु नाहीं ॥

इससे पता लगता है कि सगुन पर कितना विचार चलता था तथा किस प्रकार उसका ठीक-ठीक फल जाना जा सकता था।

भरत-मिलन-प्रसंगमें—

मंगल सगुन होहि सब काहू।
फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू ॥
भरतहिं सहित समाज उछाहू।
मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू ॥

और इसी प्रकार स्वप्न विचारकी भी चर्चा मानसमें प्राप्त होती है—

उहां राम रजनी अवशेषा।
जागे सीय सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आए।
नाथ वियोग ताप तन ताए ॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी।
देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन।
भए सोचबस सोच-बिमोचन ॥

लखन सपन यह नीक न होई।
कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बन्धु समेत नहाने।
पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥

यह तो हुआ भगवान् रामचन्द्रजीका शकुन-विचार। अब देखिए निषादराज किस प्रकार फल बता रहा है—

लगे होन मंगल सगुन, सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु ॥

अभी भरत-मिलन नहीं हुआ पर पूरा भविष्य-कथन हो गया। एक महत्त्वकी बात यह है कि यहां "मंगल सगुन" सुना गया है। अतः यह शकुन पक्षियों वाला ही होना चाहिये। पक्षियोंके कारण इस शास्त्रका नाम शकुन-शास्त्र पड़ा है।

यहां तक तो हुआ शकुनको गम्भीरतासे ग्रहण करने वालों का विचार। अब देखिये उन राक्षसों आदिकी स्थिति जो अभिमानवश या मृत्युवश शकुनकी अवगणना करते हैं। खरदूषण रामजीसे भिड़ने चला—

सूर्पनखा आगे करि लीनी।
असुभ रूप श्रुति—नासा हीनी ॥
असगुन अमित होहिं भयकारी।
गनहिं न मृत्यु बिबस सब झारी ॥

और रामचन्द्रजी रावणसे भिड़नेके लिए वानरी सेना ले चले—

हरखि राम तब कीन्ह पयाना।
सगुन भए सुन्दर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती।
तासु प्रयान सगुन यह नीति ॥
प्रभु पयान जाना बैदेही।
फरकि बाम अंग जनु कहि देहीं ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई।
असगुन भयउ रावनहि सोई ॥

'काल बस' हुए रावणने किस प्रकार अपशकुनको भी शकुन माना तथा उपेक्षा की—

सोचहिं सब निज हृदय बिचारी।
असगुन भयउ भयंकर भारी ॥
दसमुख देखि सभा भय पाई।
बिहंसि बचन कह जुगति बनाई ॥
सिरउ गिरे संत सुभत जाहीं।
मुकुट परत कस असगुन ताही ॥

उसने तो जबसे सीताहरण किया तभीसे असगुन हो रहे हैं—बूढ़ा मन्त्री माल्यवान कहता है—

जब ते तुम सीता हरि आनी।
असगुन होहि न जात बखानी ॥

पर भुज-बल-गर्व-मत्त रावण उसकी अवगणना करता है—

असगुन अमित होहिं तेहि काला।
गनइ न भुजबल गर्ब बिसाला ॥
चलत होहिं अति असुभ भयंकर।
बैठहिं गीध, उड़ाइ सिरन्ह पर ॥
भयउ कालबस काहु न माना।
कहेहि बजावहु जुद्ध निसाना ॥

इधर रावण को अपशकुन हो रहे हैं, उधर सीताजी को शुभ शकुन सान्त्वना दे रहे हैं—

जब अति भयउ बिरह उर दाहू।
फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥
सगुन बिचारि धरी मन धीरा।
अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा ॥

जैसे ही विभीषणने रावणकी मृत्युका रहस्य बतलाया, एक साथ सब अपशकुन होने लगे—

असुभ होन लागे तब नाना।
रोवहिं खर सृगाल बहु स्वाना ॥
बोलहिं खग जग आरति हेतू।
प्रगट भए नभ जहं-तहं केतू ॥
दस दिसि दाह होन अति लागा।
भयउ परब बिनु रबि उपरागा ॥
मन्दोदरि डर कंपति भारी।
प्रतिमा स्रवहिं नयन मग बारी ॥
प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ।
अति बात वह डोलती मही ॥
बरषहिं बलाहक रुधिर कच।
रज असुभ अति सक को कही ॥

और भगवान् रामचन्द्रजीके अयोध्या-प्रयाण करने पर—

सगुन होहिं सुन्दर चहुं पासा।
मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा॥

इधर राम-वियोगमें कृशतनु भरतजीको शुभ शकुन प्रभु-आगमनकी सूचना दे देते हैं।

सगुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुं फेर॥
कौसल्यादि मातु सब, मन अनन्द अस होइ।
आयउ प्रभु सिय अनुज युत, कहन चहत अब कोइ॥
भरत नयन भुज दच्छिन, फरकत बारहिं बार।
जानि सगुन मन हरष अति, लागे करन बिचार॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई।
मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई॥

और भगवान् रामचन्द्रजीके नगरमें प्रवेश करनेके उपरान्त भी शुभ शकुन होते रहे—

होहिं सगुन शुभ विविध विधि,
बाजहिं गगन निसान।
पुर नर-नारि सनाथ करि,
भवन चले भगवान॥

इस प्रकार प्रायः प्रत्येक प्रसंग पर मानसकारने शकुनादिका विचार किया है। अतः इनकी सहसा उपेक्षा नहीं कर देनी चाहिए। शकुनोंका कितना महत्त्व है, यह स्पष्ट रूपसे मानसकारने स्थान-स्थान पर बतला दिया है। शास्त्रानुरागियोंको इसी प्रकार शुभाशुभ शकुनोंसे अपने कर्त्तव्याकर्तव्यका निर्णय करना चाहिए।

अष्ट ग्रही योगका फल कब और कहाँ होगा ?

[लेखक—श्री पं० कालीचरण शर्मा ज्योतिर्विद्, सनावद म० प्र०]

अष्टग्रही योगका फल कब और कहां होगा इस सम्बन्धमें राशि और ग्रहतत्वोंके अनुसार यहां लिखनेमें आता है। मकर राशिका पूर्वार्द्ध भूभाग और उत्तरार्द्ध जलभाग है। सप्तग्रही योग तो पहलेसे ही रहेगा, परन्तु चन्द्रमाकी प्रवृत्ति माघ कृ० १३ शनिवार ता० ३ फरवरी ६२ के सायंकालसे आरम्भ होगी और अमावास्या रविवार के सायंकालीन समय तक रहेगा, तथा इसी राशिके पूर्वार्द्धमें शनि, मंगल साथ रहेंगे। मंगल उच्च एवं शनि स्वक्षेत्री होते हुए भी अस्तंगत होनेसे निर्बलावस्थामें है, अतएव भूभेदन होनेकी संभावना प्रबल नहीं कमजोर है। इसी राशि के उत्तरार्द्धमें अमावास्याके सायंकालसे प्रतिपदाके सायंकालीन ५।४६ तक मकर राशिके उत्तरार्द्ध जल भागमें चन्द्रमा र० बु० बृ० शु० श० रा० रहेंगे, मकर जल राशि चन्द्रमा जल तत्वप्रधान साथमें इसी तत्वका शुक्र भी सहयोगी बना हुआ है पर अस्त है। बुध पृथ्वीकारक होकर अस्त है, गुरु आकाशतत्व कारक अस्त है, इस .र पञ्चतत्वके अधिपति पृथ्वी (बुध) जल (चं० शु०) तेज (मंगल) वायु (शनि) आकाश (गुरु) अस्त हैं। निःसत्व हुए ग्रह पंचतत्वोंसे होने वाली महान् घटनाको कैसे निर्माण कर सकते हैं। संभव है छोटी घटना घट जाए, यह बात लिखना भी आवश्यक है—जल वर्षण, वायु प्रवाह, अथवा प्रचण्ड धूप पड़ने पर भी अनूप (जिस देशमें वृक्ष व नदियां अधिक हैं) मिश्र (जिस देशमें अनूप व जांगल मारवाड देशके दक्षिण जिले) और जांगल (जिस देशमें वर्षा स्वभावसे ही कम होती हो) ऐसे स्थलों पर देश भेदसे थोड़ी बहुत फसल आती ही है। उक्तंच यामलग्रन्थेषु—

धरायां वापिते वीजे सर्वोपद्रव वर्जितम्।
न रोहति तदापीदं वारियोगं विना क्वचित्॥
धरावारि समायोगे यदा बीजं पुरोहति।
विना तु तेजसा तत्र वृद्धिः स्यान्नतु तादृशी॥
पृथ्वीसलिलवन्हीनां संयोगो जायते यदि।
तदा सम्यक् न निष्पत्ति शोभने मारुतं विना॥

शुद्ध बीजको यदि तैयार की हुई शुद्ध भूमिमें बो दिया तो वह बिना जलके उगता नहीं, पृथ्वी जलके योगसे उद्गम हुआ बीज (अंकुर) भी तेज (सूर्यकी गरमी) बिना बढ़ नहीं सकता। कदाचित् पृथ्वी जब अग्निके योगसे

उद्गम हुआ अंकुर बढ़ भी जाए तो वायु (गुरु) के बिना निष्पत्ति सम्यक्से हो नहीं सकती।

ठीक इसी उदाहरणके अनुसार अष्टग्रही योग देखकर जो लोक अनेक सम्वाद पढ़कर भयभीत हो रहे हैं उन्हें इतने भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु समय भय-रहित भी नहीं कहा जा सकता, फलस्वरूप संभव है चन्द्रमा १५° बाद अमावास्याके सायंकालसे प्रतिपदाके सायंकाल तक कहीं न कहीं जल-उपप्लव योग करे वह भी ग्रहोंकी बलाबलावस्था देखते अति भयंकर नहीं। कारण (ग्रह शु० श० अस्त होकर भी आयुर्दाय देते ही हैं) थोड़ा बहुत फल संभव है। चन्द्रमाके संयोग कालमें ही पृथ्वीकी जगह जल, जलके स्थान पर स्थलकी भूमि बने!

किन्तु चन्द्र योगके साथ ही अष्टग्रही योगका फल हो, यह बात आधुनिक युगके विद्वान् भले ही विज्ञानके मैदानमें दौड़ लगायें, प्राचीन ज्योतिषियों ने इस प्रकार लिखा है:

तत्र देशे पुरे ग्रामे फलं भिन्नं प्रदृश्यते।

एक ही राशिके पुर शहर ग्राम कस्बे और देशमें भिन्न-भिन्न फल होता है, इसका कारण होरा शास्त्री जानते हैं, हां, ऐसे योगका पाक कालज्ञानके लिए लिखते हैं—

यद्राशि संस्थं तु यज्जातं तावद्भिर्मासकैः फलम्

जिस राशिकी जिस संख्यामें ग्रहयोग बने उस राशिकी सङ्ख्या प्रमाण महीनोंमें फल हो जाता है। अनुभवकी दृष्टिसे सम्वत् १६५६ में कार्तिक शुदी १३ से मार्गशीर्ष शुदी १ तक १८ दिन गोलयोग बना था। चन्द्र योगमें फल मानने वालोंके नाते मार्गशीर्षमें ही फल होना था परन्तु आषाढ़से कार्तिक तक भयानक दुर्भिक्ष पड़ चुका था। वृश्चिक राशि पर होनेसे ८ मासकी अवधिमें फल हुआ। दूसरा उदाहरण सम्वत् १९९० के माघमें बना तब भी मकर राशिमें होनेके नाते १० मासकी अवधिमें ही बिहार देशमें दुर्घटना घटी थी, इस प्रकार संवत् १९५६ व १९९० की घटनाके अनुसार यह फल माघकी ३० के पूर्व या ३० अमावास्यातक होना संभव है। इस वर्ष यह योगफल कैसे और कहां करेगा यह समय बतलाएगा।

'राजानौ रविशीतगू' सूर्य चन्द्रमा राजा माने गये हैं और सिंह व कर्क राशियां भी 'क्रूरः सौम्यः' सिंह क्रूर शौर्य प्रधान और कर्क सौम्य नरम स्वभाव वाली है। अतएव कर्क सिंह राशियां भी राज्य सत्ता शासनसे सम्बन्ध रखती हैं, यदि किसी पुरुषके या स्त्रीके सिंह या कर्क राशि १०वें स्थान पर जाकर सूर्य चन्द्रसे युक्त होकर मित्र ग्रहसे दृष्ट हो जाएं तो वह व्यक्ति प्रकाशमें आये बिना नहीं रहता। कदाचित् इन राशियों पर पाप ग्रहोंकी दृष्टि बाहुल्यता आ जाए अथवा पाप ग्रहोंके योगकी संख्या अधिक हो जाए अथवा ये दोनों ग्रह नीच राशि नीच नवांशमें आ जाएं तो उस व्यक्तिको शाशकीय टंटे बखेड़े या मुकदमेबाजीमें पड़कर अनेक प्रकारकी उलझनोंमें फंसकर दुःख भोगना ही पड़ता है।

वैसे ही कर्क सिंह राशियों पर जब-जब पापग्रहोंका दृष्टियोग या संयोग बना तब-तब ग्रहोंके बलाबलके अनुसार शाशकवर्गमें क्षोभ-युद्धाकांक्षा युद्धकी तय्यारियां हुई हैं।

उदाहरणार्थ सम्वत् १९७४ में कर्क राशि पर ५ ग्रह आये, मकर राशि (भारतकी राशि) को देखा उस कालमें कांग्रेसके आन्दोलनसे अंग्रेज सरकारने परेशान होकर स्वराज्य देनेका आश्वासन दिया और यही योग दूसरी बार सं० २००४ में कर्क राशि पर ५ ग्रह साथ हुए तब अंग्रेजी राज्यकी जड़ भारतसे उखड़ी और कांग्रेसके राज्यसे स्वर्ण सूर्योदय हुआ।

मकर राशिमें सप्तग्रही योग संवत् १९९० में बना। कर्क को देखा, कर्क राशि चीनकी है, मकर भारतकी है, परिणाम चीन भारतमें मैत्री थी वह खतम हुई। चीनने भारतके साथ जो व्यवहार किया वह दूसरी बार २०१८ के अष्टग्रहीके यह पहले भारतके साथ मैत्री भंग करके द्वेषी बन गया प्रत्यक्ष उदाहरण है।

इस वर्ष २०१८ की पौषी पूर्णिमा व माघ कृ० प्रतिपदा व द्वितीयाके पूर्व दल तक कर्क राशिस्थ पूर्ण चन्द्रको मंगलके अतिरिक्त सभी ग्रह पूर्ण दृष्टिसे देखेंगे, इस योगसे युद्धको प्रोत्साहन देने वाला पृथक् रहता है और माघी अमावास्याके दिन बनने वाले अष्टग्रहीयोगमें रव्यादि शन्यन्त केतु सहित आठ ग्रह एकत्र हैं, इन ग्रह गणोंका महासम्मेलन धीरे-धीरे बल पकड़ता हुआ भावी षड्ग्रही व सप्तग्रही योग कालके निर्माण होने तक मोटे रूपमें दृष्टिगोचर होगा और ठंडा लोहा गरम लोहेको काटता है इस प्रकार नरम

दल गरम दलको अपने वर्चस्वमें ले आएगा।

हमारी बुद्धिसे तो यही निष्कर्ष निकलता है कर्क-मकर राशियोंके अधिकारमें रहने वाले मनुष्य और देश ही इस संघर्षके कुपरिणाम सुपरिणाम भोगनेके अधिकारी बनेंगे। या इस समय ऐसे वातावरणोंका निर्माण होगा या बीजारोपण होगा जो आगे चलकर इन देशोंकी राशियों पर अपना वर्चस्व दिखाएगा।

ग्रहयोगोंका फल सदा एक समान नहीं होता। प्रत्यक्षमें एक नाम राशि वाले देश शहर कस्बे व मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकारसे अनुभव करते देखे जाते हैं, इसका कारण होरा शास्त्री जानते हैं।

यहां पर एक योग फलित ज्योतिषका सत्य होकर भी भिन्न-भिन्न रूपसे सत्य सिद्ध होता देखता हूँ उसको दिखाता हूँ—

पञ्चमस्थो यदा शुक्रः भौमयुक्तोऽवलोकितः।
तद्वर्षे विजानीयाद् गर्भे पुत्रसमुद्भवः॥

वर्ष कुण्डलीमें पञ्चमस्थ शुक्रको मंगल देखे तो उस वर्ष पुत्रोत्पत्ति निश्चित होती है तदपि अनुभव इस प्रकार है—

१. यदि पहले वर्ष गर्भ स्थिति रही हो तो इसी वर्ष पुत्र जन्म लेता है।

२. इसी वर्ष गर्भ स्थिति रहकर इसी वर्ष पुत्र जन्म होता है।

३. कभी-कभी जिस वर्ष योग बने उस वर्ष गर्भ रहकर उससे आगामी वर्षमें पुत्रोत्पत्ति देखी गई है।

४. कदाचित् शुक्र (वीर्यकारक) निर्बल हुआ तो कन्या भी जन्म लेती है। इसी प्रकार षड्ग्रही-सप्तग्रही व अष्टग्रहीके योग राशि स्थिति और बलाबलके प्रमाणानुसार जिस राशि पर योग बने या जिस राशिको देखे उस स्थल ऊपर शुभ-अशुभ घटना घटती है। इतिदिक। मध्यप्रदेशमें आनेवाली फसल जुवारकी अच्छी दीखती है एवं शारदीय धान्य सुरक्षित नहीं रह सकेंगे।

अष्टग्रही योग-१९६२

[लेखक—श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिषाचार्य, लुधियाना]

दिनाङ्क ३ फरवरी १९६२ ईस्वीको सायं ५ बजकर ४१ मिनट पर चन्द्रमाके मकर राशिमें प्रवेश करने पर अष्टग्रही योग बनेगा, जो ५ फरवरीको शामके ५ बजकर १८ मिनट तक रहेगा, यह कर्क लग्नमें शुरू होकर कर्क लग्नमें ही समाप्त होगा।

मेरे विचारमें अष्टग्रही योगको केवल दो दिनके लिये ही सीमित कर देना ज्योतिष विद्याके अनुसार उचित नहीं। क्योंकि चन्द्रमाके साथ आने पर जो महानता अष्टग्रहीको प्राप्त होगी वही विशेषता बिना चन्द्रमाके सप्तग्रही योगको प्राप्त है। सप्तग्रही योग २४ जनवरीकी सायंसे शुरू होकर ६ फरवरी की सायं तक रहेगा, यह भी कर्क लग्नमें ही शुरू होगा और कर्क लग्नमें ही समाप्त होगा। इस प्रकार अष्टग्रहीका प्रभाव न केवल ३ फरवरीकी सायंसे ५ फरवरी की सायं तक ही होगा अपितु २४ जनवरीकी सायंसे लेकर ६ फरवरीकी सायं तक होगा।

जहां तक सप्तग्रही योगका सम्बन्ध है पहले भी देखनेमें आया है कि यह सदा ही नेष्ट प्रभाव करता रहा है। १५ जनवरी १९३४ को भी सप्तग्रही योग ही था, जिसके प्रभावसे बिहार, बंगाल तथा नेपाल में भूकम्पसे भयानक विनाश हुआ था, और जहां तक अष्टग्रही योगका सम्बन्ध है यह योग बहुत कम सुननेमें आया है, यह महाभारतके समयमें भी आया था और इस योगसे पहले विज्ञान अपने उच्चतम शिखर पर था और आजके राकेटोंकी अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली राकेट अन्तरिक्षमें फेंके गये थे, उनमें से भीम द्वारा हाथियोंका अन्तरिक्षमें भेजे जानेका विशेष रूपसे उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त अग्निवाण तथा वारुणास्त्र भी विशेष राकेट ही थे जिनके द्वारा संसारके किसी भी भागमें आग लगाई जा सकती थी और ऐसे ही राकेटोंके प्रयोगसे पहाड़ों, मैदानों तथा रेगिस्तानोंमें धरती से इच्छापूर्वक पानी निकाला जाता था और वह भी सदा

के लिये। पानीके यह झरने आज भी भारतमें अधिकतर बाणगंगाके नामसे प्रसिद्ध हैं। पंजाबमें चण्डीगढ़ के निकट पंजौरके स्थान पर पानीके झरने भी उसी समयके पाण्डवों द्वारा बनाये हुए हैं। न केवल यह कि इन राकेटों द्वारा अग्नि या जल ही प्राप्त किया जाता था, इन काप्रयोग केवल युद्धके उद्देश्योंके लिये किया गया। महाभारत तथा रामायणका इतिहास इस बातका साक्षी है कि उस समयमें ऐटमी शक्तिसे मानव भी पैदा किये जा सकते थे, रामायण में कुशका जन्म और महाभारतमें कर्णका जन्म इस बातके प्रमाण थे। परन्तु महाभारतके अष्टग्रही योगके पश्चात् इस विज्ञानका सर्वनाश हुआ और इसका इतना विनाश हुआ कि यह सब एक स्वप्न बनकर रह गया और टैलीविजन द्वारा देखा तथा सुना गया युद्धका संदेश गीताके रूपमें आज भी बिराजमान है जिसके सामने संसार आज भी श्रद्धासे सिर झुकाता है। परन्तु आज हम इतने निर्बल हो गये कि कर्ण या कुशके जन्मकी घटनाओंको हम सभ्यता या समाजके पतन या इस भागको मिथ्या भी कहने लगे। यह कभी नहीं सोचा कि यदि आज गायको टीका लगाकर बच्चा जन्म ले सकता है तो उस समय कुशका जन्म कुशासे और कर्णका जन्म सूर्यकी किरणोंसे क्यों नहीं हो सकता था?

अब यह योग ५०६२ वर्षके पश्चात् आ रहा है, क्योंकि श्रीकृष्णको परमधाम पधारे ५०६२ वर्ष हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त यह योग कुछ समयके लिये लगभग १००० वर्ष पहले (११८६ ईस्वी में) भी बना था, तब भी भारत पर आक्रमणकारियोंसे भारी हानि हुई थी, यह योग कन्या राशिमें बना था और असौज मासमें था उस समय भारत पर मुहम्मद गौरी तथा कुतुबुद्दीनके आक्रमण शुरू हुए थे और 'असौज बलिया' के नामसे भारी वर्षा तथा नदियोंमें बाढ़से भी भारी हानि हुई थी।

अब भी यदि ध्यानसे देखा जावे तो भारतमें तो नहीं परन्तु संसारमें महाभारतका इतिहास फिर अपनेको दोहराता दिखाई पड़ रहा है। उस समय संसार दो धड़ोंमें बंटा हुआ था जो कौरवों तथा पांडवोंके नामसे विख्यात थे और लगभग सभी तटस्थ देश भी एक एक करके इन धड़ोंमें सम्मिलित हो गये थे। भले ही विजय पांडवोंने प्राप्त की परन्तु इतना सर्वनाश हुआ कि वह उच्चतम शिखरका विज्ञान अपनी मृत्यु आप मर गया। आज भी अष्टग्रही योग आने से पहले एक बार फिर उसी प्रकार परमाणु शक्तिका प्रयोग तथा प्रदर्शन किया जा रहा है। वैसे ही राकेट तथा मानव अन्तरिक्षमें भेजे जा रहे हैं जैसे उस युगमें थे। आज भी संसार दो धड़ोंमें बंट चुका है, एक पश्चिमी शक्तियोंका धड़ा है और दूसरी ओर कम्युनिस्टोंका और तटस्थ लोग भरसक प्रयत्न कर रहे हैं कि यह संकट किसी न किसी भांति टल जावे, क्या यह सचमुच टल सकेगा? यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न है आज हमारे सामने।

अष्टग्रही योगका फल बहुत कम ग्रन्थोंमें मिलता है। बहुत से ग्रन्थों में गोलयोग (छः ग्रह), बिना शुक्रके गोल योग, सप्तग्रही योग आदिका उल्लेख तो बहुत स्थानों पर किया गया है, परन्तु अष्टग्रही योगका नहीं। मैंने पिछले आठ वर्षसे भारतके प्रमुख स्थानोंकी यात्रा भी इसी उद्देश्य से की और छोटे तथा बड़े, हस्तलिखित तथा अन्य ग्रन्थों का निरीक्षण किया, परन्तु चण्डलेश्वर नामक ग्रन्थके अतिरिक्त कहीं स्पष्ट रूपसे फलादेश नहीं मिला। इस ग्रन्थ में भी जो लिखा है उसके अनुसार इससे युद्ध, भूकम्प, बर्फबारी, ओले, तूफान, भारी वर्षा, भीषण शरदी, महामारी, भीषण रोग, जलसे हानि, नदियोंमें जल प्रवाह आदिसे काफी विनाश कहा गया है।

कुछ ग्रन्थोंके अनुसार इन ग्रहोंका मिलाप केवल १५ अंशके अन्दर कहा गया है, यदि इसे स्वीकार किया जाये तो केवल सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा केतु ही २ फरवरी को प्रभाव करेंगे और ५ फरवरीको चन्द्रमा भी निकट आ जायेगा।

सरकारके मौसम विभाग (Meteriological Department) के बारेमें तो मुझे ज्ञान नहीं कि वह इतने समय पहले भविष्यवाणी कर सके या नहीं, परन्तु ज्योतिष विद्याके अनुसार यह एक तथ्य है कि यदि मंगल सूर्यसे पीछे हो और बृहस्पति शुक्र तथा चन्द्रमा निकटतर हों तो वह दिन उस ऋतुका अधिकतम ठण्डा दिन होता है। अर्थात् वसन्त ऋतु हो तो वसन्तका, ग्रीष्म हो तो ग्रीष्म ऋतुका, शरद ऋतु हो तो शरद ऋतुका, आदि आदि। इसलिये अन्य प्रभावोंके साथ-साथ यह भविष्यवाणी पूरे विश्वास और दृढ़ निश्चयसे की जा सकती है कि ३ फरवरीसे ५

फरवरी १९६२ तक भारी वर्षा होगी, भीषण सर्दी होगी, और इस ऋतुका न्यूनतम तापमान इसी दिन होगा, आंधी तथा तूफानसे भी हानि होगी, पेड़ोंके टूटने और टीनकी छतोंके उड़नेका पूरा-पूरा योग है।

अष्टग्रही योग मकर राशिमें बन रहा है जिसे अंग्रेजीमें Tropic of Capricorn कहते हैं। परन्तु यह कर्क लग्नमें शुरू हो रहा है इसलिये इसका अधिक प्रभाव कर्क राशि पर होगा और कर्क रेखाके क्षेत्रों पर इसका नेष्ट प्रभाव अधिक होगा जिसे Tropic of Cancer कहते हैं। इस अष्टग्रही योगसे प्रलय या महाप्रलयकी भविष्य-वाणी करना यथार्थ नहीं, क्योंकि पृथ्वीकी आयुके बारेमें जो कहा गया है वह इस प्रकार है कि कलियुगके कुल ४,३२,००० वर्ष हैं जिनमेंसे अभी तक केवल ५०६२ वर्ष ही व्यतीत हुए हैं और लगभग चार लाख सताईस हजार वर्ष बाकी हैं, इसलिये सर्वनाश तो न होगा और अष्टग्रही योगके पश्चात् भी संसारका अस्तित्व इसी प्रकार बना रहेगा।

अष्टग्रही योगका प्रभाव निम्न देशों पर ही अधिक होनेकी आशा है—अरब देश, अफ्रीकी देशोंका उत्तरी भाग, क्यूबा, मेक्सिको, जंजीरा हवाई, हांगकांग, ल्हासासे सानपो तकका क्षेत्र, कलकत्ताके निकट पुरीका तटवर्ती क्षेत्र, देवका इलाका, बिहार, गुजरातका कुछ भाग, अलजीरिया, मोरक्कोका काफी भाग, बर्माका कुछ भाग, कैलेफोर्निया, नैपाल और भूटान आदि। इससे प्रगट होता है कि उत्तरी भारतमें काश्मीर, पंजाब, राजस्थान, हिमाचलप्रदेश, उत्तर-प्रदेश आदिमें भीषण सर्दीके अतिरिक्त और किसी प्रकारसे हानिकी कोई संभावना नहीं। यद्यपि पुरीके निकट तटवर्ती क्षेत्रमें कुछ अदल-बदलकी आशा है, या तो समुद्र स्थान छोड़ देगा या कुछ तटवर्ती क्षेत्र हड़प कर लेगा।

युद्ध की आशंका कम है, परन्तु इसमें मंगल उच्चका है और शनि अपने घरका स्वामी है तथा केतु साथमें है इसलिये युद्धको भी दृष्टिसे ओझल नहीं किया जा सकता। जहां तक भारतका सम्बन्ध है उसे पाकिस्तानकी ओरसे अधिक भय नहीं होगा, अपितु चीनकी ओरसे आक्रमणकी सम्भावना है। और जहां तक विश्व-युद्धका सम्बन्ध है इसका निर्णय १६ जनवरी और २४ जुलाईके मध्य होने वाली घटनायें ही करेंगी। अष्टग्रहीका नेष्ट प्रभाव भी इस समयसे ही शुरू होगा फिर भी अधिक सम्भावना भूकम्प और प्राकृतिक विपत्तियोंकी है। सरकारोंमें परिवर्तन, प्रजामें अशान्ति, यातायातके साधन अस्तव्यस्त हो जावेंगे। इससे पहले भी जब अष्टग्रही योग बना था तो प्रजाको इधर-उधर भागना तथा परेशान होना पड़ा था और महाभारतमें भी विनाशका सामना करना पड़ा था, इसलिये आज भी अष्टग्रही योगको बिल्कुल ही दृष्टि ओझल कर देना उचित तथा यथार्थ नहीं।

भारतके आगामी चुनाव भी फरवरीके अन्तमें करनेकी घोषणा की गई है परन्तु अष्टग्रही योगके प्रभावसे यह चुनाव स्थगित हो जानेकी भारी सम्भावना है।

इस अष्टग्रही योगका फल हमारे कुछ भारतीय नेताओं के लिये भी शुभ नहीं, यह ग्रह योग जहांसे गोल योग बना-कर अपना प्रभाव शुरू करता है अर्थात् १६ जनवरीसे ही न केवल भारतीय नेताओंके लिये अपितु कर्क रेखा तथा मकर रेखाके देशोंके नेताओंके लिये भी नेष्ट रहेगा।

वैसे तो बृहस्पति नीच राशिमें अच्छा नहीं कहा गया और यह हर १२ वर्षके पश्चात् इस राशिमें आता है, परन्तु इस बार शनि साथ है जो इसके नेष्ट फलको अधिक करता है, एक बात जिसका उल्लेख करना आवश्यक है वह यह है कि इस समयमें बृहस्पति पृथ्वीके निकटतर रहेगा और मंगल जो युद्धके देवता कहलाते हैं (God of War) पृथ्वीसे दूर रहता है। शनि भी पृथ्वीसे काफी निकट ही रहेगा, इससे चोरी, लूटमार, हत्याकी घटनायें, रिश्वत, भ्रष्टाचार आदिमें वृद्धि होती है। व्यक्तिगत रूपसे यह योग वृष, मिथुन, कर्क, तुला, मकर और कुम्भ राशि वालोंके लिये नेष्ट रहेगा। जिन व्यक्तियोंका जन्म श्रवण तथा धनिष्ठा नक्षत्रमें हुआ हो उनके लिए यह सबसे अधिक नेष्ट प्रभाव करेगा, अन्य राशि वालोंके लिये कम, यद्यपि सर्दी-वर्षा आदिसे हानि अन्य राशि वालोंको भी होगी।

युद्ध इस योगके पहले या पीछे भी हो सकता है। यदि यह शुरू हुआ तो जैसा आम लोगोंका विचार है कि यह कुछ दिनोंमें ही समाप्त हो जायेगा, ऐसा नहीं होगा, बल्कि

दिसम्बर १९६३ तक बढ़ता ही जायेगा और अप्रैल १९६५ तक इसका अन्त न होगा, यदि १९६२ तक युद्ध न हुआ तो इसके आगे इस योगके प्रभावसे युद्धकी आशंका न रहेगी।

इस ग्रह योगका अधिक प्रभाव विदेशों पर होगा और इसी दिन अर्थात् ५ फरवरी १९६२ को सूर्यग्रहण भी होगा—जो विदेशोंमें ही दिखाई देगा। ब्रिटेनके शाही खानदान, जापान और ईरानके शासकोंके लिये रूस, जर्मनी, पोलैण्ड, उत्तरी अफ्रीका, लाओसके लिये यह काफी नेष्ट प्रभाव करेगा, इसके विपरीत अमरीका के प्रधान श्री केनेडीके लिये यह वर्ष काफी अच्छा सिद्ध होगा। भारत पर आक्रमणका भय पाकिस्तानसे नहीं अपितु पाकिस्तानको यदि कोई देश प्रभावित करने वाला है तो वह अफगानिस्तान है, पाकिस्तान और अफगानिस्तानके सम्बन्ध अत्यन्त और सीमासे अधिक खराब हो जायेंगे, इस प्रकार यह मोर्चा भी पश्चिमी देशोंके ध्यानका केन्द्र बनेगा। आश्चर्य न होगा यदि इन देशोंका प्रभाव दूसरे देशोंको भी अपनी लपेटमें ले ले। भारत को अधिक भय इसकी उत्तरी-पूर्वी सीमासे है जहां तक इसको अपना कुछ क्षेत्र भी हाथसे जाते रहनेका योग है। इसलिये भारतको चीनकी आक्रमणकारी नीतिका तथा विध्वंसक कार्योंका मुकाबला करनेके लिये उचित उपाय तथा रक्षाका ध्यान आवश्यक होगा।

जनताको व्यक्तिगत रूपसे तथा संस्थाओंको संगठित रूपसे यथाशक्ति रुद्रयज्ञ, नवग्रह, चण्डीयज्ञ, नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी, अखंड नाम संकीर्तन, गायत्री जाप, शान्ति पाठ तथा प्रार्थना आदि अवश्य करनी चाहिए। ये शुभ कर्म शान्ति तथा कल्याणके मार्ग हैं, इनको अपनाने से अवश्य ही सर्वशक्तिमान् प्रभु कल्याण तथा रक्षा करेंगे।

—

ज्योतिषका प्रारम्भिक शिक्षण—

अनुभव सिद्ध योग

[लेखक—श्री पं० परमानन्द ज्योतिषज्ञ, फूलिया कलाँ (राजस्थान)]

ज्योतिष शास्त्र अन्य शास्त्रोंकी अपेक्षा सर्वोपयोगी एवं प्रत्यक्ष है। सूर्य-चन्द्र तारोंकी नियमयुक्त गति-विधिको देखकर किस मानवमें आश्चर्य एवं जिज्ञासाकी तरंगें नहीं उठती। क्योंकि चन्द्र ह्रास-विकास, दिवारात्री, सूर्य-ग्रहण, चन्द्र-ग्रहण तथा ग्रहोंके उदयास्त आदिका निश्चित समय पर होना किसी कदर कम महत्वकी घटनायें नहीं हैं। ग्रहोंके उदयास्त तथा गतिविधिका प्राणी-मात्र पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। इन बातोंकी गति-विधिका विचार करना तथा उनके परिणामका निरूपण करना ही ज्योतिषका विषय है। ज्योतिष विषय मुख्यतः तीन (सिद्धांत, संहिता एवं होरा) भागोंमें विभक्त है। इन्हीं तीन अंगों पर ज्योतिष-शास्त्र अधिष्ठित है। इनमें होरा-शास्त्रके अंतर्गत, प्राच्य ऋषि-मुनियोंके अहर्निश परिश्रम साध्य जो-जो योगफलित कसौटी पर सही एवं खरे उतरे हैं वे पाठकोंके लाभार्थ सेवार्पण हैं।

धनवान् योग

(१) धन स्थानका स्वामी जिस जगह अधिष्ठित हो वहां से द्वितीय स्थानका स्वामी एवं लग्नेश यदि केन्द्रमें आ जाय तो धनयोग। (२) स्वगृही ग्रह यदि शुभ स्थानोंमें चार जगह अवस्थित हो तो धनयोग। (३) लाभेश तथा धनेश का योग केन्द्र तथा त्रिकोणमें हो तो धनयोग। (४) लाभ स्थानमें शनि गया हो तथा बुध कहीं भी हो किन्तु कर्क राशिका हो तो धनयोग। (५) शुक्र, शनि, मंगल एवं राहुका कन्या राशिमें जाना धनयोग। (६) धनस्थानमें बृहस्पति होवे एवं वह शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो धन योग। (७) लाभ स्थानमें लग्नेश गया हो तथा धनमें लाभेश एवं लग्नेश हो तो धन योग। (८) धन स्थानमें यदि धनु राशि हो तथा उसमें बुध, गुरु एवं शुक्रमें से दो ग्रह अवस्थित हो तो धनयोग। (९) धन स्थानमें शुभ ग्रह गये हों तथा साथ ही उन शुभ ग्रहोंके साथ लग्नेश भी हो तो धनयोग।

(१०) पंचम स्थानमें अपनी राशिका शनि गया हो तथा लाभ स्थानमें अपनी राशिका बुध हो या अपनी राशिका नहीं भी हो तो भी धनयोग। (११) दशम स्थानमें लग्नेश हो एवं सूर्य लग्नमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो या युक्त हो करके भी गया हो तो धनयोग। (१२) लाभेश केन्द्र या त्रिकोण-गत हो, साथमें बृहस्पति भी गया हो तो धनयोग।

उपरोक्त योगोंमें जो ग्रह धन स्थानमें स्थित या धन स्थान से सम्बन्ध रखते हैं वे अपनी दशा अन्तर्दशामें धन-योगको प्रबल बनाते हैं।

स्त्रीभाव योग

(१) लाभ स्थानमें दो सौम्यग्रह हों तो द्विभार्यायोग। (२) बृहस्पति स्वनवांशका बली हो करके हो तो द्विभार्यायोग। (३) आठवें भावमें शनि हो तथा सातवें स्थानमें मंगल गया हो तो द्विभार्यायोग। (४) सातवें स्थानमें बहुपापी ग्रहोंसे द्विभार्यायोग। (५) लग्नसे अष्टममें लग्नेश गया हो तथा सातवें भौम-चन्द्र हो एवं इनसे सप्तम शुक्र गत हो तो द्विभार्यायोग। (६) सातवें स्थानके स्वामीसे तृतीय स्थानमें बलवान् चन्द्रमा जानेसे द्विभार्यायोग। पांचवें या नौवें स्थानोंमें बलवान् सप्तमेश एवं लाभेश हो या एक दूसरेको पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध करते हों तो द्विभार्यायोग। (८) बलवान् शुक्र-चन्द्र एक ही स्थान पर स्थित हो तो द्विभार्यायोग। (९) बुध यदि सातवें स्थित हों तथा शुभग्रहों से दृष्ट हो तो द्विभार्यायोग होता है।

सातवें स्थान पर जितने ग्रह उच्च एवं सौम्य हों तो उतनी ही स्त्रियोंसे प्रायः विवाह होता है। (२) यदि सातवें कोई ग्रह गया हो तथा शुक्रके साथ जितने भी ग्रह जाय उतनी ही स्त्रीप्राप्तिकारक योग बनता है। (३) सातवें स्थान पर जितने ग्रह शुभत्व लिये दृष्टि सम्बन्ध करते हों उतनी ही स्त्रियां जातकके होती हैं। (४) सप्तम स्थान में यदि बलवान् होकर मंगल, चन्द्रमा, सूर्य, क्रमशः जाय तो सात, दश एवं छः स्त्रियोंसे सम्बन्ध होकर रहता है।

उपरोक्त योगोंके साथ विवाह वर्ष ज्ञान अधोलिखित-नियमसे करेंगे। (१) शुक्रसे अथवा चन्द्रमासे सप्तम स्थित जो राशि संख्या हो उसके तुल्य वर्षमें विवाह होता है। अथवा उसमें १२ की संख्या और मिलाकर जो संख्या होवे वह विवाह वर्ष संख्या होती है। कभी-कभी वह वर्ष संख्या नहीं मिल पाती है तो उस समय चन्द्रमा से या शुक्रसे जो ग्रह सप्तम हो या पूर्ण दृष्टि देता हो तो उस ग्रहके वर्षों या उन वर्षोंमें १२ युक्त वर्षों तुल्य अवश्य ही विवाह हो जाया करता है। (२) अष्टम, सप्तम एवं लग्न के तीनों भावोंके स्वामियोंके नवमांश संख्याको चारसे गुणा करने पर भी विवाह वर्ष संख्या निकल जाती है। अतः सभी ओरसे मिलाकर विवाह वर्ष एवं भार्या संख्या नियत्त कीजिये।

वृत्ति निर्णय ज्ञान

वृत्ति निर्णयमें यह देखना आवश्यक हो जाता है कि लग्न, चन्द्रमा एवं सूर्यमें से जो अधिक बलवान् हो उससे दशम स्थानके नवांशाधिपतिके सदृश ही वृत्ति निर्णय की जाय। अतः इस सम्बन्धमें हमें जो शास्त्रीय अनुभव हुआ वह नीचे दिया जाता है।

सूर्य—यदि नवांश राशिका स्वामी रवि हो तो वैद्य, डाक्टर, कम्पाऊण्डर, मेडिकल स्टोर विक्रेता, सोना-मोती, ऊनी वस्त्र, गायन वाद्यादि यंत्र विक्रेता, अतर-तैल विक्रेता, घी, गुड़ आदि षट्रसोंके व्यापारसे, घास-लकड़ी विक्रेता, हास्यपूर्ण मनोविनोदीय खेलों, समस्त प्रकारके अनाज विक्रेता आदि चीजोंसे जीविकोपार्जन करने वाला जातक होता है।

चन्द्रमा—यदि उक्त नवांशाधिपति चन्द्रमा हो तो शंख, मोती, प्रवाल, पत्थर विक्रेता, कृषि कर्म, बागवानी, मिट्टी खिलौने, सीमेण्ट, चूना, बालूकी कारीगरी, तैल, शराब, वस्त्रादि की दुकान विक्रेता, पानीसे प्राप्त वस्तुओंका विक्रेता, बांध निर्माण कार्य ठेकेदारी, मछलीकी ठेकेदारी, राज्य कार्यमें व्यस्त क्लर्कीकल जोब, फ्रूट सेलर्स आदि चीजोंसे जीविकोपार्जन करने वाली वृत्ति का जातक होता है।

मंगल—यदि उक्त नवांशाधिपति मंगल हो तो हिंगलू, सुरमा, मैनसिलादि विक्रेता, तोप, तलवार, बन्दूकादि सैनिक प्रवृत्ति अन्य पदार्थ विक्रेता, बढ़ईगिरी, स्वर्णकार, सुगन्ध-क्रय जन्य वृत्ति, बिजली कारखाना सम्बन्धित कार्य व्यवसाय नौकरी, तत्सम्बन्धित पदार्थ विक्रेता, मशीनरी आदि चीजों का विक्रेता, वाद-विवादादि कार्य, स्वावलम्बन कार्यकर्ता, सिपाही तथा चौकसी रखवाला, पाक-शास्त्रविद्या जानकार

एवं कुशल पाकीय वृत्तिकर्त्ता, मांस विक्रेता, मोटर, यान, रेलगाड़ी चालक, लोहेके कारखानेमें काम करने वाला कारीगर, भयंकर डाकू प्रवृत्तिसे जीविकोपार्जन करने वाला जेबकटर, गुह्यीय सामग्री नशीले पदार्थ विक्रेता (अफीम, भांग, शराबका गुप्त व्यापार करनेवाला) पागल-सी वृत्ति रखकर समयानुसार उदरपूर्ति साधनसे लाभान्वित होता है।

बुध—यदि बुध नवमांशाधिपति हो तो गणित कार्य-कर्त्ता, कर्ल्क, लेखक, कवि, शिक्षक, अच्छी चित्रकारी करने वाला, ज्योतिष विद्याका काम करने वाला, यंत्र निर्माणकर्त्ता, सम्पादक, संशोधक, अनुवादादि या किसीकी टीका करनेवाला, वकालात कर्म कर्त्ता, सुगन्धित पदार्थ विक्रेता, कागजी खिलोने बनानेवाला, प्रचारक एवं उपदेशक, शास्त्र वेदान्त-विद्याका ज्ञाता एवं जीविकासाधनीय वृत्तिकारक, पुरोहिताई कार्य, कामदारी कार्य, पूजापाठादि कर्म, पत्थर एवं नक्कासी कर्म करके मूर्ति गढ़ना तथा बेचना, व्याज वृत्तिकर्त्ता, उच्च न्यायाधीशीय क्लर्क, बुकसेलर, प्रोफेसर, लेक्चरार, स्टेनो टाईपिस्ट, बुद्धि सामर्थ्यतासे व्यवस्था आदि वृत्ति करने वाला होता है।

गुरु—यदि गुरु नवांशाधिपति हो तो शास्त्रीय संस्कृत पठन-पाठनकर्त्ता, व्याकरणाचार्य, कालेज आदिके प्रिंसिपल, प्रधानाध्यापक, मन्दिर-मठ सेवाकर्त्ता, अनुष्ठानकर्त्ता, धर्मोपदेशक, वैरिस्टर, वकील, न्यायाधीश, स्वर्ण, लवण, चांदी धातु आदिका खनिज व्यापारी, घोड़े बिक्रेता, साईकिल मोटर विक्रेता, कथा-वार्त्ता कीर्तनादि कार्यकर्त्ता, तीर्थ स्थलोंके ऊपर पिंडादिक क्रिया कराने वाला, सन्यासी, गजेटेड आफिसर, होटलादिसे जीविकोपार्जन करनेवाला जातक होता है।

शुक्र—यदि उक्त नवांशाधिपति शुक्र हो तो चौपाये विक्रेता, गाय-बैल-भैंस विक्रेता, दही-दूध विक्रेता, अलंकारिक वस्त्र विक्रेता, सुहाग स्टोर—जनरल स्टोर विक्रेता, मोती-पत्रादि पत्थर विक्रेता, सिनेमा, नाटकादिमें पार्टकर्त्ता, स्टूडियोमें एक्टर कार्य करने वाला, शराब विक्रेता, मोटर, ट्रैक्टर, एन्जिन विक्रेता, स्त्रियोंको उड़ाकर उनका व्यापार करने वाला, सुगन्धित पदार्थ विक्रेता, नाज, किराना व्यापारी, अलंकारादिक आभूषण एवं तद् जन्य वस्तुओंका व्यापार, कृषि सम्बन्धित यंत्रादि सामान विक्रेता आदि वृत्ति करने वाला होता है।

शनि—यदि उक्त नवांशाधिपति शनि हो तो जिनको रास्ते चलना पड़े (पोस्टमैन, चपरासी, हलकारा) कर्म करने वाला, चोरी, नौकरी, हिंसादिसे पैसा प्राप्तकर्त्ता, प्रेसमें काम करने वाला, मन्दिरादि धर्म स्थानोंमें नौकरीकर्त्ता, कृषि-बागवानी कर्मकर्त्ता, सड़क निर्माण, बिल्डिंग-निर्माण ठेकेदारी कर्म, लकड़ी विक्रेता, लकड़ी निर्मित वस्तुओंका व्यापारी, कुलिगिरी सामान लादने लेजाने वाला, जहाज कार्य करने वाला, शासन, युद्ध विभागीय नौकरी कर्त्ता कमीशन कम्पनी कार्यकर्त्ता, किरानेका व्यापारी, ईश्वरोपास-नादि मन्दिर कर्मकर्त्ता, सम्वाद पहुँचाने वाला, खेती कार्यमें साधारण मजदूरी करने वाला, सिलाई मास्टरी, ताड़नादि त्रास देने वाली जगह नौकरी कर्त्ता, एवं साधारण घरेलू धन्धे पर रहना, भिक्षावृत्ति द्वारा जीविको-पार्जन करने वाली वृत्तिकर्त्ता जातक होता है।

—

शाक्त धर्मानुयायियोंके लिए तीन अपूर्व प्रकाशन

वार्षिक मूल्य ५॥)] चण्डी [नमूनेकी प्रति ।)

गत बीस वर्षोंसे प्रकाशित होने वाली अपने ढंगकी इस मासिक पत्रिकामें तंत्रशास्त्रोक्त शक्ति-उपासना पर प्रकाश डालने वाले प्रामाणिक लेख तथा श्रीजगदम्बाकी भक्तिसे ओत-प्रोत रचनाएं प्रकाशित होती हैं।

साधनमाला— इस पुस्तकमालाके अन्तर्गत शाक्तो-पयोगी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। नमूनेके लिए 'मंत्रसिद्धिका उपाय' मूल्य १) मंगाकर देखें।

सिद्धस्तोत्रमाला—इस पुस्तकमालाके अन्तर्गत तांत्रिक स्तोत्र-संग्रह प्रकाशित होते हैं नमूनेके लिए 'श्रीबालास्तव-मंजरी' मंगावाकर देखें। मूल्य ।)

पता—

कल्याण मन्दिर, कटरा, प्रयाग

कमलार्चन द्वारा—

धनप्राप्तिका अद्भुत उपाय

[लेखक—श्री पं० बाबूलाल मिश्र, डीग, भरतपुर]

[लेखकने उच्चकोटिके तन्त्र-मर्मज्ञ महापुरुषोंकी सेवासे कुछ अनुभव प्राप्त किया है। 'श्रीविद्यार्णवतन्त्र'में से भगवती कमला (लक्ष्मी) को प्रसन्न करनेकी सद्यःफलप्रद प्रार्थनाका यह प्रयोग विद्वान् लेखकने पाठकोंके लाभार्थ यहां दिया है। विधिपूर्वक नियमित प्रार्थनासे दारिद्र्य निवृत्ति निश्चित है। लेखककी भाषा जैसी थी वैसी ही हमने रक्खी है; विशेष साहित्यिक-भाषा सम्बन्धी सुधार नहीं किया। —सम्पादक]

आज जबकि प्राणिमात्र देश, काल, पात्र, वस्तु, सिद्धि, साधन-साधक आदि सभी भौतिकवादकी चकाचौंध में निर्लक्ष्य मृतप्रायसे होकर उत्तरोत्तर अवनतिके गर्त्त में ग्रसित हो रहे हैं। आयसे अधिक आये दिन व्यय का चिट्ठा तैयार रहता है। अनिवार्य न होते हुए भी परिस्थितिवश बाध्य होकर अनिवार्य बनाना ही पड़ता है। और आये दिन प्रत्येक बाजारमें कर्जदाता ही कर्जदाता दृष्टिगोचर होने लगे। ईमानदारीसे कमाई करने पर बड़े परिश्रमसे अन्न-वस्त्र मात्रकी पूर्ति ही हुई। बेईमानीके सहारे कुछ दिन चौका पंजा उड़ानेके पश्चात् एक दिन ढोलकी पोल खुल ही गई। अन्तिम आशाको पूरी करनेके लिए किसी सिद्ध बाबाकी तलाश प्रारम्भ की और मनमें यह धारणा की कि अब लखपति होनेमें विलम्ब नहीं। किन्तु, बाबा महाराजको चंगुलमें फांसा कैसे जाय ? प्रशंसा तो बहुत सुनते हैं, चलो नये पांच पैसेकी मूली लेकर भेंट रख बाबाके समक्ष बात करनेका अवसर निकालें। बस, बाबा महाराजके यहां पहुँच बड़ी भारी भेंट मूलियों को सामने रख सिद्ध आसनसे लखपतियोंकी मुद्रामें उसी ढंग सांचेमें बैठकर वेदान्त विषय पर गृहस्थकी नश्वरता, उससे वैराग्य, त्यागकी भावनाका पूर्ण समर्थन आजके प्रथम मिलनका श्रीगणेश रहा। कल समयसे पूर्व बच्चोंको भी साथमें लेकर बड़ी बनावटी श्रद्धा भक्तिका प्रदर्शनकर बच्चोंको भी 'चरण छुओ' कहकर बाबा महाराज पर एहसान करते हुए, "प्रथम कुटिया पर आये हुए बच्चोंको कुछ प्रसाद मिले।" यह मौन भाषामें भावों द्वारा व्यक्त करके कलकी मूलियोंको आज बच्चों द्वारा वसूल कर तीसरे रोज फुल-फैमली पधारे। श्रीमतीजीके क्रीम, पाउडर, स्नो, लिपस्टिक, सैण्ट तथा पोशाककी तड़क-भड़क, बच्चोंके हल्ला गुल्लाने आज बाबा महाराजकी तल्लीनतामें बाधा उपस्थित कर दी है। बाबा मौनावस्थामें केवल संकेतोंसे समय निकालना और उन्हें बिदा करनेके लिए प्रस्तुत है। किन्तु, बौहरा आसामीसे कर्ज लिये बिना रह जाये यह कैसे सम्भव है ? अब तो जीवनका एकमात्र सहारा मिला है उसे छोड़ सहसा चला जाना क्योंकर सम्भव हो ? मौनी बाबाके बोलते ही एकान्तमें सारी बातें श्रीमती जी द्वारा प्रस्तुत की जाये तथा आज ही लाख दो लाख बाबासे लेकर ही चला जाये। देखो, उर्मिला ! श्री स्वामी महाराज बड़े पहुँचे सिद्ध हैं। हमने तो यह अनुमान लगाया है कि इस इलाकेके सबसे बड़े सिद्ध यदि कोई हैं तो ये ही हैं। देखो मौनावस्थामें अपने साधनमें कैसे संलग्न हैं। कल्पवृक्षके नीचे आकर भी यदि कोई दरिद्री रह सके तो उससे बढ़कर हतभाग्य कौन हो सकेगा। अवसर बार-बार नहीं आते। लो अब ६ बजे और स्वामीजी बोले—

"जाओ सायंकाल हो गया है, काफी समयसे आप यहां सकुटुम्ब आये हो। बच्चोंके भोजनादिकी व्यवस्था घर जाकर करो।"

बाबजी महाराज ! बस, भोजनका ही तो प्रश्न है। जिधर देखो उधर कर्ज। घी और सागके बिना बेचारे बच्चों को कई मास बीत गये। जैसे-तैसे पेट भरते हैं, क्या भरना है महाराज ! अब तो आपकी शरण ली है, कोई

तारनेका उपाय बतलाओ। बस अब तो आपका ही विश्वास है, आपकी ही शरण है।

भाई! जिसके पास एक पैसा नहीं, कोई उससे एक रुपया मांगे तो क्या वह दे सकेगा? आजके युगमें साधुओं की क्या दशा है। क्या राजा, क्या प्रजा सबकी कुदृष्टि है तो बस इनके ऊपर है, अपना समय पास करते हैं। हमारी शरणके बजाय भगवती कमला महारानीकी शरण जाओ और कुछ साधन करो, ताकि पूर्वार्जित दुष्कर्मोंका नाश हो और शुभ कर्मोंका उदय हो, देखो—

कोई न काहू दुख सुख कर दाता,
निज कृत कर्म भोग सुन ताता।

सब प्राणी अपने अपने किये शुभाशुभ कर्मोंको भोगने के लिए आये हैं। और उन्हें भोगना ही पड़ेगा। हां, कर्मोंको कर्मोंसे क्षय किया जाता है, ऐसी भी मान्यता है—

मंत्र महामणि विषम कालके।
मेटत कठिन कुअंक भालके॥

इसलिए भगवती कमलाको प्रसन्न करनेके लिए 'कमला-पंचांग'से सपत्नीक कमलार्चन करो तो सम्भव है भगवती कृपा करें।

महाराज! आजके जमानेमें 'कमला-पंचांग' के आधार पर साधन करना बड़ा कठिन है। एक दो घंटा सहजमें ही लग जायेगा, इतना समय कहांसे मिले? महाराज, हम तो बड़ी आशा एवं विश्वासके साथ सपरिवार यहां श्रीचरणों में उपस्थित हुए थे।

भैय्या! धैर्य रखो, इतना नहीं कर सकते हो तो कोई 'श्रीसूक्त' 'लक्ष्मीसूक्त', का रात्रिमें पाठ करो, अथवा 'लक्ष्मी' 'महालक्ष्मी' 'सौभाग्यलक्ष्मी' 'विजयलक्ष्मी' आदिका कोई एक मंत्र लेकर रात्रिको शांत मनसे १ घण्टा प्रति दिन जप करो। देखो ६ मासमें क्या होता है। महाराज!

"चित्त फंसो धनमें कवित्तनकी कह चलै"

अच्छा तो देखो मंत्र शास्त्र दो वस्तुओं पर अविलम्बित है, वह श्रद्धा एवं विश्वास है।

"भविष्यतीति विश्वासः सिद्धेः प्रथम लक्षणम्।

सिद्धिका प्रथम लक्षण विश्वास है, द्वितीय श्रद्धा। श्रद्धा विश्वाससे किया मंत्र अवश्य सफल होता है। अब मैं तुम्हें मंत्र नहीं, भगवती कमलाकी शास्त्रीय प्रार्थना जो 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में द्वाविंशःश्वासमें 'लक्ष्मी-हृदय' के प्रसंगमें बतलाई हुई सिद्धप्रक्रिया है वह मैं तुम्हारे सम्मुख रख रहा हूँ। इससे सरल प्रक्रिया संसारमें दूसरी कोई नहीं है। जैसे तुम मुझसे नम्र होकर विनीत करुणार्द्र होकर मांग रहे हो, ऐसे ही यदि सर्वथा 'कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं' समर्थ, श्रीमहाराणी कमलासे मांगोगे तो भगवती बड़ी कृपालु है, पुत्र कुपुत्र हो जाता है किन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती। "कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति" रात्रिको एकान्तमें १० से १ के बीचमें बच्चेकी भांति रो रो कर एक एक शब्दको पढ़ते हुए ध्यान देकर सर्वत्र विराजमान सर्व साक्षिणी सर्व कल्याण कर्त्री, सर्वेश्वरी श्रीकमलासे यह प्रार्थना करो—

सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः
कल्याणवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः
विभूतिवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः
सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः॥"

ग्रन्थान्तरे—

श्रीशाङ्घ्रि भक्तिं हरदासदास्यं,
प्रसन्न मंत्रार्थ दृढैकनिष्ठाम्।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोध बुद्धिम्,
प्रदेहि मे देहि परं पदं श्रीः॥१॥
पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं,
विभूतिवासं विविधर्द्धि सिद्धिम्।
संपूर्ण सिद्धिं बहुवर्षभोग्यां,
प्रदेहि मे देहि पुनः पुनस्त्वम्॥२॥
वागर्थ सिद्धिं बहुलोकवश्यं,
वयः स्थिरत्वं ललनासुभोगम्।
पौत्रादि लब्धिं सकलार्थ सिद्धिं,
प्रदेहि मे भार्गवि! जन्म जन्मनि॥३॥

फल स्तुतिमें कहा है—

य एक भक्तोऽन्वहमेक वर्षं,
विशुद्ध धीः सप्तति वार जापी।

शुभ योग

[लेखक—श्री प्राफेसर सी० पी० दवे एस्ट्रालाजर एण्ड पामिष्ट, महेमदाबाद]

'ज्योतिष्मती' के गत तीन अङ्कोंमें १७ शुभ योगों पर विचार किया था। कुंडलीमें योग होने पर भी योगका पूर्ण फल मिलता नहीं है, इसका कारण योगकारक ग्रहोंकी बलाबलता है। इसका पहले विचार करना चाहिए कि योगकारक ग्रह शुभ ग्रहोंसे दृष्ट है या नहीं और योग करने वाला ग्रह कुंडलीमें योगकारक याने केन्द्र त्रिकोण जैसा शुभ भवनका स्वामी है या नहीं और नवांश कुंडलीमें प्रबल है या नहीं ? यह सब अच्छी तरहसे देखना चाहिए। सिर्फ कुंडलीमें योग देखा और जातकको बोल दिया कि "आप भाग्यवान्-लक्ष्मीवान् हो।" यह ठीक नहीं है। प्रत्येक योग का बल देखना चाहिये—और फिर योगका प्रभाव-फल बोलना चाहिये। अब अन्य शुभयोग कुंडलीमें होनेसे क्या फल देते हैं, यह लिखता हूँ।

पंचमहापुरुषयोग

ज्योतिषशास्त्रमें नव ग्रहोंका पूरा वर्णन किया है। इन नवग्रहोंमेंसे मंगल, सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि ये पांच ग्रह दो-दो राशि पर स्वामित्व रखते हैं—इसलिए ये पांच ग्रह विशिष्ट रीतिसे बलवान् हैं। जब कुंडलीमें इन पांच ग्रहोंमें से कोई ग्रह स्वोच्चका या स्वगृही होकर केन्द्र स्थानमें (१-४-७-१०) रहे तब एक अच्छा महापुरुष योग बनता है। जैसे मंगल स्वयं उच्चका Exalled और स्वगृही (In his own Rashi) होकर कुंडलीमें १ले, ४ थे, ७वें, १०वें भवनमें रहे तो 'रुचक योग' बनता है।

इसी तरह बुध होनेसे 'भद्रयोग' बनता है।

गुरु होनेसे 'हंसयोग' बनता है।

शुक्र होनेसे 'मालव्ययोग' बनता है। और शनैश्चर के होनेसे 'शशयोग' बनता है।

(१८) किसी भी कुंडलीमें 'रुचक' महापुरुष योग होनेसे जातक बलवान् साहसिक, निडर, महापराक्रमी उग्र स्वभाववाला, धार्मिक, नेता Leader लश्कर और सरकारी खातेमें अफसर होता है—और अच्छी धन-सम्पत्ति कीर्ति-प्राप्त करता है।

(१९) कुंडली में 'भद्र योग' होनेसे जातक पराक्रमी बुद्धिमान् धैर्यवाला, बड़ा अफसर, सेनाधिपति, राज्यमें बड़ा स्थान प्राप्त करने वाला, स्वतंत्र विचार वाला, आयुष्यवान् दीर्घदृष्टि वाला, और महान् प्रतिभाशाली-धनवान् और कीर्तिवान् होता है।

(२०) हंसयोग होनेसे जातक प्रसन्नमुखी, प्रतिभाशाली शूरवीर, धर्मपरायण, नेता, परोपकारी, दानी, धनवान्, ऐश्वर्यवान् और एक महान् व्यक्ति होता है।

(२१) मालव्य योग होनेसे जातक सौंदर्यवान्, मोजिला, स्त्री व संतानसे सुखी, लक्ष्मीवान्, सरकारी बड़ा अफसर प्रधान, नेता, और अच्छे बंगलेमें रहने वाला—एक उदार भाग्यशाली व्यक्ति होता हैं।

(२२) शश योग शनैश्चरसे होता है। इस योगमें जातक बलवान् भाग्यशाली, क्रोधीस्वभाव, शठताप्रिय, परोपकारी, सेनापति और राजद्वारमें महान् व्यक्ति, मातृभक्त, आयुष्यवान्, धनवान्, और पराक्रमी होता है।

इंग्लैंडके महापराक्रमी राजा पंचम जोर्जकी यह कुंडली है। कुंडलीमें, शश योग, हंस योग, मालव्य योग और दूसरे कई अच्छे शुभ योग होनेसे महापराक्रमी भाग्यशाली और उत्तम प्रकारकी ख्याति प्राप्त करी।

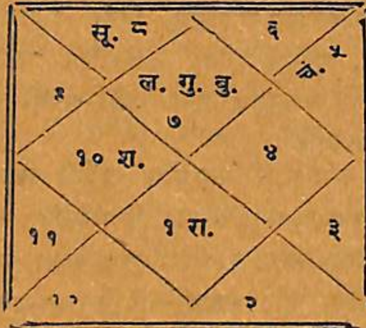
स मन्द भाग्योऽपि रमाकटाक्षाद्
भवेत् सहस्राक्षशताधिकश्रीः ॥

जो व्यक्ति एक बार भोजन करके लक्ष्मीहृदयको व इस प्रार्थनाको प्रेमपूर्वक पढ़ेगा, भगवती कमला उस मंद भागीको भी लखपति बनानेकी कृपा करेगी।

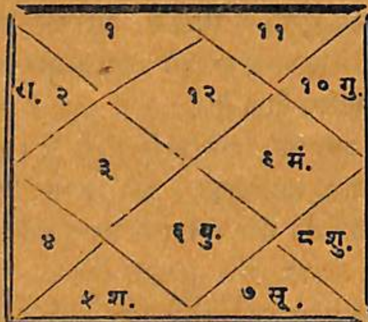
प्रार्थनामें बड़ा बल है, एकान्तमें करुणार्द्र चित्तसे माँ के आगे निरन्तर दुःखोंको दूर करनेकी प्रार्थना जिस दिन शान्त दान्त मनसे कर पाओगे, तो कोई शक्ति नहीं जो कमलाकी कृपा न हो, देर है केवल करुण पुकारकी, करुणामयीकी देर नहीं।



दूसरे विश्वयुद्धमें ब्रिटेनको बचाने वाला तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री विन्स्टर्न चर्चिलकी यह कुंडली है। कुंडली में शश योग है। और दूसरे योग भी बलवान् हैं। योगका अच्छा फल मिला है।



यू० एस० ए० के भू० पू० प्रेसीडेण्ट आइजन हूवर की यह कुंडली है। इसमें भद्रयोग है, और गुरुपे दृष्ट भी है। इसलिये महाभाग्यशाली राजद्वारी विश्वविख्यात पुरुषके रूपमें इनकी प्रसिद्धि हुई।



रशियाके जोसेफ स्टालिनकी यह कुंडली है। बलवान् मालव्य और रुचक योग है। यह एक महापराक्रमी राजद्वारी नेता हो गये।



(२३) कमल योग :—किसी भी कुंडलीमें चारों केन्द्र स्थानोंमें समस्त शुभ पापग्रह होनेसे यह योग होता है। इस योगके प्रभावसे जातक सद्गुण संपन्न सुखी और कीर्तिमान् होता है। श्री जगदीशचंद्र वसु, हेनरी फोर्ड, फिल्म एक्ट्रेस श्री राजकुमारी, श्री मुन्शी, श्री ढेबर इत्यादि कितने ही भाग्यवानोंकी कुंडलीमें यह योग है।

(२४) जितेन्द्रिय योग —यदि कुंडलीमें लग्नस्थान में अथवा पंचमस्थानमें गुरु होवे और दशम स्थानमें चंद्र होनेसे जातक राजलक्षण वाला, प्रतापी, सत्यप्रिय, पराक्रमी और सुखी होता है।

श्री अरविंद घोषकी यह कुंडली है। पंचम स्थानमें गुरु है और दशवें चंद्र होनेसे यह योग हुआ है।



(२५) धनवान् योग :—यदि कुंडलीमें धनेश और लाभेश केन्द्रस्थानमें होवे और भाग्येश बलवान् होनेसे यह योग होता है और जातक लक्षाधिपति होता है। कमसे कम तीन लाखसे ज्यादा मुद्रा प्राप्त करते हैं। मद्रासकी फिल्म एक्ट्रेसकी कुंडलीमें यह योग है। धनेश सूर्य और लाभेश शुक्र केन्द्रमें हैं और भाग्येश गुरु बलवान है। कुंडलीमें दूसरा भी योग है। जातक बड़ी भाग्यशाली और धनवान् है कुंडलीमें योग है या नहीं और यदि योग है तो बलवान है या नहीं इत्यादि ध्यान रखकर विचार करना चाहिये।

(क्रमशः)

माघ मासमें जन्मे प्राणियोंका फल

१५ जनवरी से १४ फरवरी तक जन्म लेने वाले

[श्री प्रो० ईश बी. एस-सी., आई. प्रभाकर पामिस्ट]

यदि कोई मनुष्य इस समयमें उत्पन्न हो तो उसपर शनिग्रह और मकर राशिका प्रभाव होता है। दोनोंका पृथ्वी तत्त्व है, अतः इसके स्वभाव और मन पर भी इसका बहुत गाढ़ असर पड़ता है।

स्वभाव—यह मनुष्य अपने उत्तरदायित्वको अच्छी तरहसे समझता है। अपनी मर्यादाका बहुत विचार करने वाला होता है। मेहनती और सख्त कार्य करने वाला होता है और यह जब किसी कार्यको प्रारम्भ करता है तो खाना, पीना, सोना सब भूल जाता है। यह एक हिम्मती युवक होता है। इसके उद्देश्य और विचार बहुत उच्च होते हैं। इसका धार्मिक कार्योंमें, आत्मविद्या, समाधी, अध्यात्मविद्या, और पठन-पाठनमें खूब ध्यान लगता है। यह सर्वदा स्वतन्त्रतासे कार्य करना पसन्द करता है। अपने किसी भी कार्यमें किसी भी प्रकारकी रुकावटका होना बिल्कुल पसन्द नहीं करता और यदि कोई इसके कार्यमें अड़चनें या टीका-टिप्पणियां करता है तो यह शीघ्र क्रोधित हो जाता है। और कार्यको मध्यमें ही छोड़ देता है। यदि यह किसी कार्यको प्रारम्भ करता है अथवा उस कार्यमें प्रमुख बनकर कार्य करे तो बड़ी बुद्धिमानीसे, धैर्यसे उस कार्यको करता है और तब तक नहीं छोड़ता जब तक कि उस कार्यसे सन्तुष्ट न हो जाय। इसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी होती है।

यह भ्रमणशील, अपने जनोंका विरोधी, निर्धन अथवा कठिनतासे धन उपार्जन करने वाला, उत्सवरहित और प्रभुता-रहित, मन्त्रशास्त्रको पढ़नेका इच्छुक अथवा ज्ञाता, वेद इत्यादि धर्मग्रन्थोंका वाचन करने वाला, साधुओंका संग करने वाला, योगक्रियामें रत, बुद्धिकी विशेषतासे शत्रुओंको पराजय करने वाला और पुण्यकर्म करने वाला होता है।

यह घरमें बैठे-बैठे बड़ी-बड़ी बातें कर सकता है, परन्तु यदि इसे रंगमंच पर व्याख्यान करनेको कहा जाय तो अच्छी तरहसे धाराप्रवाहमें न बोल सकेगा। यह अपने स्वतन्त्र विचारोंमें ही विचरने वाला होता है। यदि यह किसी भी कार्यको स्वतन्त्रतासे करे तो उसे करनेमें सफल हो जाता है, किन्तु यदि कोई आकर इसके कार्यमें माथाकूट करे तो इसे अच्छा नहीं लगता और यह स्वयं भी किसीके कार्यमें माथापच्ची नहीं करता। यह बुद्धिमान्, योग्य, विद्याभ्यासी, साहसी, निपुण, सुशील, आज्ञाकारी, परिश्रमी और कार्यशील होता है, किन्तु दो तरहके मनुष्योंकी प्रकृति होनेसे दूसरे दर्जेके लोग थोड़े नीच विचार के जिद्दी, जानते हुए को भी अनजाना करने वाले, कंजूस, धक्का-मुक्की करने वाले, कार्य को मध्यमें छोड़ देने वाले, अप्रसन्न, चालाक, दुष्ट, स्थिर, दूसरोंके कार्योंमें दखलअन्दाजी या रुकावटें डालने वाले, मसखरे और वहमी होते हैं।

यह कई बार तो इस प्रकारकी बातें सोचता है और करता है कि साधारण मनुष्य तो इसे समझ ही नहीं सकता, कि इसके कहनेका अथवा करनेका क्या अभिप्राय है। यह ठण्डे स्वभावका और नाप तोलकर कार्य करने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्यको बहुत ही सावधानीसे करता है और दूसरोंके दुःखमें सहायक भी होता है।

यह गणित और राजनैतिक विषयोंमें निपुण हो सकता है। यह साहसी और कठिनाइयोंका धैर्यसे सामना करने वाला होता है। यह जनता के किसी धार्मिक कार्यमें अथवा सरकारके किसी उत्तरदायित्व वाले कार्यमें सफल हो सकता है। यह प्रायः ही दुःखी रहता है और अपने स्वयंके परिश्रम से अपने भाग्यके सितारेको चमकाने वाला होता है। यह या तो किसी कार्यमें एकदम सफल हो जाता है अथवा ठोकरें खाकर उस कार्यसे निराश हो जाता है।

इसे सर्वसाधारण नहीं पहचान पाते, इसीलिए इसे निर्दयी, कठोर हृदय, कंजूस इत्यादि शब्दोंसे विभूषित करके बुलाते हैं, वास्तवमें यह दूसरोंकी सहायता करता है परन्तु समक्ष होकर नहीं। इसे गुप्त रहकर कार्य करना पसन्द है।

यह किसीका व्यंग या ताना और मखौल नहीं सहन कर सकता। यह गम्भीर स्वभावका होता है।

यदि हम इसका दूसरा पहलू विचारें तो यह अपने जीवनमें बहुत-सी कठिनाइयोंका सामना करता है और अपने दुःखका रोना रोता हुआ मिलेगा। इसके बहुतसे शत्रु हो जाते हैं क्योंकि इसका स्वभाव दूसरोंकी कड़वी टीका करनेका और मसखरी करनेका होता है।

भाग्य—इसे अपने भाग्यको चमकानेके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है और यह कोई बहुत अच्छे भाग्यवाला नहीं होता, किन्तु कठिन परिश्रम, संलग्नता और स्वतन्त्रतासे कार्य करना इसे भाग्यशाली और सफल कार्यकर्ता बना देता है। ३० वर्षके पश्चात् इसे अपने भाग्यको चमकानेका अवसर मिलेगा। इसके जीवनका पिछला भाग अच्छा और स्मरणीय होगा। इसे अपने भाग्यका निर्माण करनेके लिए बहुत-सी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। यह घमण्डी और गर्वीला होता है और कभी-कभी इसी कारणसे हानि कर बैठता है। दूसरे पहलुको लोग कई बार अस्थिरता, तर्क-वितर्क करनेके कारण, अपने नीचेके कार्यकर्त्ताओंसे अनबनावके कारण धनकी नुक्सानी कर बैठते हैं और निर्धनताको प्राप्त हो जाते हैं। यह अपनी इज्जत सब जगह देखना चाहता है और प्रमुखत्व अधिक चाहता है।

इसका भाग्यशाली नम्बर ८ है। यदि यह अपने कार्य ८, १७, २७वीं को करे तो उन्हें लाभदायक रहेगा। यदि यह अंक इसको अच्छा साबित न हो तो फिर इसे १, ३, ५, १०, १२, १४, ६, १५, १६, २१, ३० या २८ तिथियोंमें करे तो भी लाभदायक रहेगा, किन्तु यदि अपने जन्मतिथिके अंक (जन्मांक) के अनुसार करे तो उससे भी ठीक रहेगा। यथा १८ तिथिको उत्पन्न मनुष्य ९, १८ या २७ तिथिको कार्य करे तो और भी अच्छा होगा और इसके मित्र अंक ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७ या ३० भी अच्छे हैं। यदि ८, १७, २७ तिथियों पर शनिवार आ जाय तो वह दिन और भाग्यशाली होगा।

इसे अपने पहननेके कपड़ों, घरके पर्दों, गुलदस्तों, मेजपोष, चादरें इत्यादिमें गाढ़े रंगोंका उपयोग करना चाहिये। यह गाढ़ा नीला, गाढ़ा हरा, गाढ़ा खाकी इत्यादि का उपयोग करे तो इसे मनकी शान्ति मिलेगी, स्वास्थ्य पर काफी प्रभाव पड़ेगा यहां तक कि भाग्यमें भी परिवर्तन होगा। इसे अपने गहनोंमें नीलम या सोनेके तारोंसे बना हुआ विशेष प्रकारका कांटा पहना चाहिये।

इसके लिये १५ मई से १४ जून तक लगभग १५ सितम्बरसे १४ अक्टूबर तक लगभग, १५ दिसम्बरसे १४ जनवरी तक लगभग और १५ जनवरीसे १४ फरवरी तक का लगभग समय अच्छा रहेगा। इसी समयमें इसे भाग्य चमकानेके कई स्वर्ण अवसर मिलेंगे। ३०वां, ३१वां, ३६ वां और ४१वां वर्ष इसके जीवनमें एक मुख्य समय होगा।

स्वास्थ्य—यह प्रायः अपने उल्टे विचारोंके कारण ही कष्टोंमें, रोगोंमें फंसता है। अतः इसे अपने विपरीत विचारों को निकाल दूर फेंक देना चाहिए। मानसिक कार्योंमें उलझे रहनेसे कई-कई तरहकी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। इसे कानके दर्द, दान्तोंके दर्द, घुटने, कमर इत्यादिके दर्द, मस्तिष्क रोग अथवा शरीरके चमड़ेमें किसी प्रकारके रोगके होनेका भय रहता है। टांगों पर किसी दुर्घटनासे चोट लगने का भय होता है।

यदि कोई उत्तराषाढ़ाके सूर्यमें उत्पन्न हो तो उसे रोगों में कल्करिया, सल्फरिकम और काली मरियेटिकम नामक नमक का किसी अंग विज्ञानशास्त्रीकी मन्त्रणा लेकर उपयोग करना चाहिये। यदि श्रवणके सूर्यमें उत्पन्न हो तो उसे सिल्का नामक नमक का उपयोग करना चाहिये। यदि धनिष्ठाके सूर्यमें हो तो उसे फैरमफोस्फोरिकम नामक नमक का उपयोग करना चाहिये।

इसे पेटकी खराबी, जिगर, सिरदर्द, जोड़ोंमें दर्द या खूनमें खराबी भी हो सकती है। इसके लिये गाजर, पालक, हरे शाक इत्यादि खाना स्वास्थ्यप्रद है। १५ जनवरीसे १४ फरवरी तक लगभग, १५ जून से १४ जुलाई तक लगभग और १५ दिसम्बरसे १४ जनवरी तक लगभगके दिन स्वास्थ्यके लिये थोड़े खराब रहेंगे। इसके लिए २, ४, ८, १२, १७, १६, २६, २८, ३२, ३५, ३६, ४०, ४४, ५३, ४८, ५६, ६२, ६४ वर्ष जरा विशेष महत्वपूर्ण होंगे, विशेषतया स्वास्थ्यके विचारसे।

जीवनसाधन—यह दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी, सख्त कार्य करने वाला, धैर्यशाली, उत्तरदायित्वको समझने वाला और कार्यशीज होता है। यह कार्यकी गहराई तक जाकर

कार्य करना पसन्द करता है। इसकी मानसिक शक्ति अच्छी विकसित होती है और इसकी इच्छाशक्ति भी दृढ़ होती है। इन्हीं कारणोंसे यह ठेकोंके कार्योंमें, कृषिमें, सरकारके किसी भी उत्तरदायित्वके कार्यमें प्रमुख होकर कार्य कर सकता है। यदि यह स्वतन्त्रतासे करे तो भी अपने कार्यमें सफलता प्राप्त कर सकता है। यह धार्मिक कार्योंमें और राजनीतिक कार्योंमें भी सफलता प्राप्त कर सकता है। यह सावधानीसे और अपनी जिम्मेदारी समझकर किसी भी कार्यमें पड़े तो उसमें सफल हो सकता है। यह किसी मानसिक शक्तिके कार्यमें भी सफल हो सकता है।

मित्र और शत्रु—इसके मित्र बहुत ही कम होंगे, फिर भी इसकी बोलचाल तो बहुतोंसे रहेगी। इसके सच्चे मित्र तो बिरले ही होते हैं। इसकी मित्रता ४, १३, २२, ८, १७, २६ तिथियोंमें उत्पन्न होने वालोंसे भी हो सकती है। और १५ मई से १४ जून तक लगभग, या १५ सेप्टे-म्बर से १४ अक्टूबर तक लगभगके समयमें उत्पन्न मनुष्य से भी मित्रता हो सकती है।

पाणिग्रहण—यह जीवनके पिछले दिनोंमें अथवा देरीसे विवाह करता है। इसका गृहस्थी जीवन साधारण होता है, फिर भी यदि यह ऐसी कन्यासे विवाह करे जो कि १५ मईसे १४ जून तक लगभग, १५ सेप्टेम्बरसे १४ अक्टूबर तक लगभग, या १५ दिसम्बरसे १४ फरवरी तक लगभगके समयमें उत्पन्न हो तो गृहस्थी स्वर्गमय होगी। यदि कन्या १५ जनवरीसे १४ फरवरी तक लगभगके समय में उत्पन्न हो तो उसे ऐसे वरसे पाणिग्रहण करना चाहिये जो कि चन्द्रमा वृष, कर्क, कन्या, धनुः या मकर राशिमें उत्पन्न हो तो उसकी गृहस्थी सुखमय और सन्तति-युक्त होगी।

यदि यह मकर लग्नमें उत्पन्न हुआ हो तो इसे ऐसे वर से या वधूसे विवाह करना चाहिये जो कि जबकि बुध-भरणी, पूर्वाषाढ़ा या पूर्वाभाद्रपदमें हो, मंगल-ज्येष्ठा, अश्लेषा या रेवतीमें हो, शुक्र-रेवती, अश्लेषा या ज्येष्ठा नक्षत्रमें हो, शनि-मघा मूला या अश्विनी नक्षत्रमें हो, उत्पन्न हो तो दोनोंकी गृहस्थी स्वर्गमय, सन्ततियुक्त और कलह-कंकांससे दूर होगी और यह वास्तविक जीवनका उपयोग कर सकता है।

जनता जागी

[लेखक—श्री नटवर जोशी साहित्याचार्य बी० ए०]

क्या है भद्र ? कहते हुए एक तेजस्वी ऋषि आगे आये। हृष्टपुष्ट शरीर, गौर वर्ण, प्रलम्ब बाहु, प्रशस्त भाल पर त्रिपुण्ड, गलेमें रुद्राक्ष, गैरिक वस्त्र, दिव्य शान्ति से भरे करुणार्द्र नयन और मुख पर स्मितहास्य। एकत्र जनताने महर्षि मरीचिको पहचानकर श्रद्धावनत हो मार्ग दे दिया। महर्षि आगे आये, देखा एक नवयुवती अस्तव्यस्त वस्त्रोंमें अचेतावस्थामें पड़ी है। एक क्लान्तमुख वृद्ध सज्जन उसके मुँहपर जलके छींटे दे रहे हैं और एक सुकु-मार बालक अश्रुपूरित नयनोंसे निर्निमेष उसकी ओर देखता हुआ उसपर हवा कर रहा है। उनको घेरकर असंख्य जनसमूह एकत्र था—इस चत्वर पर। ऋषिके आश्रमके निकट था यह स्थान; वे मध्याह्न सन्ध्या कर लौट रहे थे तो कोलाहल सुन यहां तक पहुँचे।

महर्षिको देख नतशिर वृद्धने मुख ऊंचाकर श्रद्धासे प्रणाम किया और रो पड़ा—"महाराज! मेरी बेटी...।" वृद्धसे आगे न बोला गया। बोला एक दूसरा व्यक्ति—'नाश हो इस राजाका, किसीका भी धन, जन, मान, सुरक्षित नहीं रहा। और अब तो हमारी बहू-बेटियोंके शील-अप-हरणकी कुचेष्टायें भी राजकीय संरक्षणमें होने लगी हैं—आजकी ही यह घटना देखिये'—उसने बताया कि "राजाके आरक्षी इस नवयुवतीको बलात् पकड़कर ले जानेकी कुचेष्टा कर रहे थे—जब कुछ साहसी नवयुवकोंने साहस कर उनको ललकारा तो वे भाग खड़े हुए—युवती मार्गमें चोट खाकर गिर पड़ी और अब दो मुहूर्तसे अचेत है। अधिकारियोंसे जब निवेदन किया गया तो उन्होंने निवेदन करनेवालोंको ही कारामें डाल दिया। अब जायें भी कहां—रक्षक ही

भक्षक बन गये हैं।" यह सुन महर्षिके नेत्र रोषारुण हो गये और उनके मुँहसे निकला घोर अनर्थ, पापकी पराकाष्ठा...। फिर शान्त होकर बोले—भगवान् शीघ्र ही कल्याण करेंगे। धैर्य धारण करो। उन्होंने वहीं खड़े अपने एक शिष्यको आज्ञा दी कि—'इस कल्याणीको तथा इसके साथवालोंको आश्रमके परिचर्यागृहमें पहुँचाओ।' और महर्षि चल पड़े। शनैः-शनैः इस घटनासे विक्षुब्धचित्त जनसमूह भी स्वस्थान लौट गया।

अत्यन्त क्रूर, स्वेच्छाचारी, धर्मद्वेषी राजा वेनका शासनकाल था यह। राजा मृगयाव्यसनी था और उच्छृंखल वृत्तिका होनेके कारण मर्यादाका विरोधी—भले ही वह मर्यादा धर्मकी हो या समाजकी, आश्रमकी या वर्णकी, यही कारण था कि राष्ट्रमें सर्वतः अराजकता फैल रही थी। दुष्टोंकी, अधर्मियोंकी बन आई थी। वे प्रजाको पीड़ा देनेमें आनन्द लेते थे। स्वयं राजाको आश्रममृग मारनेमें संकोच तो दूर, आनन्द आता था। प्रजापर अत्याचार बढ़ रहे थे—न्याय-व्यवस्था छिन्न-भिन्न थी। अपराधी अपराध करने पर भी मुक्त विचरण करते थे। अन्याय ही धर्म बन गया था क्रूर राजाका। और अब तो यह अन्याय इस सीमातक बढ़ गया था कि प्रजाकी बहू-बेटियोंके शील-अपहरणकी कुत्सित चेष्टायें भी की जाने लगी थीं।

धर्म-परिषद् एवं मंत्रि-परिषद्की अवहेलनाकर स्वेच्छाचारिता पर तो राजा पहले ही उतर आया था और अब तो राजमद जागा था उसका। उसने धर्म परिषद् एवं मंत्रि परिषद्को भंगकर उसके सदस्योंको कारागृहमें डलवा दिया था। धर्म और नीतिका नियन्त्रण समाप्तकर वह राज्यका सर्वेसर्वा बन बैठा था। आज ही उसने घोषणा करवाई थी कि मैं ही ईश्वर हूँ—सुख-दुःखका नियामक सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वयंभू। कोई भी यज्ञ, हवन, दान-दक्षिणा ईश्वरोपासनाके नामपर न करे। अब ईश्वरोपासना नहीं, राजाकी उपासना करे।

जनता त्रस्त थी एवं आये दिनके अत्याचारोंसे भयभीत थी। पर नितरां मृत नहीं थी। असन्तोषकी वह्नि कालकी राखके नीचे दबी थी। ऋषि-मुनि एवं तपोधन ब्राह्मण भी निष्क्रिय नहीं बैठे थे। शम नीतिसे पथ भ्रष्ट राजाको सन्मार्ग पर लानेका वे प्रयत्न कर रहे थे। आये दिनके अत्याचारोंसे स्वभावतः शान्तमन इन तपस्वियोंकी क्रोधाग्नि भीतर ही भीतर भड़क रही थी—और आज मध्याह्नवाली घटना तथा उस राजकीय घोषणाने तो जैसे उस अग्निमें घी होम दिया हो और प्रजाका दुःख वाणी चाहता था, बहुत सहन कर चुका था प्रजाका मन, पर आजकी घटना और घोषणासे! चिरकालका वह मौन और अवसाद फूट पड़ा। हमने बहुत सहन किया है—अब सहन नहीं हो सकेगा। अबतक शान्त थे प्रजाजन महर्षि मरीचिके आश्वासन पर कि शीघ्र ही इस अन्यायका अन्त होगा—धैर्य धारण करो। पर अब धैर्य कहां। प्रजाजन महर्षिके आश्रम पर एकत्र होने लगे। महाराज! अब सहन नहीं होता, कहते हुए भावातिरेकसे रो पड़े थे—कुछकी मुट्ठियां तन गई थीं और कुछके नेत्र लाल होकर अंगारे उगल रहे थे—जान पड़ता था कि जैसे क्रोधाग्निमें जला देंगे ये राजाको।

अपराह्नका समय। आकाशमें काले-काले मेघ उमड़ रहे थे आज बहुत दिनोंके झुलसा देनेवाले आतपके बाद—शायद यह भी भविष्यत्की किसी घटनाका मौन संकेत रहा हो—प्रकृतिका। महर्षि मरीचिके आश्रमके विशाल अश्वत्थ वृक्षके नीचे सभा जुटी। सभी प्रमुख महर्षि-मुनि-तपस्वी समुपस्थित थे। महर्षि आसन वेदिका पर ध्यानावस्थित बैठे थे—आज मध्याह्नवाली घटनाके पश्चात् वे वेदिकापर इसी तरह निश्चल बैठे थे। कोलाहल सुन जब उन्होंने नेत्र खोले तो सभीने श्रद्धावनत अपने माथे झुका दिये। महर्षिने सर्वतः दृष्टिनिक्षेप कर अंगुली निर्देशसे बोलनेका संकेत किया। एक प्रजाजनने खड़े होकर सभीको नमस्कार कर विनयपूर्वक बोलना प्रारम्भ किया—

पूज्यवर्ग! हमने बहुत सहा पर अब सहन नहीं हो सकेगा। राजदण्ड जिस निर्ममतासे हम पर पड़ा, हमने सहन किया। दुष्टों एवं लुण्टाकोंने हमारी सम्पत्ति लूटी—हमने राजासे निवेदन किया, राजाने हमारी विनय नहीं सुनी, दुष्टोंको प्रश्रय दिया, हमने सहा। हमारे अन्नसे भरे खेतोंको राजाके सैनिकोंने लूटा, हमारी गायोंको हमारे अश्वोंको चोरोंने चुराया, पर हमारी प्रार्थना शासकने नहीं सुनी—हमने सहा। हमपर राजकर बढ़ाये गये, हमें अपमानित किया गया, हमने सहा। पर अब तो हमारी पुत्रियों एवं पुत्रवधुओं पर हाथ उठने लगे हैं। वह भी राजधानीमें,

अन्यत्र तो क्या दुरवस्था होगी—इसकी कल्पना भी कठिन है। वे हाथ जिन्हें काट डालना चाहिये, वे आंखें जिनसे हमारी नारियोंको कुदृष्टिसे देखा जाता है-निकाल लेना चाहिये—राजकीय संरक्षण प्राप्त करती हैं। हमारी नित्य नैमित्तिक क्रियाओं पर प्रतिबन्ध लगाया जा रहा है, सुनी होगी आप सभीने आज राजाकी घोषणा—"यज्ञ-हवन एवं अन्य धार्मिक क्रियायें वर्जित हैं—इन्हें करनेवालोंको मृत्यु-दण्ड मिलेगा। ईश्वर मैं ही हूँ। देखा आपने आज राजाका पशुत्व जागा है—अब सहन नहीं होगा। हमारा राजा नहीं है वह, हम उसे राजा नहीं मानते। नहीं मानेंगे हम उसकी ये आज्ञायें। हमारी पुत्रियों पर उठनेवाले हाथ अब काट दिये जायेंगे। हमारी नारियोंको कुत्सित दृष्टिसे देखनेवाली आंखें निकाल ली जायेंगी। महर्षे!......और क्रोधावेशके कारण वह अधिक न बोल सका। सभीके नेत्र महर्षिकी ओर लगे थे—महर्षिने धीर, गम्भीर स्वरसें कहा "प्रजाजनो! सत्य ही राजा अधर्मपथारूढ़ हो गया है। मदान्ध-वह सद्-असद् विवेकसे भ्रष्ट हो गया है। तो भी हम एक प्रयत्न और करें और उसे समझायें कि यह अधर्म है, पाप है, और पाप नरकका द्वार है। इससे बचो। विश्वास रखें प्रजाजन—तब भी यदि वह नहीं माना तो राजसिंहासनारूढ़ नहीं रह सकेगा वह।" उपस्थित सभ्योंने सहमति प्रकट की, पर उनके साथ राजसभा तक जानेके निर्णय पर वे अटल रहे।

धर्मकी जय हो। अधर्मका नाश हो! जयघोष करती जनता महर्षि मण्डलका अनुगमन करती चली। राजप्रासादके समीप पहुंचने पर जनसमूहको द्वाररक्षकोंने बाहर ही रोक दिया। महर्षि एकत्र जनताको ठहरनेका संकेतकर अन्दर राजसभामें पहुंचे। मदोद्धत राजा प्रणाम निवेदन करनेको भी नहीं उठा, पर नतग्रीव सभासद ससंभ्रम उठ खड़े हुये। महर्षिने शान्त पर गम्भीर स्वरसें कहना प्रारम्भ किया—"राजन्! तुम्हारे राज्यमें अत्याचार बढ़ता जा रहा है। प्रजारंजन ही राजाका धर्म है। धर्मसे च्युत होना पाप है। राजाके होते भी अराजकता होना यही सूचित करता है कि राजा कर्त्तव्यच्युत हो गया है। आपके कर्म ध्रुवके विमल वंश पर कलंक लगाते हैं। यज्ञादि धार्मिक कृत्य धर्मके मूल हैं। उनका वर्जन धर्मविरुद्ध है। राजन्! धर्म ही धराको धारण करता है। यज्ञादिकोंसे ही देवता-पितर सन्तुष्ट होते हैं। प्रजाकी बाधायें दूर होती हैं। इनका वर्जन अमंगलका मूल एवं कल्याणका नाशक है। अतः सावधान चित्तसे सोचिये कि आप क्या कर रहे हैं? निश्चित ही राजा अष्टलोकपालोंका अंशी एवं ईश्वरीय विभूति होता है, पर आपका अपनेको त्रिभुवनव्यापक सर्वभूतपति ईश्वर घोषित करना तो राजमदकी हास्यास्पद पराकाष्ठा है, मूर्खताकी अन्तिम सीमा है। अब भी समय है राजन्! अपनी प्रजाका रक्षण सर्वतोभावेन करो, अन्यथा जनता-जनार्दनकी रोषाग्निमें भस्मसात् होते पलभरकी देरी भी नहीं लगेगी।" पर महर्षि की सुधामयी वाणी भी वेनको गरल समान तिक्त लगी। वह क्रोधसे कांपने लगा, उसने महर्षिका उपहास करते हुये कहा—'महर्षे! यह उपदेश किसी दूसरेको दीजिये। राजा ही ईश्वर होता है। आपको मेरी आज्ञा ही ईश्वरीयाज्ञा मानकर चलना चाहिये। और रहा प्रजारञ्जन, अहाहा! मेरी भ्रुकुटी विक्षेपसे होता है तुम्हारी जनताजनार्दनका सृजन और संहार।' महर्षिने पुनः बोलना चाहा तो राजाने कहा—'रक्षकों! निकालो इस बकवादीको बाहर। मैं इसकी बकवाद नहीं सुनना चाहता, महर्षि क्रोधाविष्ट अपने साथियोंको शान्त रहनेका संकेत करते हुए खड़े रहे और अभी रक्षक प्रतिहारी आगे भी न बढ़े थे कि द्वारके बाहर खड़ी अधीर जनता राजसभामें आ पहुँची और महर्षिके जयनादके साथ देखते-देखते क्रुद्ध राजाके तलवार निकालनेके पहले ही एक ऋषिकुमारने राजाका शिर काट लिया और समग्र जनता समवेत स्वरसे बोल उठी—धर्मकी जय हो। महर्षिने भी जयघोष किया—जनता जनार्दनकी जय हो।

'ज्योतिष्मती'
का
एक नया ग्राहक बनाना आपका परम कर्त्तव्य है
वी. पी. नहीं होगी ★ मूल्य मनिआर्डर द्वारा भेजिए

सौंठ

[ले०—श्री पं० तारादत्त त्रिपाठी, शिलौटी, भीमताल, नैनीताल]

[गताङ्कमें श्रद्धेय आचार्य श्रीसदाशिवजी दीक्षितने 'हरीतकी' प्रयोग विधि लघुकथा रूपमें लिखी थी जिसे पाठकोंने बहुत पसन्द की। अस्वस्थ होनेके कारण दीक्षितजी इस अङ्कके लिए 'पिप्पली' की कथा न लिख सके। भारतीय घरेलू औषधियोंमें सोंठका भी बहुत महत्व है। साहसपूर्ण वीरताके कार्यके लिए भारतमें यह लोकोक्ति अभी तक प्रसिद्ध है—"जिसकी माँने सेर सोंठ खाई हो वह सामने आये।" राजस्थान आदि प्रान्तोंमें अब भी निर्बल वृद्ध स्त्री पुरुष प्रतिवर्ष शीतकालमें सोंठके मोदक बनाकर नियमित सेवन कर शक्ति प्राप्त करते हैं। मन्दाग्नि एवं वात-व्याधिमें ही सोंठ रामबाण महौषधि नहीं, अपितु अनेक रोगोंमें यह परमोपयोगी है इसका विवेचन विद्वान् लेखकने इस लेखमें किया है। —सम्पादक]

भाषान्तर—संस्कृतमें शुंठि, महौषधि, विश्वभैषज, इन्द्र-भैषज। हिन्दीमें सोंठ, सूंठ। फारसीमें जंजबील खुश्क,। अंग्रेजीमें Dry Gengar (ड्राय जेंजर)।

सोंठ एक सुप्रसिद्ध घरेलू महौषधि है। आयुर्वेदिक दृष्टिसे इसमें अन्यान्य गुण हैं। यह मनुष्यकी जीवन शक्ति तथा रोग प्रतिरोधक शक्तिको बढ़ाता है।

हृदय, मस्तिष्क, रक्त, उदर विकार, वात स्थान, मूत्र-पिण्ड इत्यादि शरीरके सब अवयवों पर अनुकूल प्रभाव डालता है, एवं उनमें उत्पन्न हुई विकृति तथा अव्यवस्था को नष्ट करता है। आयुर्वेदमें बनने वाले सहस्रों योगोंमें इस (सोंठ) का सम्मेलन रहता है। यह आयुर्वेदके सुप्रसिद्ध योग 'त्रिकुटा' (सोंठ कालीमिर्च पिप्पली) का एक प्रधान अङ्ग है। सोंठकी फांट बनाकर रात्रिको सोते समय देनेसे आमवातसे पीड़ितको सुखदायक नींद आ जाती है। और वायु शुद्ध होकर हृदय शूल भी नहीं होता है।

उपयोग—विषमज्वरमें ज्वरके आध घंटे पूर्व डेढ़-दो माशा सोंठके चूर्णको बकरीके दूधके साथ खानेसे ज्वर समूल नष्ट हो जाता।

आमवातमें—सोंठके एक तोला चूर्णको कांजीके साथ रोज पीनेसे अथवा गिलोयके एक छटांक क्वाथके साथ पीना भी रामबाण है। शिरशूलमें सोंठको बकरीके दूधमें पीस कर नस्य देते रहें, अनुभूत है। नेत्रविकारमें—सोंठ, नीम के पत्ते या निम्बौली थोड़ा सेन्धा नमक पीस कर टिकिया बना लें, एक टिकिया आंख बन्द करके बाहरसे बांध दें, ऐसा करनेसे सब विकार नष्ट होकर आंख शुद्ध पूर्ववत् हो जायगी।

मन्दाग्निमें—सोंठके चूर्णको गुड़में मिलाकर खाया करें। वमन (कै) में सोंठ और बेलका क्वाथ पिलानेसे विसूचिका (कौलरा) के भी वमन थम जाते हैं। हिचकीमें—सोंठ, आंवला एवं पीपलका चूर्ण मधुके साथ चाटते रहें। पक्षाघातमें—सोंठ सेन्धानमक पीस कपड़ छन कर सुंघाते रहें। संग्रहणीमें—कच्चे बेलका गूदा, सोंठ, गुड़ मिलाकर छाछ (मट्ठे) के साथ पीते रहें, अद्भुत गुण वर्द्धक है। शूलमें—सोंठके क्वाथमें अरण्डीका तेल मिलाकर पिलाने से निर्मूल हो जाता है। मूत्रकृच्छ्रमें—सोंठ, गोखुरूके क्वाथमें जवाखार मिलाकर पिलाते रहें, रामबाण है।

❋ आवश्यकता ❋

'ज्योतिष्मती' पत्रके व्यवस्थापन कार्यमें सहयोग देने और जन्मपत्र वर्षफलादि कार्य सम्पन्न करनेके लिए एक अनुभवी विद्वान् सहयोगीकी आवश्यकता है। गणित फलित में विशेष अनुभव और आंग्ल-भाषा जानने वालेको प्राथमिकता दी जावेगी। अपना पूर्ण परिचय और कार्य तथा योग्यताका प्रमाण निम्नांकित पते पर भेजें।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि० प्र०)

ग्रहोंका प्रत्यक्ष प्रभाव ।

[लेखक—श्री मदनलाल पोद्दार, मुंगेर]

महाभारतमें भगवान् श्रीकृष्णने शान्ति कायम रखनेके निमित्त सिर्फ पांच गाँव पाण्डवोंको देनेकी याचना दुर्योधन से की। किन्तु उस समय भी ग्रहोंका यह प्रभाव था कि प्रभुकी याचनाको उस तुच्छ राजाने ठुकरा दिया। फलतः महाभारतका भीषण संग्राम हुआ, जिसमें धर्मराज युधिष्ठिर के कथनानुसार करोड़ों मनुष्योंकी समाप्ति रण-क्षेत्रमें ही हो गई।

भारतको स्वतन्त्र हुए १५ वर्ष हो गए। गोवाके सम्बन्धमें विरोधी पार्टीके सदस्यों द्वारा लोकसभामें समय-समय पर शासनके विरुद्ध पर्याप्त आलोचनाएँ होती रहीं। परन्तु शान्तिके दूत हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्रीको यह आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास था कि गोवा बिना किसी प्रतिकूल कार्रवाईके भारतमें मिल जायगा। अतः इसी विश्वास पर लोकसभाके सभी प्रतिवादोंका शान्तिपूर्ण उत्तर दिया और कटुतम आलोचनाओंको भी सहन करते आये। देखिए, ग्रहोंका प्रभाव! उन्होंने उन पर भी अपना जादू डाल ही दिया। गत एक वर्षसे अष्टग्रहोंका शिलान्यास प्रारंभ हुआ और तभीसे हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्रीके भाषणमें कुछ उत्तेजक शब्द निकलने लगे। और अब जबकि निकट भविष्यमें परमात्माकी निर्धारित इच्छानुसार अष्टग्रहोंका सम्मिलित योग होने वाला है तो इन सबोंने परोक्ष रूपसे हमारे प्रधानमंत्री पर अपना प्रभाव डालकर शान्तिवादसे युद्धकी ओर मोड़ दिया। इसी कारण चौदह वर्षोंसे शान्ति-प्रिय प्रधानमंत्रीने अपनी सेनाको गोवामें प्रवेशार्थ आज्ञा दे दी। यही तो ग्रहोंका प्रभाव है।

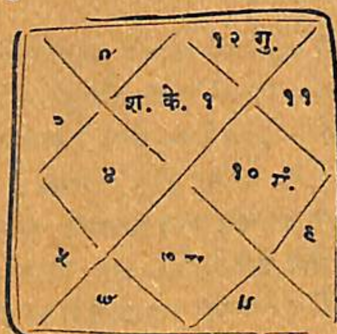
रही बात चीनकी। चीनकी सेनाने भारत भूमि पर अगस्त १९५९ में अतिक्रमण किया। उस समय पाँच बड़े ग्रहों (मंगल, राहु, केतु, शनि और गुरु) की स्थिति ठीक १९३९ के द्वितीय महायुद्धकी जैसी बनी थी। इसकी दो कुण्डलियाँ आगे दी जाती हैं। उन पर विचार करनेसे विद्वानोंको पूरी ग्रह-स्थिति समझमें आ जायगी। उस समय के ग्रहोंका प्रभाव देखनेसे तथा वर्त्तमानके ग्रहों पर विचार करनेसे यही प्रतीत होता है कि चीनका राजी-खुशीसे भारत की भूमिसे हटना असंभव ही है। संभव है कि भारतको चीनके साथ भी उलझना पड़े। परमात्मा चीनके शासकोंको सुबुद्धि दे उसीमें खैरियत है। वरना संसारका दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। चीनका भारत-भूमि पर अतिक्रमण ही तो तृतीय युद्धका शिलान्यास समझमें आता है।

हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्रीका जन्म-लग्न और जन्म राशि दोनों ही कर्क है। कर्क लग्नसे दशम स्थानमें जिससे राज्य विषय पर विचार होता है, मेष राशि मंगलका स्थान है। अष्टग्रह योग प्रधानमंत्रीके लग्न तथा राशिसे सप्तम स्थान मकर राशिमें हो रहा है, जो दशम स्थानसे दशम है। मकर राशिसे चतुर्थ स्थान जिससे भूमि सम्बन्धी विचार किया जाता है बलवान् मंगलकी दृष्टिमें है। मंगल युद्ध प्रिय ग्रह है। ग्रहोंमें यह सेनापति है। मकर राशिमें मंगल अति बलवान् होकर अपनी राशि मेषको जिससे भूमिका विचार किया जाता है देख रहा है। अतः ग्रहयोगके प्रभावसे विदित होता है कि भविष्यमें भारत, चीन काश्मीर आदिसे अपनी भूमिकी रक्षा करनेमें समर्थ होगा।

अष्टग्रह-योगका प्रभाव राष्ट्र, प्रांत, शहरों, गाँवों पर ही न्यूनाधिक पड़ना संभव है या राष्ट्रके कर्णधारोंके लिए भी चिन्ताका कारण बन सकता है? मेरे विचारसे व्यक्तिगत प्रभाव अधिक नहीं पड़ेगा, कारण एक-एक राशिमें बीस-पच्चीस करोड़ मनुष्य होते हैं। हमारे लोक-प्रिय पंडित नेहरू एक बड़े राष्ट्रके कर्णधार हैं। उनको तारीख २४-१-६२ से ९-२-६२ तक दुर्घटनाओंसे अपनेको सुरक्षित रखनेके लिए थोड़ी सावधानी बरतनी ठीक है।

१६३६

ता० ११ मई १६३६ से ३१ अक्टूबर १६३६ तक द्वितीय महायुद्धके समय पांच बड़े ग्रहोंकी स्थिति।



१. शनि मंगल परस्पर केन्द्रमें थे।
२. शनिसे राहु केतु परस्पर केन्द्रमें थे।
३. मंगलसे राहु केतु परस्पर केन्द्रमें थे।
४. शनिसे गुरु १२वें था।
५. गुरुसे मंगल ११ वें था।
६. शनिकी राहु मंगल पर पूर्ण दृष्टि थी।
७. मंगलकी शनि-केतु पर पूर्ण दृष्टि थी।
× ८. शनि केतु एक राशि पर थे।
९. गुरु मीन राशिमें रहकर कर्क एवं वृश्चिकको पूर्ण देखता था।

१६५६

ता० २६ अगस्तसे ११ अक्टूबर १६५६ तक चीन क भारत सीमा अतिक्रमण के समय ग्रहों की स्थिति।



१. शनि मंगल परस्पर केन्द्रमें थे।
२. शनिसे राहु केतु परस्पर केन्द्रमें थे।
३. मंगलसे राहु-केतु परस्पर केन्द्रमें थे।
४. शनिसे गुरु १२ वें था।
५. गुरुसे मंगल ११ वें था।
६. शनिकी राहु मंगल पर पूर्ण दृष्टि थी।
७. मंगलकी शनि केतु पर पूर्ण दृष्टि थी।
× ८. मंगल राहु एक साथ थे।
९. गुरु वृश्चिकमें रहकर मीन और कर्कको पूर्ण देखता था।

अगस्त महीनेका चमत्कार

(१) प्रथम महायुद्ध १६१४ ई० को अगस्तमें ही प्रारम्भ हुआ था।

(२) द्वितीय महायुद्ध १६३६ ई० अगस्तके अन्तमें ही प्रारम्भ हुआ था।

(३) १६४२ ई० में अंग्रेजी शासनके विरुद्ध "भारत छोड़ो" आन्दोलन अगस्तमें ही हुआ।

(४) भारतको अगस्तमें ही स्वतन्त्रता मिली थी।

(५) १६५६ ई० में चीनका भारत सीमा अतिक्रमण भी २६ अगस्तके लगभगमें ही हुआ था।

सं० २०१६ का भविष्यफल

बहुधा लोग अपने भविष्यफलोंकी काफी प्रशंसा लिखते हैं पर हमारे भविष्यफलकी खूबी लोगोंको विदित है कि सं० २०१८ में स्पेशल लाइनें सभी सही रहीं। इस नये वर्ष सं० २०१६ का भविष्य छप गया है। मूल्य ७) रु० है वी० पी० से ८) रु० पड़ेगा।

पता—श्री ओंकारप्रसाद दैवज्ञ, फून २३८
पो० हापुड़ (मेरठ)

त्रैमासिक व्यापार-भविष्य

[लेखकः—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न, दोराहामण्डी पंजाब]

ता० २० जनवरी १९६२ ई० से प्रारम्भ होनेवाले 'ज्योतिष्मती'के 'हेमन्ताङ्क'से आगामी 'वसंताङ्क'का समय ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण ग्रह-स्थितिका प्रत्यक्ष दर्शन करवा रहा है। विशेषतया वर्तमानके वैज्ञानिक युगमें यह एक ऐतिहासिक तथ्यको उपस्थित करनेवाला सामर्थ्यवान्, महान् ग्रह-योग है, मैं इस विषय पर कुछ नहीं लिखता, क्योंकि इस विषय पर भारतके अनेकों ज्योतिर्विदोंने समय समय पर बहुत लिखा है, अतः मैं तो इस महान् ग्रह-योग की गति-विधियोंके आधार पर केवल व्यापार पर ही अपने विचार व्यापारी-वर्गके हितार्थ लिख रहा हूँ।

ता० २१ जनवरीको प्रातः १ बजकर ५७ मिनट पर बुध-केतुको पछाड़कर आगे निकलता शून्य शरमें जाकर उत्तर शरमें प्रवेश करेगा, यह महत्वपूर्ण परिवर्तनकी सूचना दे रहा है। ता० २३ जनवरीको तिलहन-तैलोंका अधिष्ठाता शनैश्चर पृथ्वीसे अति दूर होकर तारीख २४ जनवरीको शुक्र ग्रहसे सूर्यकेन्द्रीय योग संपन्न करेगा। अतः तिलहन तैलोंमें परिवर्तनकारी योग आ रहा है सावधान ! व्यापार बुद्धिका अधिष्ठाता बुध ता० २६ जनवरीको नीचस्थ हुआ पृथ्वी मण्डलके अति समीप पहुँचता हुआ अपनी परि-भ्रमणगतिमें स्तम्भी होकर तारीख २७ जनवरीको घोरागति में चलता वक्रगामी होकर मार्केटोंमें सामूहिक रूपसे चलती लाइनके उलट वक्र देनेमें सामर्थ्यवान् सिद्ध होगा। ऐसा ही बुध वक्री सं० २०११ विक्रमीमें हुआ था तब मार्केटों पर तेजीके वक्रका प्रभाव पड़ा था, गुड़ फाल्गुनमें १।≈)॥, गुड़ वैशाख १॥।) तथा गुवारमें ॥।) का तेजीका जोरदार वक्र आया था। यह तेजीका वक्र आकर गुड़में भयंकर मंदीकी लाइन चली थी, ३।≈)॥ का मंदा गुड़में बना था। अतः गुड़के व्यापारियों सम्भलकर मार्केटमें उतरना, जरा-सी चूक ही लाइनके लाभको समाप्त कर भयंकर हानिकी ओर अग्रसर कर देती है। ता० २८ जनवरी रात्रौ गतिघोरामें पश्चिमास्त बुध चलते वक्रको सहायता देने आ रहा है। ता० २९ जनवरी प्रातः धनिष्ठा प्रथम चरणमें गुरुदेव अस्त हो रहा है। ता० ३० जनवरीको शुक्र उच्चस्थ होकर पृथ्वी से अति दूर आकाश मार्गमें भ्रमण करता अपने अधीन वस्तुओंकी चलती लाइनको पलटनेकी ओर संकेत कर रहा है। ता० १ फरवरीकी प्रातः ५ से बुध-ग्रहके साथ मंगल-ग्रहका एक राशिमें सूर्यकेन्द्रीय प्रतियोग तथा ता० ३ फरवरीको बुधका शनिके साथ सूर्यकेन्द्रीय प्रतियोग और ४ फरवरीको सूर्यको मध्यस्थ बनाकर गुरु और शुक्र दो परस्पर विरोधी भावनाओंके ग्रह एक राशिमें सूर्य-केन्द्रीय योग सम्पन्न करेंगे। ता० ४ फरवरी प्रातः से सूर्य, बुध युति आरम्भ। ता० ५ फरवरीको सायं ६ बजकर ४७ मिनट तक प्रारूप। ता० ७ फरवरीके प्रातः तक उत्तररूप है। प्रातः धनिष्टामें प्रारम्भ होकर मुख्य युति श्रवणमें है। ता० ४ फरवरी प्रातः गुरुसे बुध युति करके पीछे आ जाता है और सायं शुक्रसे युति करके पीछे आ जाता है। शुक्र मार्गावस्थामें अस्त है, बुध वक्री अवस्थामें अस्त है. दो भिन्न गतियों वाले एक रसता सम्पन्न ग्रहोंका आपसी सम्मिलन चलती लाइनों को पलटनेकी सामर्थ्य रखता है। उदाहरणार्थ सं० २०१२ विक्रमीमें ऐसे ही इन दो मित्र ग्रहोंका सम्मिलन चित्रा नक्षत्र तुला राशिमें हुआ था। बुध-शुक्रसे युति करके पीछे आया था जब बुध वक्री हुआ था वहां पर ही निचले भाव गुड़, गवार आदि खाद्यान्नों व तिलहन-तैलोंके बनकर भयंककर बाढ़ोंके कारण भयंकर तेजीकी प्रतिक्रिया समस्त बाजारों पर हुई थी और युति योग परके ऊंचे भावोंसे जोरदार मंदेका वक्र बना था, यह है पुरानी ग्रह चालका लेखा-जोखा। यहां पर चार नहीं आठ ग्रहोंका सम्मेलन है और साथमें पांच फरवरी प्रातः सूर्यग्रहण होगा जो भारतमें दृष्टिगत नहीं होगा। अपितु इस भूमण्डल पर ग्रहणका अस्तित्व होनेसे संसारमें आश्चर्य चकित कर देने वाली विचित्र घटनाएं प्रकाशमें आये बिना नहीं रहेगी।

ता० ६ फरवरीको बुध, सूर्य केन्द्रीय परम उत्तर शर तथा ७ फरवरीको बुध पृथ्वीसे अति समीप रहते उत्तरशरकी परमगतिमें होगा, इसी दिन लुप्तप्राय वर्षके राजा-मंत्री शुक्र-गुरुका युति योग सम्पन्न होकर ता०-७ फरवरीको दोनों विरोधी ग्रहोंका क्रांतिसाम्य नामक योग भी साथ में सम्पन्न हो रहा है जो व्यापार-जगत्में नई हलचल करने में सहायक है।

ता० ६ फरवरीको सूर्योदयसे पहिले ३ बजकर ३७ मिनटसे लेकर सवापांच बजे तक धनिष्ठा नक्षत्रमें सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, केतुका योग हो रहा है यह सम्पर्क महत्व-शाली है। शास्त्र प्रमाण —

दिननाथेन्दु कवयो यदैकत्र समाश्रिताः ।
उत्तरस्थो दिशि भयं प्रजा क्रन्दति नित्यशः ॥
यवान्न मुद्गवस्त्राणां संग्रहे च कृते सति ।
मासे सप्तमके चैव लाभो भवति पुष्कलः ॥

ता० १४ जनवरी १९६२ ई० से लेकर १२ फरवरी १९६२ तक ग्रहोंके आपसी परस्पर वेध और युतियोंका रूप इतना व्यापक है कि हर एकका लिखना और उसके फलाफलका विवेचन करना अति गहन विषय है, क्योंकि सदियों बाद यह योग घटित हो रहा है। दूसरे व्यापार-जगत्में यह पूर्णतया अभिनव है, अतः व्यापारी-वर्गको इन दिनोंका सतर्कतासे अध्ययन करना चाहिए। जो ग्रह-चाल अनुभवमें आ चुकी है उसका ही मुख्य रूपसे विवेचन किया जा रहा है। सं० २०१५ विक्रमीमें विशाखा नक्षत्रमें सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्रका सम्मेलन हुआ था उस मुख्य सम्मेलन से १३ दिन पहले ही रुई और तिलहन-तैलोंके निचले भाव बने थे। हां, तेल मूंगफलीका निचला भाव उस युति वाले दिन ही बना था, अपितु गुड़का निचला भाव १८ दिन उपरान्त बना था। स्मरण रहे हर वस्तुके निचले भाव एक श्रेष्ठ मंदी लेकर ही बने थे।

प्रति बीसवें महीनेमें सूर्य-चन्द्र-शुक्र-मार्गीका युति योग संपन्न होता है। शुक्र वक्रीसे किसी-किसी बार ही बीसवें महीनेमें सूर्य-चन्द्र-शुक्रकी युति होती है, हर बीसवें महीनेमें नहीं। मैं सं० २००८ विक्रमीसे ही इनकी युतियोंकी गति-विधियोंका अध्ययन करता आ रहा हूँ, जिससे 'ज्योतिष्मती' के पाठक भली प्रकार परिचित हैं। इस युति योगका सम्पर्क व्यापारिक जगत्में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सं० २०१२ और २०१५ विक्रमीका उदाहरण पीछे दे ही दिया है, अतः व्यापारी वर्गको अपना मार्ग चुननेके लिए कटिबद्ध होना चाहिए। क्योंकि जैसे अस्त ग्रह उदय होने आरम्भ होंगे वैसे-वैसे आने वाली बढ़ी लाईनका मार्ग प्रशस्त होता चला जावेगा। व्यापारी बन्धुओंके हितार्थ गत 'ग्रीष्मांक' में गुरु-शनिके योगका विवरणात्मक विवेचन लिखा था। उस ग्रहचालके फल-पाकका समय भी इसी 'हेमन्तांक' की अवधिमें पूरा होने जा रहा है, अतः व्यापारी बन्धुओंसे निवेदन है कि अपना मार्ग चुननेमें भूल न करें, इस ग्रह चालमें महत्वपूर्ण लम्बी लाइन श्रेष्ठ लाभ देने वाली निहित है।

ता० २८ जनवरीसे ६ फरवरी तक शुक्रके आगे गुरु रहता है जो सफेद वस्तुओं, ब्राह्मणों (शिक्षा शास्त्रियों-व्याख्यानदाताओं, न्यायविवेचकों) गावों तथा धार्मिक स्थलोंके लिए हानि कारक सिद्ध होगा और पूर्वीय भूभागके प्रदेशोंके लिए अनिष्टप्रद फल कारक है। तथा आकाशसे बर्फ ओले आदि विशेषरूपसे गिरें और संसारमें गलेकी बीमारी विशेषरूपसे व्याप्त हो, परन्तु आने वाली शरद्-ऋतुकी उपज श्रेष्ठ रूपसे निपजे।

बृहस्पतौ हंति पुरस्थिते सितः
सितं समस्तं द्विज गोसुरालयान् ।
दिशं च पूर्वा करकासृजोऽम्बुदा
गलेगदा भूरि भवेच्च शारदम् ।

ता० ६ फरवरी भौमवार शतभिषानक्षत्र वारुणमंडल मुहूर्त्त १५ में परस्पर विरोधी वातावरणमें युगादि प्रवर्त्तक चन्द्रोदय हो रहा है, क्योंकि मंगलवार अग्नितत्व प्रधान है तो नक्षत्र वारुणमण्डलीय है, जो प्रज्वलित होने वाली अग्निका शामक है, अतः व्यापारिक वस्तुओंमें दोतरफा घटा-बढ़ी चलते अन्तिम विजय मंदी वालोंकी सूचित कर रहा है। ता० ७ फरवरीको दिनके १० बजे मंगलके साथ शनिका योग होनेसे अग्नि और वायु तत्वका संघर्ष अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचता हुआ दृष्टिगोचर होगा। ता० ६ फर-वरीसे २५ मार्च तक गुरुको शनैश्चरका वामवेध है। ता० ११ फरवरी रात्रौ श्रवण नक्षत्र घोरागतिमें वक्री पूर्वोदय बुध (ता० १२ फरवरीको तेजी आवे) तेजी आकर ऊंचा

भाव बनकर जोरदार मंदेकी प्रतिक्रिया हो। सं० २०११ विक्रमीमें ऐसा बुधोदय हुआ था, उदय वाले दिन तेजी आकर ऊंचा भाव बनकर जोरदार मंदेकी प्रतिक्रिया हुई थी। गुड़ २॥-)॥, गुवार १), चणे ॥।=) मंदे हुए थे। माघ शुक्ला सप्तमीको दो विरोधी योग संपन्न हो रहे हैं। सप्तमी रविवारी होना दुर्भिक्ष सूचक और सप्तमीमें भरणी नक्षत्र होनेसे सुभिक्ष कारक माना है। ता० १२ फरवरी सन् १९६२ ई० सोमवारको मध्यान्होत्तर १७।२४ पर कर्क लग्न रोहिणी नक्षत्र मुहूर्त्ती ४५ माहेन्द्र मण्डल बालव करण पायसभक्ष तृतीयवार चतुर्थ नक्षत्रमें कुम्भ संक्रान्ति प्रवेश हो रही है, इस संक्रान्तिमें बहुधा मंदी वाले योगोंका ही साम्राज्य है; केवल संक्रान्ति प्रवेश लग्नसे सप्तममें पांच ग्रहोंकी स्थिति अधिक वर्षा व ओला वृष्टि तथा हिमपातसे पकनेवाली फसलोंको मासके चतुर्थ सप्ताहमें हानि पहुँचाने वाले सिद्ध हो सकेंगे, किन्तु पहिले तो मंदी वालोंकी तूती बोलती दृष्टिगोचर होगी। यथा—

"त्रिवारे तूर्यके धिष्ण्ये वृहदृक्षे च संक्रमः
यदा भवेत्तदा वाच्यं सुभिक्षं सततं क्षितौ॥
धान्यं सुभिक्षं प्रचुरा च वृष्टिः
समर्घता तैल रसादिकानाम्।
कुसुम्भ कर्पास सुभिक्षता च
चत्वारिंशत्पञ्चयुक्ते मुहूर्त्ते।"

ता० १३ फरवरीको बुध वक्री मंगलसे युति करके पीछे आ जाता है। ता० १४ फरवरीको नैपच्यून वक्री हो रहा है। १८ फरवरीको बुध मार्गी हो रहा है, ता० १९ फरवरीको हर्शल पृथ्वीसे समीपातिसमीपमें है। २० फरवरीको कनकद्वार राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रोदय हो रहा है। यह सुख समृद्धि व सुभिक्षवर्धक है, राक्षसगण नक्षत्रमें होनेसे तेजी सूचक है, अतः पहिले मंदी फिर तेजी कारक सिद्ध होवे। ता० २१ फरवरीको शुक्र—सूर्यकेन्द्रीय परम दक्षिण शर। ता० २१ फरवरीको मंगल उदय हो रहा है, यह उदय होनेसे पहिलेसे ता० २० फरवरीसे केतुसे युति और राहुसे प्रतियोगावस्थामें प्रारम्भ हो चुका है, जिसका प्रारूप ता० २४ फरवरी प्रातः तक और उत्तररूप ता० २८ फरवरी तक है, यह युति-प्रतियोग प्रायः श्रेष्ठ मंदे कारक होता है। ता० २३ फरवरी मध्यान्ह कालसे मंगल धनिष्ठा नक्षत्रमें प्रवेश करता है, जिसे राहुका दक्षिणवेध और शनैश्चरका वामवेध है, यह आपसी वेध ता० १२ मार्च तक चलेगा।

स्यात्वासवे वासववत्समृद्धि-
र्धान्यैसमर्घ गुड़ शर्करादिः॥"

भौमका धनिष्ठा प्रवेश एक जोरदार मंदेके वक्रको देनेमें समर्थ है। ता० २३ फरवरीको मंगल-बुध क्रांतिसाम्य है। ता० २४ फरवरी रात्रौ कुम्भे गुरु, कुम्भ राशिमें गुरुका प्रवेश मूल तेजीकारक है। खेतीकी हानिसे तेजीको देनेमें समर्थ है। यथा—

"कुम्भराशि गते जीवे मेघः स्वल्पाम्बुवर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता॥"
"मध्यदेश पूर्व एक वर्ष। वस्तु राख लाहा आकर्ष॥
चौपद महंगा उत्तर वृद्धि। कुम्भे गुरु देख मिलिद्धि॥"

ता० २५ फरवरीको फाल्गुन कृष्ण षष्ठि स्वाति नक्षत्र युक्त होनेसे दुर्भिक्ष कारक है। यथा—

फाल्गुने कृष्णा षष्ठिः स्वातिनक्षत्र संयुता।
त्रिभिर्मासै तु दुर्भिक्षं कथितं गणकोत्तमैः॥

ता० २८ फरवरीको कुम्भराशिमें गुरु उदय हो रहा है जो आने वाली तेजीके लिए मार्ग प्रशस्त करनेमें पूर्ण रूपसे तैयार हो रहा है। ता० १ मार्चको बुध शून्यशर दक्षिणशरमें प्रवेश, ता० २ मार्चको गुरु-शनि क्रांतिसाम्य, ता० ३ मार्चको बुध मंदागतिका परित्याग कर मध्यागतिमें आरम्भ और सूर्यसे परम हीनान्तर पश्चिम २७ अंश ७ कला है, आज ही रात्रौ कुम्भे भौम प्रवेश तेजी कारक है।

"भूसुतः कुम्भराशिस्थः सर्वधान्य महार्घता।
एवं प्रजायते ह्यर्घं लोकमध्ये तु निर्भयम्॥"

ता० ५ मार्चसे मंगल-गुरु युति योग आरम्भ और आज ही प्रातः एक बजकर २२ मिनट पर बुध-केतुको पछाड़कर आगे निकलेगा, आजसे १५ मार्च तक बुधको शनैश्चर केतुका वामवेध, राहुका दक्षिण वेध है, मंगल-गुरु से इनके आपसी वेध पहिलेसे ही आरम्भ हैं, यह ग्रहोंके आपसी वेध महत्वपूर्ण स्थितिका बोध करवा रहे हैं। तेजी वालों चेतो! पुराने रिकार्ड महत्वपूर्ण हैं, सावधान होकर चलती लाईनको पकड़नेका प्रयत्न करना चाहिए।

ता० ६ मार्च दिनके ढाई बजे मंगल-नैपच्यून क्रांति-

साम्य। ता० ७ मार्च प्रातः दो बजे मंगल-गुरु युतिका प्रारूप समाप्त होकर उत्तररूप चालू जो ता० १३ मार्च प्रातः तक रहता है।

ता० ७ मार्चको बुधवासरे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे, वारुण मण्डले ४५ मुहूर्त्ती मीनराशौ चन्द्रोदय वारुण मण्डलका बुधवारसे संयुक्त होना रसों और लोह भेदोंमें श्रेष्ठ तेजीकी सूचना दे रहा है। उत्तराभाद्रपदका क्षय होनेसे गुड़, खांड, शक्कर, खल, तिलहन, चावल, घी, मणि, मोती, चांदीमें श्रेष्ठ तेजी कारक है।। यथा—

"लोहभेदा रसाः सर्वे शीघ्रं भवति सस्पृहाः।
नक्षत्रैर्वारुणैर्वापि बुधवारेण चन्द्रमा॥
गुड़ खण्डा शर्करा च खलं तिलाश्च शालयः।
घृतं मणि मौक्तिकानि रजतं वारुणके स्थिता॥"

ता० १० मार्चको बुधसे शुक्र अन्तर पूर्व ३५ अंश १६ कला है, ता० ११ मार्चको बुध उच्चस्थ पृथ्वीसे अति दूरी पर है, ता० १० मार्चसे बुध-गुरु युति आरम्भ, प्रारूप ता० १३ मार्चके सायं साढे चार बजे तक, उत्तररूप ता० १६ मार्च तक है। ता० १३ मार्च रात्रौ २१।२० पर बुध-हर्शल प्रतियोगका प्रारूप समाप्त। ता० १४ मार्च १९६२ बुध वासरे मध्यान्होत्तर दो बजकर ३७ मिनट पर कर्क लग्न आर्द्रा नक्षत्रमें मुहूर्त्ती १५ वारुण मण्डलमें कौलव करण भिक्षान्नभक्ष तृतीयवार तृतीयनक्षत्रमें मीन संक्रान्ति खप्पर योग वाली प्रवेशकर रही है, यह मूल तेजी कारक है। लग्नेश चन्द्रमा निर्बल है विशेश सूर्य बलवान् है, यह दोनों भी तेजीको प्रोत्साहन देने वाले हैं। यथा—

"कुर्वन्ति युद्धोत्तरके च राज्ञां धान्यं महर्घं च जनेषु पीड़ा।
मन्दा च वृष्टिश्च रसा महर्घाः संक्रान्तयः पञ्चदशे मुहूर्त्ताः॥
यस्मिन्वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः।
लोके खर्प्परयोगोऽयं जीवधान्यादि नाशकः॥"

ता० १४ मार्च रात्रिको सवानौ बजे तक गुरुहर्शल प्रति योगका प्रारूप है। ता० १२ मार्च रात्रिसे मंगल बुध युति प्रारूप, ता० १६ मार्च दिनके साढ़े ग्यारह बजे तक उत्तररूप ता० २४ के प्रातः तक है। ता० १४ मार्च तक बुध मध्या-गतिमें और १५ मार्चसे शीघ्रा गतिमें परिभ्रमण करता है। ता० १५ मार्च बुध हर्शल क्रांतिसाम्य, ता० १६ मार्चको दिनके साढ़े ग्यारह बजे बुध-मंगलको परास्त कर आगे निकलेगा, वहांसे आगे शुक्र पीछे बुध और मध्यमें सूर्य श्रेष्ठ तेजी कारक योगका आरम्भकर्त्ता बनेगा। ता० २१ मार्चको दिनके १२ बजे तक बुध पर शनैश्चरकी तृतीय पूर्ण दृष्टिका प्रारूप है। ता० ३० मार्चको बुध मीन राशिमें प्रवेश। ता० ३१ मार्चसे बुध अतिचारावस्थामें आरम्भ। ता० २४ मार्चसे बुध राहु षडष्टक प्रारूप ता० २५ मार्च रात्रि साढ़े ग्यारह बजे तक, उत्तररूप ता० २७ मार्च प्रातः तक है। ता० १ अप्रैलको बुध सूर्यकेन्द्रीय परम दक्षिण-शर है। ता० ३ अप्रैलसे सूर्य-राहु त्रिकोण प्रारूप ता० ५ अप्रैलको दिनके साढ़े बारह बजे तक, उत्तररूप ता० ८ अप्रैल प्रातः तक है। ता० ३ अप्रैल प्रातः बुधास्त पूर्व गति तीक्ष्ण फल १८ दिन। ऐसा बुधास्त सं० २०११ विक्रमीके २८ चैत्रसे २२ बैशाख २०१२ विक्रमी तक रहा, उस बुधास्तमें श्रेष्ठ तेजीकी प्रतिक्रिया हुई थी, सरसोंमें २) तथा गुड़-गुवारमें १=) तककी तेजी बनी थी। दूसरे तिलहन, तैलों और चांदी, रुईमें भी तेजी चली थी, अतः बाजार रुखको देखते लाईनको पकड़नेके लिए तत्पर रहना चाहिए।

ता० ६ अप्रैलको शुक्रवासरे भरणीनक्षत्रे मुहूर्ती १५ अग्निमण्डलीय नक्षत्रे उत्तरशृंगोन्नत मेषराशौ नववर्षा-रम्भ चन्द्रोदय। इस उदय होते चन्द्रमाको शनैश्चरकी चतुर्थ त्रिपाद दृष्टि है और साथमें शनैश्चरकी लत्ता भी है। इस उदय होते चन्द्रमा पर गुरुदेव भी लत्ता प्रहार कर रहे हैं, अतः यह चन्द्रोदय पहिले तेजी कारक और फिर मन्दी सूचक बने तो कोई आश्चर्य नहीं है। ता० ८ अप्रैल से बुध-राहु त्रिकोण प्रारूप ता० १० अप्रैल रात्रौ १ बजे तक, उत्तररूप ता० ११ अप्रैल रात्रि तक है। ता० १२ अप्रैल बुध पृथ्वीसे अति दूर रहता भुवन भास्करसे रेवती नक्षत्र चतुर्थ चरणे युति आरम्भ करता है, यह ता० १३ अप्रैल रात्रिके ११ बजे तक युति चलती है, फिर राशि भेद हो जाता है। ता० १४ अप्रैल रात्रि १२ बजे बुध अश्विनी नक्षत्र मेष राशिमें प्रवेश कर फिर युति योगका आरम्भ करता है, जिसका प्रारूप ता० १६ अप्रैल दिनके प्रातः आठ बजे तक है, उत्तररूप ता० १६ अप्रैलके प्रातः तक है। ता० १६ अप्रैलको ही बुध अपनी अतिचारावस्थाकी ऊंचीसे ऊंची गतिमें परिभ्रमण करता होगा, किन्तु ता० १६ अप्रैल

प्रातः ८ बजेसे "सौम्याग्रा" योग आरम्भ हो जावेगा जो मूल रूपसे मन्दी कारक योग माना जाता है। अतः व्यापारी वर्गको बाजार रुख पर ध्यान रखते अपना धन्धा करना ही हितकर होगा, क्योंकि इन दिनोंमें मार्केट पलटा खायेगी। सावधान ! ता० १३ अप्रैलको भूमिपुत्र पृथ्वीसे अति समीप होगा। ता० १३ अप्रैलको रात्रि ११।६ पर वृश्चिक लग्न अश्लेषा नक्षत्रमें मुहूर्ती १५ वारुण मण्डल-तृतीय वार चतुर्थ नक्षत्रमें मेष संक्रान्ति प्रवेश हो रही है यह घोर मंदी की सूचना दे रही है। यथा—

तूर्येधिष्ण्ये च पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीयके।
संक्रांति निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम्॥

ता० १७ अप्रैल सायं सवा छः बजे बुध-गुरु क्रांति-साम्य है। ता० १८ अप्रैल प्रातः सूर्य गुरु क्रांतिसाम्य और शुक्र शून्यशरसें रहते अपने उत्तर शरमें प्रवेश होगा। उपरोक्त योगोंका विश्लेषण करनेसे ज्ञात होता है कि अप्रैल का तीसरा सप्ताह परिवर्तनकारी योगोंको लेकर आ रहा है। सावधान !

नोट :—व्यापारी-बन्धुओंसे निवेदन है कि पत्रोत्तरके लिए टिकट या जबावी कार्ड-लिफाफा जरूरी है, तथा किसी भी वस्तुकी एक मासकी रिपोर्टकी फीस २१) से कम नहीं होगी, अतः व्यर्थकी लिखा-पढ़ीमें समय नष्ट न करें।

—

ज्योतिषकी दृष्टिमें त्रैमासिक व्यापार भविष्य

२१ जनवरी से १६ अप्रेल तक

[ले०—श्री पं० ओंकारप्रसाद शर्मा ज्योतिर्भूषण, हापुड़ (मेरठ)]

इस त्रैमासिक अवधिमें खास योग मकर राशिमें अष्ट-ग्रही है, जिसे भारतीय ज्योतिषमें कूटयोग कहकर पुकारा है। इस योग पर भारतवर्षके प्रसिद्ध उच्चकोटिके विद्वानोंने पथप्रदर्शन किया है। मैं यहां इतना ही लिखूंगा कि मकर, मिथुन, तुला, कुंभ राशि वाले व्यक्तियोंको तथा इन्हीं राशियोंसे सम्बन्धित देशोंमें आपत्तिका संचार होगा। तथा मकरसे सप्तम राशि कर्क पर सभी ग्रहोंका पूर्ण दृष्टिपात होना अच्छा नहीं है। बड़ी भारी विपत्ति दैविक या भौतिक आते हुए भी जगत् व्यवस्थामें कोई हानि न होगी।

हमारा उद्देश्य यहां तेजी मंदी भविष्य लिखनेका है, अतः अधिक अष्टग्रही योग पर विस्तृत फल तो आप पढ़ ही चुके हैं, जो हमारे ज्योतिषाचार्य दैवज्ञ भाइयोंने विस्तृत रूपमें प्रकाशित कर दिया है। अब हम आपका ध्यान वायदे के व्यापारों पर कराते हुए यह भविष्यवाणी करते हैं कि अष्टग्रही योग पर मंदी आयेगी, न कि तेजी। क्योंकि यह योग बनते समय वायदा व्यापारपति बुधका रथ ता० ५ फरवीको भगवान् भास्करसे पीछे होना प्रारम्भ होगा। यह एक मोटा सिद्धांत है कि जब कोई व्यक्ति किसीकी छत्रछाया में ढका सा रहेगा, तो क्या वह उन्नति करेगा, क्या उसकी वैल्यू बढ़ेगी। अतः अधिकांश ग्रह निर्बल होनेसे व्यापार भी क्यों न ठप्प हो, क्यों न अंकुश हो, क्यों न कन्ट्रोल लगे ? हम तो यह भी लिखेंगे कि बुध वाणीका स्वामी होता है अतः स्वतन्त्ररूपसे जनता-जनार्दनकी वाणी भी मुखसे न निकल सकेगी। और यहां ही सुना जाता है कि चुनाव होंगे अतः स्वतन्त्रपार्टीकी आशा धूलमें मिल जायेगी, पर हमारा उद्देश्य तो तेजी मंदीका है, सो ता० २१ जनवरी माघ बदी प्रतिपदासे ता० २४ जनवरी तक कोई बड़ी भारी घटबढ़ नहीं होंगी। ता० २४ जनवरीको अष्टग्रहोंसे सम्मेलन करने वाला मंगल ग्रह मकर राशिमें पदार्पण करते ही गुड़, सोना, आयरन, शेयरोंमें एक दम काया पलट होगी। २४ जनवरीसे पूर्व आई हुई तेजी मन्दी में परिवर्तन होगी। (विपरीतमें विपरीत चाल जानें) तद-नन्तर ता० २६ को गुरु अस्त और ता० २७ को बुध वक्री तथा पश्चिमास्त बुध होते ही ता० ३ फरवरीको अष्टग्रहों के सम्मेलन पर एकदम मन्दीका बोलबाला होगा।

पापी शनैश्चर बलवान् स्वगृही राशिमें तथा पाप युक्त बुध क्रमसे माघ शुदीमें चतुर्थी व अष्टमी पर उदय हो रहे हैं ये दोनों ग्रह मोटी तेजीके सूचक हैं। पर पूर्व

तेजी तो बाद धामाकेकी मन्दी निकालेंगे, परन्तु ता० ५ फरवरीसे इंफीरियर तेजीकी लाइन शुरु होकर जो पूर्णतया ता० १६ अप्रैलको समाप्त होती है, अर्थात् इसी पीरियडमें यह त्रैमासिक भविष्य समाप्त होता है, दि० १६ अप्रैलको चैत्र शुदी पूर्णिमाके साथ यह भविष्य समाप्त होगा, अतः लिखनेका तात्पर्य यह है कि रस, गुड़, सोना, कपड़ा, रुई, सूत आदि अनाजोंकी तेजी काफी देरी तक कायम रहेगी, यद्यपि बीच-बीचमें अन्य योग मन्दी लायेंगे, पर जब इस पीरियडमें गुरु उदय होंगे तब धमाकेकी मन्दी काफूर होने लगेगी तथा फसलोंकी बर्बादीका असर फुलैरा दोयज ता० ८ मार्चसे सम्पन्न विशेष रूपसे होगा, क्योंकि ता० ६ मार्च को भौम हर्षल १८० डिग्री पर तथा ता० ११ पर बुध Appelion होना और १६ मार्च पर बुध भौम युति और ता० २१ को सूर्य Equinox तेजीमें सहायक सिद्ध होंगे। तेजी विशेषतया मकर कुंभ राशिसे सम्बन्धित वस्तुओंमें आयेगी। आगे हम इस उपरोक्त त्रैमासिक अवधि का तेजी मंदीका फल हर वस्तुका खास-खास साप्ताहिक क्रम से ३ माहका लिख रहे हैं।

ता० २२ जनवरीसे २८ जनवरी १९६२ ई०

इस सप्ताहमें ता० २३ में श्रवणे रविः होनेसे सोना, चांदी, रुई, चावल, जौ, गेहूँ, सूत, सन, गुड़, खांडमें तेजी आयेगी और ता० २४ में मकरे भौम होनेसे घृत, रसादि पदार्थ, तेल, सोना, चांदी, गुड़, खांड, तांबामें तेजी तथा समस्त धान्योंमें मन्दी आयेगी और आज ही श्रवणे शुक्र होनेसे सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, उड़द, मूंग, मोठ आदिमें मन्दी आयेगी तथा कपास, तिल, तेल, सरसों आदिमें तेजी आयेगी। ता० २७ में वक्री बुध होनेसे मकर राशिमें होनेके फलस्वरूप समस्त तेल पदार्थोंमें तेजी तथा धान्योंमें मन्दी आयेगी और आज ही धनिष्ठायां १ गुरु होनेसे गेहूँ, जौ, चना आदि अन्नोंमें मंदी आयेगी, तथा फीचर ता० २२ में २-६ तथा ता० २६ में ३-६ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० २९ जनवरीसे ४ फरवरी १९६२ ई०

इस सप्ताहमें ता० २६ में अस्त गुरु मकर राशिमें होनेके फल स्वरूप गेहूँ, जौ, चना, मटर तथा गुड़, खांड आदिमें तेजी आयेगी। ता० ३० में पश्चिमास्तं बुध मकर राशिमें होनेके फलस्वरूप रुईमें मन्दी आयेगी और ता० १ फरवरीमें श्रवणे १ शनि होनेसे धान्य भाव सम रहेंगे। ता० ४ में धनिष्ठायां शुक्र होनेसे सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द आदिमें तेजी तथा गेहूँमें मन्दी आयेगी। तथा फीचर ता० २९ में ४-८ तथा २ में ६-० क्रमसे सम्पन्न होंगे। ता० ४ फरवरी ८ ग्रह मकर राशिमें होनेसे आगे १-०-८ अंक—बहुतायत से सम्पन्न होंगे, माघकी स्पेशल तारीखें गुड़, अनाज, तिल-इनमें ता० २३, २४, २६, ३१ जनवरी तथा २, ५, ७, १०, १३ फरवरी।

ता० ५ फरवरीसे ११ फरवरी १९६२

इस सप्ताहमें ता० ५ में वक्री श्रवणे बुध होनेसे समस्त धान्योंमें मन्दी आयेगी और ता० ६ में श्रवणे भौम होनेसे सोना, चांदी आदि धातु तथा गेहूँ, जौ, चना आदिमें तेजी आयेगी, तथा आज ही चन्द्रदर्शन कुंभ राशिगत होने से उड़द, मूंग, मोठ, चना, अरहरमें तेजी आयेगी, तथा ता० ८ में उदय शनि मकर राशिमें होनेसे धान्य भाव मन्दे तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओंमें तेजी आयेगी और ता० ६ में कुम्भे भृगु होनेसे चांदी, रुई, गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग ज्वार आदि तथा श्वेत वस्तु व रसादि पदार्थोंमें मन्दी आयेगी और ता० १० में धनिष्ठायां २ गुरु होनेसे गेहूँ, जौ, चना आदिमें मन्दी आयेगी और फीचर ता० ५ में ८-२ तथा ता० ६ में ०-३ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० १२ से १८ फरवरी १९६२

इस सप्ताहमें ता० १२ को कुम्भमें सूर्य संक्रान्ति ४५ मुहुर्ती होनेके फलस्वरूप गेहूँ, जौ, चना तथा गुड़, खांड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल आदिमें मन्दी आयेगी, तथा यह संक्रांति अपने प्रारम्भके १० दिनोंमें विशेष असर करेगी। आज ही पूर्वोदयं बुध मकर राशिमें होनेसे २५ दिनके अन्दर रुईमें तेजी आयेगी और ता० १४ में शत० शुक्र होनेसे रुई, कपास, चावल, गुड़, खांड, घृत, सरसों, सोना, चांदी आदिमें तेजी आयेगी। फीचर ता० १२ में १-३ तथा ता० १६ में २-५ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० १९ से २५ फरवरी १९६२ ई०

इस सप्ताहमें ता० १९ को मार्गी बुध मकर राशिमें होनेसे तृण काष्ठादिमें १३ दिनके अन्दर तेजी आयेगी और ता० २० में पश्चिमोदय शुक्र कुम्भ राशिमें होनेसे गेहूँ, जौ, चना, आदि तथा गुड़, शक्कर, सरसों आदिमें तेजी आयेगी। ता० २१ में उदय भौम मकर राशिमें होनेसे चावल तथा गुड़ खांडमें तेजी आयेगी और धनिष्ठामें भौम ता० २३ में होनेसे सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु तथा गेहूँ, गुड़, शक्कर, आदिमें तेजी आयेगी और पू० भा० में शुक्र ता० २५ को होनेसे रुईमें तेजी तथा समस्त धान्योंमें मंदी आयेगी। आज ही उदय गुरु कुम्भ राशि गत होनेसे गेहूँ, जौ, चना, मटर, तथा गुड़, शक्कर, खांड, सरसों आदिमें तेजी आयेगी। फीचर ता० १९ में २-६ तथा ता० २३ में ४-८ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० २६ फरवरीसे ४ मार्च १९६२

इस सप्ताहमें कोई खास ग्रहका संक्रमण नहीं है इसलिए ता० २६ की बनी लाइन ता० १ तक गुड़, सरसों, मटर, चना आदिमें बदस्तूर चलती रहेगी और ता० २ में सार्प २ राहुः श्रवणे ४ केतु होनेसे रुईमें अच्छी तेजी तथा दुर्भिक्षकारक है। व्यापारिक वस्तुओंमें तेजी आयेगी। ता० ३ में कुम्भे भौम होनेसे समस्त अनाज तथा गुड़, खांड, सरसों आदिमें तेजी आयेगी और आज ही श्रवणे २ शनि होनेसे धान्य भाव सम रहेंगे और ता० ४ में पू० भा० में रवि होनेसे सोना, चांदी, रुई, सूत, चावल, गेहूँ, खांड, तिल तैल, सरसों, ज्वार, घृत, तथा ऊनी वस्त्र आदिमें तेजी आयेगी और फीचर ता० २६ में ५-९ तथा ता० २ में ७-१ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० ५ से ११ मार्च १९६२

इस सप्ताहमें ता० ५ मार्चको धनिष्ठामें बुध होनेसे सोना चांदी, धान्य आदिमें मंदी तथा चावल आदिमें तेजी आयेगी और आज ही मीनमें शुक्र होनेसे सभी प्रकारके धान्य तिलहन, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, गुड़, खांडमें मंदी आयेगी। और ता० ७ में चन्द्रदर्शन मीन राशिमें होनेसे धान्य आदिमें मंदी व रुईमें मंदी आकर बादमें तेजी आयेगी। ता० ८ में उ० भा० में शुक्र होनेसे रुई, कपास, चावल, नमक, सोना, चांदी, गुड़, खांड आदिमें मंदी आयेगी और ता० ११ में कुम्भमें बुध होनेसे घृत तेलमें मंदी आयेगी। आज ही धनिष्ठामें ४ गुरु होनेसे गेहूँ, जौ, चना आदिमें मंदी जायेगी। फीचर ता० ५ में तथा ता० ९ में १-३ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० १२ से १८ मार्च १९६२ ई०

इस सप्ताहमें ता० १२ में शततारकामें भौम होनेसे चांदी रुई आदिमें पहले मंदी आकर बादमें तेजी आयेगी। ता० १४ में मीनेऽर्क संक्रान्ति १५ मुहर्ती होनेसे सोना, चांदी, घृत, तेल तिल, सरसों लाही, अलसी, गुड़, खांड आदिमें तेजी आयेगी। यह संक्रांति अपने अन्तिम १० दिनोंमें विशेष प्रभाव दिखायेगी। शत. में बुध ता० १५ में होनेसे सोना चांदीमें अच्छी मंदी आयेगी। ता० १७ में उ० भा० में सूर्य होनेसे सोना, चांदी, रुई, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूँमें तेजी आयेगी और रेवतीमें शुक्र ता० १८ होनेसे चावल, गुड़, खांड आदिमें मंदी आयेगी। फीचर ता० १२ में २-४ तथा ता० १६ में १-४ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० १९ से २५ मार्च १९६२ ई०

इस सप्ताहमें कोई खास ग्रहका संक्रमण नहीं है, इस लिए ता० १९ की बनी लाइन ही गुड़, शक्कर, सरसों, तेल तिल, मटर आदिमें बदस्तूर चलती रहेगी और ता० २४ में पू० भा० में बुध होनेसे सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातु में तथा समस्त धान्योंमें मंदी आयेगी। ता० २५ में शत० १ में गुरु होनेसे गेहूँ, सोना, केशर, मजीठ, हल्दी आदिमें मन्दी आयेगी। फीचर ता० १९ में २-६ तथा ता० २३ में ४-८ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

ता० २६ मार्चसे ४ अप्रैल १९६२ ई०

ता० २९ को पू० भा० में भौम होनेसे सोना, चांदी, अलसी, सरसों, तिल, मूंगफली, नारियल, सुपारी, तेल, रुई, कपास, सूत आदिमें तेजी आयेगी। आज ही मेषमें शुक्र होनेसे सर्व वस्तुओंमें मंदी आयेगी और ता० ३० में मीनमें बुध रुईमें तेजी तथा गेहूँ, गुड़, खांड आदिमें मंदी आयेगी। ता० ३१ में रेवतीमें रवि होनेसे चावल, चांदी, सरसों, अलसी, लाख, गेहूँ, जौ, चना आदिमें तेजी

श्रीशंकर व्यापार-भविष्य

[ले०—श्री पं० शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य, हनुमानगंज, फीरोजाबाद उ० प्र०]

अष्ट ग्रहयोग पर अपने विचार

भारतवर्षके समस्त दैवज्ञ ज्योतिषाचार्योंने अष्ट ग्रहोंके सम्बन्धमें अपने-अपने विचार स्पष्ट किये हैं। मेरा भी जो विचार है वह पाठकगणके समक्ष स्पष्ट कर रहा हूँ।

अष्टग्रहयोगके अलावा सन् ६० से ६५ तक अन्य योग भी बने हैं, जिनका नेष्ट फल अष्टग्रहोंके तुल्य है।

(१) गुरु शनिका योग ६० वर्ष उपरान्त मकर राशि पर सन् ६१ से बना है. इसी योग पर अतिवृष्टि अनावृष्टि दुर्भिक्ष, भूकम्प, अराजकता, युद्ध, महामारी अन्य उपद्रवों द्वारा असंख्य जन-धनकी हानि होती है। 'ज्योतिष्मती' के ग्रीष्मांकमें हम इस योगका स्पष्ट विवरण लिख चुके हैं।

(२) दूसरा योग सन् ६१ में चन्द्र व शुक्र रोहिणी शकट भेद बन चुका है। इसका फल उपरोक्त भांति है।

तृतीय योग दीपावलीके दिन मंगल वारमें आयुष्मान् योग स्वाति नक्षत्र सन् ६१ में बना है, इस योग द्वारा वर्ष पर्यन्त धान्यादिके भाव ड्योढ़े दूने तक बन जाना सम्भव है। पौष अमावस्या कृष्णपक्षके दिन शनिवार ता० ६ जनवरी सन् १९६२ में हुई है। इसका फल बीसियों बारका अनुभव पूर्ण है कि जिस वर्ष भी ऐसा योग बनता है उस वर्ष राजकीय वातावरणमें विशेष लौट-पलट होती है, साथ-साथ धान्यादिके भाव ड्योढ़े दूने बन जाते हैं, उस वर्ष गुड़, खांड, रस-कसादि पदार्थोंके धान्यादिमें निश्चय अच्छी तेजी आती है।

(४) फरवरी सन् ६२ के प्रारम्भमें अष्टग्रही महाकाल-कूट योग बना है जोकि हजार वर्ष उपरान्त बन रहा है।

आयेगी। ता० १ अप्रैलसे उ० भा० में बुध होनेसे चांदीमें घटबढ़ तथा गुड़, खांड, रुई, धान्य, चावलका भाव सम रहेगा। ता० ४ में पूर्वास्त बुध मीन राशिमें होनेसे १० दिनके अन्दर रुईमें मन्दी आयेगी। फीचर ता० २६ में ५-६ तथा ता० २ में २-८ क्रमसे सम्पन्न होंगे।

समस्त योगायोगोंका निष्कर्ष निकालते हुए हम इस स्थिति पर पहुँचे हैं कि इस वर्ष सन् ६२ में जनवरीसे मार्च तक ओला-शीत, अतिवृष्टि, भूकम्प द्वारा धान्यादि व दालवाना व तिलहन, तेलबियांकी फसल अस्सी फी सदी नष्ट हो जानी चाहिये, प्रत्येक वस्तुके भावोंमें वृद्धि होनी चाहिये, रिपोर्ट लिखते समय समस्त वस्तुओंका भाव इस भांति है, अप्रैल सन् ६२ तककी धारणा इस प्रकार है—

नाम	मौजूदा वस्तु के भाव	नीचा	ऊंचा
रुई जरिल्ला	६७८)	६२०)	६९०) ७००)
चांदी	२१३)	२००) २०५)	२२०) २२५)
स्वर्ण	१२२)	११०) ११५)	१३०) १३२)
मूंगफली	२१५)	२१०) २०८)	२३०) २३५)
बिनौला	१००)	९५) ९०)	१०७)
अरण्डा	१७०)	१६०) १६५)	१९०) १९५)
अलसी	३९)	३५)	४४) ४७)
सरसों	३२)	२७) २८)	४०) ४२)
गुड़	१४)	११) १२)	१८) १९)

चना, मटर, चुनी, अरहर, जुवारी, चावल धान्यादि व दालवानामें ३) रु० लगायत ६) ७) रु० तक निश्चय तेजी बननेका योग प्रबल है। हाजिरके व्यापारी घटे भाव खरीद मालका स्टाक करें। वर्ष पर्यन्त भयानक दुर्भिक्ष पड़ेगा। अतिवृष्टि ओलावृष्टि, भूकम्प आदि उपद्रवोंके साथ-साथ महान् अराजकता बढ़ेगी। मार्चसे जून तक महामारी फैलेगी। वायदा व्यवसाय पर मार्जन व भारत सरकारका सख्त नियंत्रण होनेके कारण तेजी अधिक नहीं बढ़ेगी, किन्तु हाजिरका व्यापार करनेवाले व्यापारी इस वर्ष निश्चय अच्छी मात्रामें धन उपार्जन करेंगे। विशेष जानकारीके लिये जवाबी पत्र भेजकर हमारा परामर्श लेते रहें।

व्यापारी वर्गकी रुचिके अनुसार ता० २२ जनवरी से ७ फरवरी तक पन्द्रह दिनकी दैनिक लाइन नीचे स्पष्ट की

जाती है। यदि इससे व्यापारियोंको लाभ हुआ और मांग आई तो आगे पूरे ३ मासकी दैनिक लाईन देंगे।

ता० २२ जनवरी सोमवार आज २३।१० पर सूर्य-शनिकी अंशात्मक युति बनी है जो कि अरण्डा, अलसी, सरसों, तेल मूंगफलीमें अच्छी तेजीकी सूचक है। ता० २ में मन्दी बने, उस आई मन्दी खरीदो, या ३१ जनवरी तककी तेजी लगा दो, ग्रहयोग दुतरफा प्रबल है। आज ही १२।२६ से चन्द्र राहुका अंशात्मक योग बना है, धान्यादि गुड़, खांडमें तेजीका सूचक है, घटे खरीदकर बन्द तक नफा उठाकर डबल कर दो।

ता० २३ जनवरी मंगलवार—आज बुध नैपच्यूनका १०।२० पर प्रतियोग बना है। रात्रिको २२।३६ पर शुक्र-शनि अंशात्मक युति बनी है, आज मार्केटमें मन्दीके रियक्सनोंके साथ अच्छी तेजी बनेगी। रुई, कपासिया, चांदी, स्वर्ण, तेलबियां धान्यादि दालवाना यथाशक्ति घटे भाव खरीदो, जनरल रुख तेजीका रहेगा।

२४ जनवरी बुधवार—आज सूर्यका बुध, हर्षल, केतु से वेध अर्धरात्रीसे बन गया है और शुक्रका बुध-हर्षल केतुसे वेध प्रातः ७॥ बजेसे बन जाता है। आज १॥ बजे तक रुई, कपासिया, चांदी, स्वर्ण, शेयर, तेलबियां धान्यादि व दालवाना गुड़, खांड घटे भाव खरीदो। समस्त वस्तु मात्र पर जनरल रुख तेजीका बनेगा।

२५ जनवरी गुरुवार—शेयर, रुई, कपासिया तेजीमें बेचो, तेलबियां, चांदी, स्वर्ण, गुड़ खांड घटे खरीदो।

२६ जनवरी शुक्रवार— गुरुका वेध राहुसे बना है, जो कि २६ मार्च तक चलेगा, चांदी, स्वर्ण, रुई, कपासिया, तेलबियांमें अच्छी तेजीका सूचक बनेगा। गुरु, केतु का वेध नवम्बरसे बना था जो आज समाप्त हो गया, इस वेधके कारण समस्त वस्तुओंमें अच्छी तेजी आई थी, वही वेध पुनः बनता है। लिहाजा मेरा विचार तेजीका है। आज २॥ बजे तक रुई, कपासिया, चांदी, स्वर्ण धान्यादि खरीदो, रात्रि तक तेजी बनेगी।

२७ जनवरी शनिवार—आज गुरु अस्त हो गया है, आज ही बुधका गुरु, शुक्र, राहु, नैपच्यून, सूर्यसे वेध बना है, प्रातः ७॥ बजे सूर्य शुक्रकी अंशात्मक युति बनी है और गुरुका वेध नैपच्यून, शुक्र, सूर्य, राहुसे अर्धरात्रिसे बन गया है। रात्रिके ८।५६ पर बुध वक्री हो गया है, बुध-हर्षल प्रतियोग २१।२२ पर बनता है, उपरोक्त योगों द्वारा चांदी स्वर्णमें तूफानी तेजी फरवरीके अन्त तक बन जाती है। शेयर आज घटे भाव खरीदो, ता० ३१ तक घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी। रुई, कपास, गुड़, खांड धान्यादि दालवाना तेलबियां समस्त वस्तु मात्र पर ता० ३१ जनवरी तक जनरल रुख तेजीका रहेगा। भारी वर्षा, हिमपात, ओलावृष्टि, भूकम्पके कारण यत्र-तत्र फसल यहांसे नष्ट होगी। जन-धनकी विशेष हानि होगी।

२६ जनवरी चन्द्रवार—आज प्रातः से ता० २७ जनवरीकी भांति ही लाइन चलेगी, मेरा ध्यान तेजीका सायं ५ बजे शुक्र प्लुटोका षडष्टक योग बना है। जो कि पिछली बनी लाइनको पलट देगा। चांदी, स्वर्ण, शेयरमें प्रातः से अच्छी तेजी बनेगी।

३० जनवरी मंगलवार—आज सूर्य, हर्षल, नेपच्यून, वेध ता० २ फरवरी तकके लिये बना है, जो कि चांदी, स्वर्णमें तेजी। रुई कपास, शेयरमें तेजीसे मन्दी। दालवाना धान्यादि व तिलहनमें मन्दीका सूचक बनेगा। प्रातः खुलते बाजार बेचान करके २। बजे तक खरीदो। वस्तुओंमें रात्रि तक तेजी बनेगी।

३१ जनवरी बुधवार—आज प्रातः से चांदी, स्वर्ण खरीदो। शेयर, रुई, कपासिया धान्यादि दालवानामें आई तेजी बेचो, मार्केट उछल-उछलकर टूटता जायगा। बन्द बाजार पर मन्दी बनेगी।

१ फरवरी गुरुवार—आज ४।२२ पर मंगल-हर्षल, षडष्टक योग बना है, सायं १८।५० पर शुक्र-नेपच्यूनका केन्द्र योग बना है, ग्रहयोग दुतरफा प्रबल हैं, खुलते बाजार समस्त वस्तु मात्रका बेचान कर दो, शेयरमें आज तूफानी मन्दी बनेगी, धान्यादि दालवाना, गुड़, खांडमें तेजी आवेगी, तेलबियां घटे खरीदो, अच्छी तेजी बनेगी।

२ फरवरी भृगुवार—उपरोक्त वस्तुओंमें कलकी बनी लाइन आज भी चलेगी, शेयरमें इकतरफा मन्दी बनेगी, तेलबिया प्रातःसे बेचो, रात्रि तक मन्दी बनेगी, गुड़, खांड में तेजी बनेगी।

३ फरवरी शनिवार—सूर्य-नेपच्यून केन्द्रयोग रात्रिके

१२। बजे बन गया है। आज ही सायं ४॥ बजे गुरु राहु का समसप्तक योग बना है। यहांसे समय विश्वके लिये महान् कष्टप्रद प्रमाणित होगा। ओला शीतकी वृष्टि होगी, समस्त वस्तु मात्र पर प्रातः से मन्दी आयेगी, खुलते बेचकर बन्द तक यथाशक्ति खरीदो।

४ फरवरी रविवार—आज अर्धरात्रिके ३।३८ से दिन के ११॥ बजे तक अकल्पित घटना घटित होनी चाहिये। उपरोक्त समय विश्वके लिये नेष्ट प्रमाणित होगा। शीत हिमपात अतिवृष्टि भूकम्प आदि उपद्रवों द्वारा जन-धन की विशेष हानि होगी।

५ फरवरी चन्द्रवार—अर्धरात्रि २।४ पर चन्द्र नैपचून का केन्द्र योग, ५।४० पर सूर्य-चन्द्र युति, ७।२८ पर चन्द्र-बुध युति, ६।१५ पर चन्द्र-शुक्र युति, ६।३२ पर चन्द्र राहु समसप्तक योग, १०।३२ पर चन्द्र-गुरु की युति १२।४३ पर शुक्र राहूकी युति, १८।४७ पर सूर्य बुधकी युति, १६।३६ पर बुध हर्षल प्रतियोग बना है। लिहाजा योगायोगों पर विचार करते हुये जो कमी ता० ४ फरवरीमें रह गई है वह आज नवीन उत्पातों सहित उसकी पूर्ति होगी। आज समस्त वस्तु मात्रमें तूफानी मन्दी बनेगी। चांदी स्वर्ण शेयर दालवाना धान्यादि रुई कपासिया तेलबीयां गुड़ खांड खरीदो बन्द बाजार तक खरीदो।

६ फरवरी भौमवार—आज अर्धरात्रि १।३१ पर गुरु शुक्रकी युति, मंगलवारा चन्द्रदर्शन नवीन घटनाके श्रीगणेशका सूचक है, युद्ध आदिके बादल मंडरायेंगे, अतिवृष्टि ओला भूकम्पके कारण सर्वत्र जन-धनकी हानि होगी, उपरोक्त समस्त वस्तु मात्रमें तेजी बनेगी, प्रातः मार्केट तेज खुलेगा, या खुलकर प्रातःसे बन्द तक तेजी बनेगी।

७ फरवरी—प्रातः १०।१ पर मंगल शनिकी युति बनी है, जो कि अराजकता युद्ध क्रान्ति आदिकी सूचक है। खुलते बाजारसे मंदी बनेगी, इस मन्दीमें खरीदना। जनरल लाइन मंदीकी समाप्त हो गई है। धान्यादि व दालवाना तेल बीयां तिलहनका स्टाक करने वाले व्यापारी निश्चय इस वर्ष मालामाल बन जायेंगे, यथाशक्ति बायदा व हाजिरमें घटे भाव खरीदो।

चांस जनरल लाइन चांदी स्वर्ण—

२६ जनवरी से खरीदो, २० फरवरी तक अच्छी तेजी ५) ७) रु० तक बनेगी, बीच बीचमें मन्दीके रियक्स आते रहेंगे।

२५ फरवरी से ४ मार्च तक २) ३) तेजी।

५ मार्च से बेचो यहाँ से चांदीमें ८) १२) रु० स्वर्ण में ५) ७) रु० की मन्दी बनेगी, मार्केट उछल २ कर टूटता जायगा, यह निश्चय है कि प्रत्येक वस्तु पर अच्छी मन्दी आवेगी।

चांस शेयर—

२७ से ३० जनवरी तक घटबढ़से तेजी प्रधान रहेगी। ता० ३ से ६ फरवरी तक तूफानी तेजी। ता० १० से १४ फरवरी तक इकतरफा तेजी बनेगी। ता० २७ मार्चको घटे भाव खरीदो, ३० मार्च तक तेजी बनेगी, ता० ४ अप्रैलको बन्द बाजार तक खरीदो, ता० ७ तक तेजी खेलने वाले व्यापारी माल पैदा करेंगे।

चांस रुई कपासिया—

२२ से ३१ जनवरी तक घट बढ़से तेजी बनेगी, ता० ५ मार्चको बेचान करदो, २० मार्च तक अच्छी मन्दी बनेगी।

चांस सरसों, गुड़, खांड, चना, मटरा, जुवारी चावल, अरहर धान्यादि व दालवाना

ता० २७ से ३० जनवरी तक तेजी बनेगी।

ता० ५ से ७ फरवरी तक इकतरफा तेजी बनेगी।

ता० १० फरवरीको खरीदो, ता० १४ फरवरी तक तेजी बनेगी।

ता० १७ फरवरीको तेजीमें बेचो, १६ फरवरी तक मंदी।

ता० ६ मार्चको बेचो, १२ मार्च तक मन्दी बनेगी।

चांस अरण्डा, अलसी, तैल, मूंगफली, सरसों, सींगदाना

तेलबीयां पर जनरल रुख ता० २ मार्च तक ग्रह योगानुसार ध्यान तेजीका है। ता० २६ जनवरीसे घटे भाव खरीदें, मार्चमें नफा उठा लो।

व्यापारियोंको सावधानीका संकेत

[लेखक—श्री मदनलाल पोद्दार लक्ष्मीभवन, मुंगेर (विहार)]

जनवरी-फरवरी १९६२ में ग्रह-योग अत्यन्त उलट-पुलट करने वाला है और यह समय भी अत्यन्त उत्पात कारक एवं भारी घटा-बढ़ी करने वाला है। यहां पर थोड़ा काम बाजारके रुखको देखकर ही करनेका है। ज्योतिषके सहारे दिल खोलकर सट्टा करनेका समय नहीं है, कारण सभी ग्रह मकर राशिमें सम्मिलित होते जा रहे हैं तथा अस्त होते जा रहे हैं। ता० ९ फरवरीके बाद सभी ग्रह अलग-अलग होकर उदय होते जा रहे हैं। बहुत ग्रह तेजी करने वाले हैं तो बहुत ग्रह मन्दी करनेवाले भी। इस हालतमें कई एक अद्भुत योग लिखकर व्यापारियोंको धोखेमें डालना ठीक नहीं। सिर्फ एक योग मजबूत समझ में आता है उसीको लिखना ठीक है।

(१) ता० १५-१-६२ से ता० २८-२-६२ के भीतर बहुत घटा बढ़ी होगी। यहां पर घटा-बढ़ी होते हुये रुई ३०) ४०) रुपया, सोना २) ३) रुपया, चांदी ४) ५) रुपया तेजी जायगी। यह तेजी ता० १५ जनवरीसे २८ फरवरीके बीचमें जब भी हो जाय। बीच-बीचमें मन्दीका धमाका भी आवेगा, क्योंकि सब ग्रह अस्त हैं, तो भी मंगल शनि अस्त होने पर भी बलवान् हैं इसलिये उपरोक्त तेजी जरूर होगी।

न्यूयार्क काटन फिगर

ता० २९।३० जनवरी ५।७ क्लोज इन्दौर तेजी मंदी।

ता० ३१ जनवरी १ इन्दौर तेजी मंदी।

ता० १ फरवरी १ क्लोज इन्दौर।

ता० १६ फरवरी समान या ३ इन्दौर।

ता० २६।२७ फरवरी २।२ ओपन टू क्लोज इन्दौर तेजी मन्दी।

ता० १ मार्च १।३ इन्दौर तेज।

ता० २१ मार्चको ३, ओपन, इन्दौर तेजी मंदी।

ता० ३ अप्रैल समान या १ तेजी मंदी इन्दौर।

ता० ६ या ९ अप्रैल २।४ में ओ० टू क्लोज इन्दौर।

(२) ता० १०-३-६२ से ३०-३-६२ के भीतर रुईमें घटा-बढ़ीके साथ मन्दीका योग भी अच्छा बना है।

नोट—सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओंमें राहु के प्रभावसे एक वर्षके अन्दर-अन्दर अच्छी तेजी होगी, घटा-बढ़ीके साथ लम्बी लाइन तेजीको है।

पाट-हैशियन-बोरामें ता० १५-१-६२ से ता० २८-२-६२ के बीचमें घटा-बढ़ीसे तेजी जाना चाहिए।

इस वर्ष गेहूँ की तेजीका योग है, यह तभी सम्भव होगा जब किसी कारणवश विदेशी गेहूँ पर्याप्त मात्रामें उपलब्ध न हो। विशेष घटा-बढ़ीका समय यह है—

ता० १४, १५, १६ २३, २४, २५ जनवरी। इन तारीखोंमें घट-बढ़ विशेष होगी बाजारका रुख तेजीकी तरफ जाना चाहिये। फरवरीके पहिले सप्ताहमें या तो घटा-बढ़ी विशेष होगी या बाजार समान जायगा।

श्रीशंकर व्यापार-भविष्य

भारतवर्षमें अद्वितीय तेजी मन्दीकी वार्षिक पुस्तक जो कि दीपावली सन् ६१ से दिसम्बर सन् १९६२ ई० तककी छपकर तैयार हो गई है। जिसमें प्रत्येक वस्तुके पृथक्-पृथक् चांस गली नजराना फलित तारीखों सहित मय न्यूयार्क काटन फिगर व रोहिणी शकट भेद व अष्टग्रही महाकाल कूटयोग व क्षय मास व राशि फल व विश्व पर वायदा व हाजिरकी स्थिति १५० पृष्ठकी सन् ६१ से १९६२ तकका फला देश आप हाजिर व वायदा भविष्यकी पुस्तक में अवलोकन करेंगे। शुल्क ग्यारह रुपये। ११) मात्र है।

श्रीशंकर व्यापार-भविष्य-कार्यालय
फीरोजाबाद (आगरा)

पं० शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य
हनुमानगंज मु० पो० फीरोजाबाद उ० प्र०

रुई सोना चांदी आदि की साप्ताहिक—

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

[लेखक—ज्योतिर्भूषण, दैवज्ञरत्न श्री पं० गिरिधारीलाल शर्मा रागगढ (जयपुर)]

प्रथम सप्ताह—

पौष शुक्ला १५ ता० २० जनवरी सन् १९६२ से २७ जनवरी तक रुईमें विशेष घटबढ़से तेजी होगी। इस हफ्तेमें गेहूँ, चना और अलसीकी तेजी कोई नहीं रोक सकता, सर्वज्ञ ईश्वर है। ता० २०, २३, २४, २६ में अवश्य तेज। ता० २२, २५ में मन्दीका झटका लगेगा, वहां खरीदो।

नोट—ता० २४ जनवरीसे भयंकर उत्पात होगा। भूकम्प और युद्धका भय रहेगा। अनेकानेक देशोंकी जनता में भगदड़ रहेगी। क. स. और गकारके देश मनुष्य, वस्तु, पशु सब बड़े संकटोंमें रहेंगे। सोना-चांदीकी तेजी पराकाष्ठा पर पहुँच जायेगी। पूर्व-उत्तरके देशोंमें इतनी ठंड पड़ेगी कि हाथ पैरकी अंगुलिया बेकार हो जावेंगी।

द्वितीय सप्ताह—

ता० २८ जनवरीसे ४ फरवरी तक चांदी, सोना, हल्दी में बहुत तेजी। यही समय है ८ ग्रह-सम्मेलनका, जिसका आज कई वर्षोंसे विश्वमें आतङ्क छा रहा है। यह अपना प्रभाव दिखाये बिगर तो नहीं निकलेगा, परन्तु अष्टग्रहोंके सम्मेलनका फल यहां तो विशेष नहीं होगा। आजसे दो वर्ष बाद बड़ा भयंकर विस्फोट होगा। यहां पर तो प्राकृतिक प्रकोप होगा, जो २-३ दिनमें समाप्त हो जायेगा। पूर्व दक्षिणके देश विशेष संकटमें रहेंगे। पुर्त्तगाल, पाकिस्तान चीन जो भारतके शत्रु बन रहे हैं, इनको मुँहकी खानी पड़ेगी। अपने कियेका इनको बड़ा पश्चात्ताप होगा। रूस, अमेरिकाकी खींच-तान, पराकाष्ठा पर पहुंच जायेगी। ता० २९-३१ को अच्छी तेजी। ता० १ फरवरीको कई वस्तु बहुत मन्दी होगी—वहां खरीदो। ता० २-३ को अच्छी तेजी होगी। ता० ३ को न्यूयार्क फीचरमें बहुत तेजी ३०-४० आवेगी।

तीसरा सप्ताह—

ता० ५ से ११ फरवरी तक जिसमें ९ तक सोना-चांदी तेज होगा। रुईमें मोटी घटबढ़ होगी। ता० ५ को अच्छी तेजी। ता० ६ को घटबढ़से मन्दी। ता० ७ को २-३ बजे से तेजी। ता० ८ को सायंकाल या ९ को १२ बजे बेचो। ता० ११ तक या १२ के सायंकाल तक मन्दी होगी। ता० १३ को अच्छी घटबढ़ होगी। ता० १३-१४ को दुतरफा लगावें या मन्दी लगावें।

चौथा सप्ताह—

ता० १५ से १९ फरवरी तक घटबढ़ रहेगी। दैनिक कार्य करना ठीक है। ता० १५ को मन्दी खुलके तेजी। ता० १६ को दिन भर घटबढ़ होगी। ता० १७, १८ को साधारण तेज रहेगा।

पांचवां सप्ताह—

ता० २० से २८ फरवरी तक बढ़े भाव बेचो, जनरल ध्यान मन्दीका है। ता० २० से २४ के बीचमें १॥) २) मन्दा हो जावे वहां खरीदो। ता० २६ से २८ तक कुछ तेजीका ध्यान है।

छठा सप्ताह—

ता० १ से ६ मार्च तक ५-७ की घटबढ़ होगी। मंदी होके तेजी होगी दुतरफा लगाना अच्छा है। ता० १ को सायंकाल बेचो। ता० ३ के सायंकाल तक मन्दी नहीं भी हो तो उथल-पुथल बहुत होगी। कोई भी बाजार ठहरेगा नहीं। तेजी-मन्दीका ता० ५ को १ घण्टा देखकर काम करो, एक तरफा रहेगा। ता० ६ को मोटी घटबढ़से मन्दी।

सातवां सप्ताह—

ता० ७ से १६ मार्च तक अचूक मन्दी होगी, पहले नहीं होगी तो ता० ११ से १६ तक अवश्य होगी। ता०

७ को तेजी होगी। ता० ८ को साधारण या मन्दी। ता० ९ को दिन भर घटबढ़ रहेगी। ता० १० को एक बार भड़कके बाजार खुलेगा, वहां बेचो। १६ तक अचूक मन्दी होगी ११) २) की।

आठवां सप्ताह—

ता० १७ से २१ मार्च तक कोई खास ध्यान नहीं है, होलिकाकी धूम रहेगी। साधारण या कुछ मन्दी रहेगी।

नौवां सप्ताह—

ता० २२ से २७ मार्च तक तेजी रहेगी। ता० २८ से ३१ के १२ बजे तक मन्दी रहेगी। ता० २२, २४, २६ को तेजी रहेगी। ता० २३ और २७ को अच्छी घटबढ़ रहेगी। ता० २७ को एक बार तेजी होके मन्दी होगी। ता० २८ को कुछ तेजी होगी। ता० २९-३० को मन्दी होगी। ता० ३१ को अच्छी तेजीकी सम्भावना रहेगी।

दसवां सप्ताह—

ता० १ से ७ अप्रैल तक मंदी-तेजी दोनों होगी। ता० २ को तेजी। ता० ३ को मंदी। ता० ४ को तेजी। ता० ५ को घटबढ़ होगी, सायंकाल तेजी होगी। ता० ६ को दिन भर घटबढ़ रहेगी। अन्तिम तेजी रहेगी। ता० ७ को तेजी होके मन्दी होगी।

ग्यारहवां सप्ताह—

ता० ८ से १५ अप्रैल तक रुईमें अवश्य तेजी, सोनामें भी तेजी। ता० १२ को अवश्य तेजी चांदीमें घटबढ़ होके तेजी, पहले तेजी है। ता० १४, १५ के आस-पास मन्दी होगी। ता० १० को तेजी रहे तो तेजी करो। मन्दी रहे तो मन्दी करो। यह ध्यान ठीक रहेगा।

बारहवां सप्ताह—

ता० १६ से १९ अप्रैल तक साधारण रहेगा। कोई खास बात नहीं होगी। ता० १६ को साधारण तेजी। ता० १७ को साधारण मन्दी। ता० १८ को २-३ बजेसे तेजी। ता० १९ को सामान्यमें मन्दी रहेगी।

अष्टग्रही और ३ मासका सारांश

यह अष्टग्रह कहो या ९ ग्रह कहो तो भी अतिशयोक्ति नहीं है। क्योंकि राहु-केतु दो रूप है और नाम है। वैसे यह एक ही है, विशेष लेख नहीं बढ़ाके इतना ही पर्याप्त होगा कि ता० १६ जनवरीसे ही गोल योग बन जायेगा, वहांसे ही फल शुरू होगा। जो ५ फरवरी तक पूर्ण विस्फोट करेगा। ता० १ फरवरी से ५ तक आकाशमें और पृथ्वीमें हा-हाकार और भगदड़ रहेगी। किस कारणसे रहेगी कि भूकम्प या बर्फके रोगसे दुनिया त्रसित रहेगी। माघमें ओले और गोले वर्षते रहेंगे। ता० २१ जनवरीको गेहूँ, चना खरीदनेसे आगे दुगुना ड्योढा लाभ होगा। सर्वज्ञ ईश्वर है।

हिन्दी का एकमात्र बौद्ध मासिक पत्र

धर्मदूत

संस्कृति का अग्रदूत] [ज्ञान का प्रदीप

यदि आपको भगवान् बुद्ध की अमृतवाणी सुननी हो जिन्होंने समस्त विश्वमें भारतीय संस्कृति और सभ्यताका अमर डंका पीटा था। यदि आपको लंका, बर्मा, स्याम, नेपाल, तिब्बत, चीन, जापान आदिके अपने बौद्ध बन्धुओंसे परिचय प्राप्त करना हो और यदि आपको अपने जीवनको सुधारते हुए शान्ति एवं विश्व-बन्धुत्वकी ओर अग्रसर होना हो तो अवश्य "धर्मदूत" पढ़िये। इसमें आपको बौद्ध-संस्कृति, साहित्य, धर्म, कला, इतिहास, पुरातत्व आदिका परिचय मिलेगा तथा गणतंत्र भारतके उत्थानकी शक्ति प्राप्त होगी।

वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति का ५० न. पै.

विज्ञापन के लिए लिखें :

पता—व्यवस्थापक, 'धर्मदूत'

सारनाथ, वाराणसी

तीन मासकी तेजी मंदी

[लेखक—श्री पं० लोमेशचन्द्र ज्योतिर्विशारद, फूलियाँ कलाँ राजस्थान]

माघ मास

कृष्णा प्रतिपदासे एक सप्ताहमें गेहूँ, जौ, चावल, रस धातुएँ, अफीम, लौंग, चांदी तेज होगी । कृष्ण अष्टमी से शनैः २ सूत, कपड़ा, बिनौला, घृत, तेल, घासके वातावरणमें दो दिन मन्दी आकर अचानक बाजार तेजीकी ओर भड़केगा । रुई मन्दी होगी । फिर तीन दिन बाद भाव तेजीकी ओर अग्रसर होगा । चांदी, सोना एवं अनाज मंदे होकर अचानक तेज हो जायेंगे । कृष्णा द्वादशी एवं त्रयोदशीसे एक सप्ताहके भीतर संसारके किन्हीं भागोंमें भूकम्प, रोग, अग्निकांड, शीतलहर, घरेलू युद्धीय वातावरण आदिसे ओतप्रोत भयानक खलबली उत्पन्न होगी । इसी समय गाय, भैंस, बैल, घोड़ोंमें कितने ही प्रकारके रोग आदि भय भी व्याप्त होंगे । कई एक भागोंमें वर्षा होकर जन धनकी क्षति होगी । लिखा भी है—

विघ्नन्ति देशान्सकलान्नभश्चराः ।
सप्ताष्ट चैतैरिह कूटयोगकः ॥
मासे यस्मिन् षट्खगैरेकभस्थै ।
र्गोलो योगो वासवोऽप्यन्तमेति ॥
भूभृन्नाशो निम्नगाभिः कबन्धा ।
लोका रुद्धाः सन्त्यजेत्सूनुमम्बा ॥
गोलोयोगः सप्तवाष्टौ विहङ्गा ।
मासे यस्मिन्नेकराशि प्रयाताः ॥
अस्मिन् योगे जायते राष्ट्रपीड़ा ।
दुर्भिक्षाख्य चैवमाहः खगज्ञाः ॥३॥

माघ शुक्ला तृतीयासे समस्त अनाज, तिल, तेल, अफीम, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात आदिका बाजार एकदम तेजीकी ओर भड़केगा । कपड़ेमें कुछ मन्दीकी आशा है । शुक्ला अष्टमी व नवमीसे रुई मूंगली, तेल, धान्य मन्दीका रियक्शन देकर वापिस तेजीकी ओर जायेगा । इस सप्ताहके उत्तरार्द्धमें किराना, तेल, हींग, मेवा, सूती कपड़े, मीठे पदार्थ घास आदि तेज होंगे । नशीले एवं सुगन्धित पदार्थोंमें मन्दी होनेकी संभावना होगी । इस मासके उत्तरार्द्धमें राजस्थानमें तीव्र वायुवेग शीतलहर एवं वृष्टिकी सम्भावना की जाती है । यह मास तेजी एवं घोर अनर्गलताओंका द्योतक है ।

फाल्गुन मास

कृष्णा प्रतिपदासे उड़द, तिल एवं तैलीय पदार्थ, सूत व वस्त्र आदिमें तेजीका बोलबाला रहेगा । किरानेकी चीजों में कुछ मन्दी जायेगी । कृष्णा सप्तमीसे मैटलकी चीजें एवं फल आदिमें तेजी होगी । रुई, सोनाकी धारणा मन्दी एवं चांदीमें तेजीकी जँचती है । इस सप्ताहके उत्तरार्द्धसे ही कई एक वस्तुएँ भारी मन्दीकी ओर तेजीका उछाल खायेगी, इस योगका प्रभाव तेजी और मन्दीमें ज्वार, बाजरा, रेशम रुई, मूंग, उड़द, चना, मैटलीय वस्तुएँ धान्य मात्र और रस पदार्थमें भाव उलट फेर होनेकी आशंका है ।

फाल्गुन शुक्ला द्वितीयासे कई एक चीजोंका भाव घट कर व्यापारी समाजमें खलबली पैदा कर देगा । कई जगह खड़ी फसलोंमें नुकसान होगा । शुक्ला नवमीके आस पास के बाजारमें अनाज, घृत, तेल, रस पदार्थोंमें मन्दी देकर वापिस तेजी लायेगा । इस मासमें सैवीग वातावरण रोग एवं हानि प्रदता होगा । इस मासमें व्यापार जगत्में जल्दी ही तेजी मन्दीके कई एक रीयेक्शन आवेंगे ।

चैत्र मास

कृष्णा प्रतिपदासे कपास, रुई, कपड़ा, तेलीय पदार्थ एवं स्वर्ण आदिमें तेजी जायगी । चांदी, रुई एवं धान्य भी इस सप्ताहके उत्तरार्द्धमें तेज होंगे । कृष्णा सप्तमीसे जौ, गेहूँ, तिल, चना, उड़द एवं रसकस पदार्थ एकदम मन्दीकी ओर दौड़ जायेंगे । एकादशीके आस पास रत्न, फल, दालें, चमड़ा आदिमें तेजी जायेगी । चैत्र शुक्ला द्वितीयासे नशीले पदार्थ, मिर्ची, सुगन्धित पदार्थ तेज होंगे । इस सप्ताहके उत्तरार्द्धमें घी, तेल, चांदी, मन्दी चलकर बादमें बाजार

गोलयोग और कूट योगमें जन्म लेनेवालोंका भविष्य

[लेखकः—श्रीमदन लाल पोद्दार, लक्ष्मीभवन, मुंगेर (बिहार)]

आगामी होने वाले अष्टग्रही योगके समयमें उत्पन्न होने वाले बालकोंके सम्बन्धमें २-३ विद्वानोंके लेख पढ़ने को मिले। मैं न तो विद्वान् हूँ, न ज्योतिषी हूँ। ज्योतिष शास्त्रमें श्रद्धा रखनेके नाते इस विषयको कुछ जानता हूँ, इसलिये मैं अपना मत प्रकट करता हूँ।

जन्मकुण्डलीमें यदि सभी ग्रह जन्मलग्नसे सप्तम, दशम अथवा एकादश स्थानमें बैठ जायें तो इस योगको 'कारिका योग' कहते हैं। इसका यह फल लिखा है कि ऐसा जातक नीच वंशमें भी जन्म लेता है तो भी राजा होता है। अतः आगामी ता० ४-५ फरवरी १९६२ को प्रातः ८॥ बजे से ११॥ बजेके भीतर मीन तथा मेष लग्नमें तथा शामको ४ बजेसे ६ बजेके भीतर कर्क लग्नमें जो बालक पैदा होगा उसकी कुंडलीमें 'कारिका योग' पूर्णरूपसे लागू होगा। यहां पर एक दूसरा योग 'गोलयोग' भी ता० ३ फरवरी शामसे ५ फरवरी शाम तक रहेगा। इसका फल है ऐसा जातक धन रहित, आलसी, मूर्ख, इधर-उधर भटकने वाला अल्प आयु होता है। कारिका योग तथा गोलयोग दोनों ही ता० ४-५ फरवरीको एक साथ लागू होगा। यहां पर गोल योग केतुको छोड़कर ७ ग्रहका ही माना जायगा। फलादेशमें एक दूसरेसे पूर्ण विपरीत है, इसका यह मतलब भी हो सकता है कि ता० ४-५ फरवरीको मीन, मेष, कर्क लग्नमें जन्म लेने वालेको 'कारिका योग' का फल कुछ अंशमें मिलेगा। अन्य लग्नमें जन्म लेने वालेको 'गोलयोगका' अशुभ फल भोगना पड़ेगा।

राजयोग तथा दरिद्र-योगमें राहु केतुकी गणना नहीं की जाती है अतः १८९९ और १९३४ में ७ ग्रहका गोल योग बना था उसमें क्रमशः चन्द्रमा तथा बृहस्पति अलग था, इस कारण इस प्रकरणमें गोलयोग उक्त समय भी नहीं था, केवल संहिताके अनुसार ही गोलयोग कहा गया था। इस योगके फलकी सत्यताका अनुमान कैसे हो जबकि इसके पूर्व ऐसी जन्मकुंडलीके देखनेका अवसर ही असम्भव था। महाभारतकालमें या उसके बाद आठ ग्रहका योग कभी बना या नहीं बना कोई ठोस प्रमाण नहीं है। श्रद्धेय स्वर्गीय श्री बाबू देवकीनन्दनसिंह (बिहार प्रान्तके स्व० मुख्य मन्त्री डा० श्रीकृष्णसिंहके बड़े भ्राता) ने अपनी पुस्तक 'ज्योतिष-रत्नाकर' में लिखा है—कलियुगके प्रारम्भ समयमें गणितज्ञोंका विश्वास है कि सातों ग्रह एक राशिगत थे। यदि कलियुगका जन्म इसी गोलयोगमें था तो फिर फल भी वैसा ही मिल रहा है। भगवान् कृष्णके स्वर्गारोहणसे ही कलियुगका प्रवेश लिखा है, तब महाभारत कालमें आठ ग्रहका योग किस प्रकार हो सकता है, जबकि महाभारतके बाद ही कलियुग आरम्भ हुआ।

सन् १९६१ में फरवरी और जुलाईमें चन्द्रमा और शुक्रने रोहिणी शकट भेद किया, फरवरी १९६२ में अष्टग्रही योग ता० ३-२-६२ शामको करीब ४ बजेसे ता० ४-२-६२ शामको करीब ७ बजे तक है।

जून १९६२ में १३ दिनका पक्ष होगा।

सन् १९६३ में एक क्षय मास दो अधिक मास हो रहे हैं, इन सब योगोंको देखते हुए यही समझमें आता है कि ऐसा कुप्रभावकारी योग इसके पहिले एक साथ शायद कभी नहीं बना था। एक तरफ तो अत्यन्त अनिष्ट योगका समावेश हो रहा है, दूसरी तरफ इसके कुप्रभावको शान्त करने के लिये भारतमें जिस प्रकार यज्ञादि अनुष्ठान हो रहे हैं ऐसा शुभ शान्तिका उपाय भी शायद पहिले कभी नहीं हुआ था। बड़े-बड़े यज्ञादि द्वारा तात्कालिक ग्रहोंका विशेष अनिष्ट प्रभाव न पड़े यह भी सम्भव हो सकता है। तब इतना निःसन्देह समझमें आता है कि जनवरी-फरवरी १९६२ में बारम्बार अतिवृष्टि-उपल वृष्टि भयंकर शीत पाला पड़ना जिसके कारण फसलकी हानि तथा मनुष्य और पशुओंको कष्ट तथा मृत्यु होगी। इस वर्ष गेहूँकी तेजी का योग है, यह तभी सम्भव होगा जब किसी कारण वश विदेशी गेहूँ पर्याप्त मात्रामें उपलब्ध न हो।

थोड़ा-सा तेजीकी ओर जायेगा। सप्तमीसे स्वर्ण, धान्य, घास, दालें, मीठे पदार्थ तेज होंगे। हींग, लौंग, नारियल, सुपारी, लालचन्दन, ईलायची, कपूर, बिनौले, ऊनी वस्त्र एवं मैदलके पदार्थ अपना रुख तेजीका बनायेंगे। इस सप्ताह के अन्तमें तेल, गुड़, शक्कर, घी आदि मन्दे होकर अन्नके भावमें तेजीका रंग आयेगा। चांदी मन्दी होकर तेजीका रुख अपनायेगी।

❋ व्यापारका त्रैमासिक सङ्केत ❋

[लेखकः—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन सामुद्रिक विशेषज्ञ मैनपुरी (उ० प्र०)]

माघ मास

यहां दिनांक १२ फरवरी १९६२ ई० को सायं सूर्य देव कुंभ राशिमें आते ही शुक्रसे योग करेंगे फलस्वरूप गुड़के भावोंमें अच्छी तेजी आ सकेगी, किन्तु यहीं बुध गुरु शनि भौम योग घोर मन्दी कारक भी है, अतः ता० १० फरवरीको ही साप्ताहिक गली वस्तु मात्र पर लगावें। माघ शुक्ला ७ से चतुर्दशी तक जहां भी वर्षा, बादल, बूंद होगी वहां आगे वर्षा कालमें वह क्षेत्र समयानुकूल वर्षाको पाता रहेगा। अनेकानेक बारका परीक्षित योग है। यहां ता० ६, १२, १४, १८ फरवरीको वर्षा बहुतसे स्थानोंमें होनेकी आशा है। ता० १२ या १४ फरवरीको बुधोदय पूर्वमें संसारकी व व्यापारिक वस्तुओंकी स्थितिमें जबर्दस्त परिवर्तन करेगा। ता० १४ को वक्री नेपच्यूनसे भयानक उलट फेर होगा। ता० १४ की रातको शतभिषामें शुक्र सभी वस्तुओं को बेचनेकी सलाह देता है। माघ शुक्ला १ सोमवारी त्रयोदशी शनिवारी गेहूँके भावोंमें तेजी आवेगी। चावल भी विशेष तेज हो सकेगा। ता० १८ फरवरीकी रातको बुध मार्गी ता० १०को सवेरे शतभिषामें रवि सभी वस्तुओंमें तेजी कारक है। माघ शुक्ला ९ को रोहिणी वाले दिन वैधृति योग रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्च, रेशम, कपड़ाके भावोंमें अच्छी मन्दी लाने वाला परीक्षित योग है। माघी पूर्णिमाको मघा नक्षत्र मन्दी कारक है। शुक्ला १० मंगल वारी फाल्गुन मासमें बच्चोंको रोगसे विशेष पीड़ित करेगी।

फाल्गुन मास

कृष्णा १ को पश्चिमोदयं शुक्र (पू. फा. मनुष्यगणके नक्षत्रमें उदय) कहीं अनावृष्टि तो कहीं-कहीं घोर वर्षा होगी। नाप तौल तथा सिक्केका परिवर्तन जनताको कष्ट पहुँचावेगा। रुई, पाट, बारदाना, रेशम, कालीमिर्चमें मोटी तेजी लावेगा। अन्य सभी वस्तुओंमें जबर्दस्त परिवर्तन होगा एक दिन पहले ही साप्ताहिक गली लगावें। धूलिद्वार में उदय वर्षा नाशक है। इस मासमें वायु वेग होने पर अन्नादि पतले हो जाते हैं, इसी कारण तेजी आया करती है। मनुष्यगणमें शुक्रोदयसे सौराष्ट्रमें विग्रह, घी, अन्न, रूई, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, चांदी, सोनामें तेजी लाता है। सरसोंमें तेजी आनेके लक्षण बननेकी आशा है। ता० २१ को भौमोदय घोर वर्षा होने पर जैसी कि पूर्ण आशा है जिससे फसलको हानि हो, मोटी तेजी हर वस्तुमें आवेगी। रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्च, रेशमके भावोंमें निश्चित रूपसे अच्छी तेजी आवेगी। ता० २४ की रात्रिमें कुम्भे गुरु (गुरु हर्षल प्रतियोग) मकरे शनि केतु योग बना है। जब मर्त्यलोकका कोई नेता आता है तो उसके स्वागतार्थ सफाई, छिड़काव आदि होता है, लेकिन ये आकाश लोकके नेता हैं, अतः इनके आगमन पर बादल, वायुवेग होना भी स्वाभाविक है। चांदी, सोनामें आगे जाकर अच्छी मन्दी लावेगा। छः मासमें रुई, पाट, बारदाना, रेशमके भावोंमें अच्छी तेजी लावेगा, पिछले वर्षोंमें जब-जब आया तेजी ही लाया था, किन्तु तेलके बीज मन्दे हुये थे, यही २६ या २८ फरवरीको उदय भी होगा जोकि तेलके बीजोंमें तेजी, शेयर्स, रूई, पाट, बारदाना, रेशम, कालीमिर्चके भावोंमें अवश्य ही मन्दा लावेगा। बादल वर्षा, वायु वेग भी होगा (१ मार्च की चली लायन ता० ४ को बदल जावेगी) गुरुके उदयसे दो मासके अन्दर नेताओंमें तनातनी, दुर्भिक्षभय, धान्य तेज, गणितज्ञों (ज्योतिषी) को पीड़ा, राजपूतानामें घोर वर्षा, सोना मन्दा, चांदी तेज करता है। कृष्णा और शुक्ला ५ शनिवारी (आश्विन शुक्ला तथा कार्तिक कृष्णा सं० २०१८) अन्न तेलके बीज, गुड़, आदिमें मोटी तेजी लावे तो आश्चर्य नहीं। फा० कृष्णा ६ की वृद्धि और स्वाति नक्षत्र आगे ३ मास तक तेजी ला सकेगा। कृष्णा ६ की वृद्धिके पश्चात एकादशीका क्षय सभी वस्तुओंमें मन्दी लावेगा। कहा भी है—

जिस पखवारे तिथि बढ़े वाहीमें घटि जाय।
सभी वस्तु व्यापारकी मन्दे भाव बिकाय॥

४ मार्चको कुम्भे भौम (सूर्य गुरु शुक्र भौम योग) सभी वस्तुओंमें मंदी कारक है। ता० ५ को सायं साढ़े तीन बजे मीने शुक्र (शनि दृष्ट) चांदी, सोना, गुड़, तेलके बीज अन्नादिमें अच्छी तेजी लावेगा। मंगलवारी अमावस तेजी कारक है। आश्लेषाके द्वितीय चरणका राहु श्रवण चतुर्थ चरण केतु चांदी, सोना आदि सर्वधातु, जवाहिरात, नोट (नाणा) गेहूँ, जौ, चना सर्व धान्य, अलसी, सरसों, तिल, तेल, घी, गुड़, खांड सर्वक्षार सोडा कास्टिक, सज्जी हाईड्रोब्लीच, मजीठ, लालरंग, नारियल, (गोला गिरी) सुपारी, लौंग, इलायची, अफीम तेज। समुद्री प्रदेश तथा हिमाचलप्रदेशके समीप विग्रह होंगे। शुक्ला १ बुधवारी सभी कन्द आलू, प्याज, लहसुन, गांठ गोभी, अदरक, हल्दी, सोंठके भावोंमें क्षणिक तेजी लावेगी। तृतीया क्षयसे घी, मूंगके साथमें सभी दाल, अन्न तेज होंगे। ता० १० को सायं पांच बजे कुम्भे बुध सूर्य मंगल गुरु योग (सम्वत् २०१० में वृषस्थ सर्ववस्तु तेज—सम्वत् २०१६ में वृश्चिकस्थ सर्व वस्तु तेज) सम्वत् २००१/२००३ वर्षा कालमें सभी वस्तुओंमें मन्दा आया था विशेषकर उड़द और गेहूँ अधिक मन्दे हुए थे। यहां यह योग ता० १४ तक चलेगा। ता० १४ को मीने रवि (मंगल, बुध, गुरु योग) शनि की तीसरी दृष्टि होनेसे चांदी, सोनाके साथ सभी वस्तुओंमें अच्छी मन्दी सम्भव है, किन्तु सूर्य शुक्र योग गुड़ तेज करेगा। आज ही शामको साढ़े पांच बजे गुरु हर्षल प्रतियुति ८ जनवरी सन् ४८ की भांति होगी जोकि चांदी, सोना, तेलके बीजोंमें जबर्दस्त मन्दी, रुईमें तेजी ला सकेगी। यही योग आगे ८ अक्टूबरको बनेगा। शुक्ल पक्षमें तीन बुधवार रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्चमें भयानक तेजी या मन्दा लावेंगे। ता० १५ को शतभिषामें बुध रुई, पाट, बारदाना बम्बई बीयांमें अच्छी मन्दी लावेगा। ता० १७ की रातको उभा. में रवि सभी वस्तुओं में तेजी कारक है। शुक्ला ३ का क्षय उपरान्त त्रयोदशी की वृद्धि सभी वस्तुओंमें मन्दी कारक है। यहां रेवतीके शुक्रका समर्थन मिलेगा। मंगलवारी होली दुर्भिक्ष कारक है, साथ ही चैत्र मासमें भयंकर रोगका उपद्रव होगा। तथा पृथ्वी पर अनेकों अनहोनी दुर्घटनायें होंगी।

चैत्रमास

चैत्र मासमें पांच गुरुवार आगे वर्षाकालमें कहीं वर्षाकी कमी तो कहीं जलप्रलय हो जानेसे दुर्भिक्ष करेंगे।

यदि चैत्रे श्रावणे च भवेच्च जीवपञ्चकम्।
दुर्भिक्षं रौरवं घोरं छत्रभङ्गो न संशयः॥

ता० २४ उ. भा. में बुध २६ मार्चको शतभिषामें गुरु तेलके बीज गुड़ अन्नादि मन्दे करेगा, पहलेसे ही बेचो या मन्दी लगा दो। अन्य सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० २६ को पूभा. में भौम सभी वस्तुयें तेज करेगा। ता० २६ की रातको मेषमें शुक्र गुड़के भावोंको मन्दा करता चला जावेगा। ता० ३० को २ बजे मीने बुध (मंगल गुरु योग) सभी वस्तुयें तेज करेगा, कहीं-कहीं वर्षा भी होगी। ३१ मार्च को रेवतीका रवि समर्थक होगा। कालीमिर्च, रुई, पाट, बारदाना, चमक तेज, चांदी, सोना भी तेज होगा, तभी जबकि १४ मार्चसे मन्दी चल रही हो। ता० १ अप्रैलको ३ बजे चन्द्र-मंगल गुरु योग बनेगा, यदि यहांसे पहले तेजी चल रही होगी तो ४८ घण्टेमें जबर्दस्त मन्दा आ सकेगा। ता० ३-४ को बुधास्त पूर्वमें मार्केटमें जबर्दस्त परिवर्तन और बादल वर्षा वायुवेग भी करेगा। प्रायः प्रतिवर्ष चैत्र कृष्णा और आश्विन कृष्णामें भयानक तेजी या मन्दा होता है। संक्रान्ति अमावस एक वारी (खप्पर योग) सभी वस्तुओंमें तेजी लावेगी, चांदी, सोना भी तेज होगा। चैत्र शुक्ला १ को गुरुवार अतः वर्षेश गुरु अन्नादिके संग्रहसे आषाढ़ या भाद्रपदमें बेचनेसे अवश्य ही लाभ होगा। पश्चात् सभी वस्तुओंमें बड़ी जबर्दस्त मन्दी आवेगी। गुड़, खांड, तेल, बिनौला, हल्दी, गेहूँमें अच्छी खासी मन्दी आवेगी। सं० २०१६ में शुभग्रहोंने अधिकांश अधिकार ग्रहण किये हैं। गत वर्ष राजा शुक्र मन्त्री गुरु, इस वर्ष राजा गुरु, मन्त्री शुक्र होगा। ता० ८ को तीन बजे रेवतीमें बुध ता० ९ को सवादो बजे भरणीमें शुक्र सभी वस्तुओंमें मन्दी कारक हैं। ता० ११ को मीने भौम कुम्भमें गुरु मकरमें शनि, भौम पर शनिकी तीसरी दृष्टि एवं मंगल राहु त्रिकोण घोर तेजी खाद्य वस्तुओंमें तेलके बीज समेत होगी। भौम गुरु शनिका इस प्रकार

आता मुशल योग प्रस्तुत करता है जो कि संसारको भयानक कष्टका अनुभव करावेगा। यथा—

भौमस्याधो गुरुस्तिष्ठेद् गुर्वधोपि शनैश्चरः।
ग्रहाणां मुशलं ज्ञेयमिदं जगदरिष्टकृत् ॥

आज चैत्र शुक्ला ७ को भौमके राशि परिवर्तनसे यदि जिस क्षेत्रमें वर्षा होगी वहां श्रावण माससें किसी किसी वस्तुमें ३) मन तककी तेजी आवेगी। ता० १३ अप्रैलको रात्रिके साढ़े ग्यारह बजे श्री सूर्यदेव मेष राशिमें पहुंचेंगे। शुक्रका साथ होगा फल स्वरूप रुई, पाट, बारदाना, रेशम, कालीमिर्चमें घोर मन्दी आ सकेगी। संक्रान्ति भी गत संक्रान्तिसे तीसरे-चौथे नक्षत्रमें रात्रिको लगनेसे तेलके बीज गुड़ अन्नादिमें मन्दी लाने वाला योग है। किन्तु ता० ११ को मीने भौमका भी ध्यान रखकर व्यापार करें। ता० १५ को सवातीन बजे उभा. में भौम जलजीव और जलजीवी सोडा वाटर फैक्ट्री बर्फके व्यापारियों पर प्रतिबन्ध या कानून तथा नहर व ट्यूबबैल विभागमें कड़ाईसे काम लिया जावेगा। मशीनरी सामान तेज, पशुनाश, चांदी, सुगन्धित द्रव्य, गुड़, खांड, शक्कर, घी, खली, चावल, चन्दन, कपूर, अगर देवदारु तेज। उत्तरी हिन्दमें कहीं-कहीं विग्रह की भी सम्भावना है। चैत्री पूर्णिमा गुरुवारी चित्रा नक्षत्र सहित बड़ी मन्दी तत्काल दिखावेगी। विशेषको तो सर्वज्ञ ही जाने अतः लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा।

नोटः—१६ जनवरीको षट्ग्रही अथवा २४ जनवरीको सप्तग्रही होते ही जो लायन चलेगी वह २४ फरवरीको कुम्भे गुरु होते ही बदल जावेगी। मीन संक्रान्तिके प्रारम्भसे मन्दी सभी वस्तुओंमें आनेकी पूर्ण आशा है।

दिल्ली आयुर्वेदिक अस्पताल (चिकित्सालय)

ए न, ७४ कीर्तिनगर, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-१५

हमें यह सूचना देते हुए प्रसन्नता है कि राजवैद्य कविराज पं० राधाकृष्णजी उपाध्याय, आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरी, बी० आई० एम० एस० भूतपूर्व अधीक्षक (सुपरिण्टेन्डेन्ट) आयुर्वेदिक और यनानी चिकित्सा विभाग म्युनिस्पल कार्पोरेशन, दिल्लीने कार्पोरेशनकी सेवासे अवकाश प्राप्त कर कीर्तिनगरमें अपने नवनिर्मित निजी आरोग्य भवनमें "दिल्ली आयुर्वेदिक अस्पताल" (चिकित्सालय) की स्थापना की है।

आपके चालीस वर्षके सेवाकालमें हजारों रोगियोंने स्वास्थ्य लाभ किया तथा अनेकानेक व्यक्तियोंने असाध्य समझे जानेवाले कठिन रोगोंसे मुक्ति प्राप्तकर नवजीवनका लाभ उठाया। आपकी निदान (तशखीश) और चिकित्सा प्रणालीकी प्रशंसा न सिर्फ रोगियोंने बल्कि बड़े-बड़े अस्पतालोंके विद्वान् अधिकारी डाक्टरों तथा वैद्योंने की है।

वैद्यराजजी यकृत (जिगर-लीवर) और जलोदर सम्बन्धी रोगोंके खास विशेषज्ञ (माहिर) हैं इनकी सफल चिकित्सासे प्रभावित होकर भारत सरकार तथा म्युनिस्पल कारपोरेशनने (Cirrhosis Liver) (सिरोसिस लीवर) पर अनुसंधान (रिसर्च) के लिए विशेष धनराशिका अनुदान स्वीकार किया।

इस अस्पतालमें वैद्यराजजीने आयुर्वेदकी प्राचीन पंचकर्म चिकित्सा प्रणालीसे भी रोगियोंका इलाज करनेका प्रबन्ध किया है। इस प्रणालीसे असाध्य समझे जानेवाले कठिनसे कठिन रोगी भी स्वास्थ्य लाभ करते हैं। आप भी अपने तथा अपने मित्रोंके हर प्रकारके रोगोंके निदान व सफल चिकित्साके लिए अनुभवी वैद्यराज जीसे पत्र द्वारा परामर्श लेकर अथवा स्वयं मिलकर लाभ उठावें।

वैद्यराज जी के मिलने का समय प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक, सायं ५ बजे से ७ बजे तक।
वैद्यराज जी का फोन नम्बर ५५००६ है।

—व्यवस्थापक

त्रैमासिक पर्व व्रतादि-निर्णय

[श्री विश्वविजय पञ्चाङ्ग से]

कुम्भ महापर्व हरद्वार

बारह वर्षके उपरान्त इस त्रैमासिक अवधिके अंदर हरद्वारमें कुम्भ महापर्वका महामेला होगा। कुम्भ राशिके देव गुरुमें जिस दिन भगवान् भास्कर मेष राशिमें प्रवेश करते हैं उस दिन हरद्वारमें यह महापर्व बनता है। इस वर्ष चैत्र शुक्ला ६ (श्रीरामनवमी) शुक्रवार दि० १३ अप्रैल १६६२ राष्ट्रियमिति २३ चैत्र शके १८८४ को हरद्वारमें इस महापर्वका मुख्य स्नान होगा। अतः धर्म-प्राण जनताको इस महापर्व पर हरिद्वार पहुँचकर पर्वस्नान, तिल-तण्डुल स्वर्ण-रजत वस्त्रादि दान अथवा घृत-पूरित घट (कुम्भ) दान यथाशक्ति करके पुण्योपार्जन करना चाहिए। इस महापर्वमें स्नान दान जपादिका अक्षय फल शास्त्रकारों ने लिखा है—

कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगे रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम्॥

इस कुम्भ महापर्वका प्रारम्भ प्रथम स्नान हरिद्वारमें सं० २०१८ फाल्गुन कृष्णा १३ रविवार श्रीमहाशिवरात्रि दि० ४ मार्च १६६२ ई० से होगा और चैत्र शु० १५ गुरुवार दि० १६६२ को मेलेका अन्तिम स्नान होगा। जो अशक्तजन अपरिमित भीड़के भयसे मुख्यपर्व पर १३ अप्रैलको हरिद्वार न पहुँच सकें वे श्रीमहाशिवरात्रिसे चैत्री पूर्णिमा तक किसी भी दिन भगवती भागीरथीके तट पर पहुँच कर अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर सकते हैं।

जनवरी १६६२ ई०

ता० २० शनिवार—पौषीपूर्णिमा सत्यव्रत माघस्नानारंभ
२३ मंगलवार—नेताजी श्रीसुभाषचन्द्र वसु जन्मदिन।
२४ बुधवार—संकट हारिणी श्रीगणेश चौथव्रत चंद्रोदय रात्रिमें स्टे. टा. ६।१८
२६ शुक्रवार—भारतीय गणराज्य महोत्सव।
२८ रविवार—श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती।
३० मंगलवार—श्रीमहात्मा गांधी निधन दिन।

फरवरी १६६२

ता० १ गुरुवार—षट्तिला एकादशी व्रत।
२ शुक्रवार—प्रदोष व्रत।
४ रविवार—मौनी अमावस अर्धोदय अष्टग्रहीपर्व प्रयाग-स्नान, श्रीआदिनाथ जयन्ती।
६ मंगलवार—चन्द्रदर्शन।
८ गुरुवार—तिलचौथ।
६ शुक्रवार—वसन्तपंचमी श्री ५ जैन रथोत्सव।
११ रविवार—रथ ७ भानुसप्तमी अचला ७।
१२ सोमवार—कुम्भसंक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल ११।८ से
१५ गुरुवार—जया एकादशी व्रत।
१६ शुक्रवार—प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी।
१६ सोमवार—माघी पूर्णिमा सत्यव्रत माघस्नान समाप्ति
२३ शुक्रवार—श्रीगणेश चौथव्रत चन्द्रोदय रात्रि ६।४१
२८ बुधवार—श्रीसमर्थ रामदास जयन्ती।

मार्च १६६२ ई०

ता० २ शुक्रवार—विजया एकादशीव्रत स्मार्त्तों का।
३ शनिवार—वैष्णवसम्प्रदायका एकादशी व्रत।
४ रविवार—प्रदोषव्रत श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत।
६ मंगलवार—अमावस्या।
७ बुधवार—चन्द्रदर्शन।
८ गुरुवार—फुलरिया दूज।
१३ मंगलवार—होलाष्टकारम्भ जैनपर्व अष्टाह्निकव्रतारंभ
१४ बुधवार—मीनसंक्रांति मु० १५ पुण्यकाल ८।१३ से।
१६ शुक्रवार—आमला एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका।
१७ शनिवार—वैष्णवसम्प्रदायका ११ व्रत।
१८ रविवार—प्रदोष व्रत।
२० मंगलवार—होलिका दहन, हुताशनी १५, सत्यव्रत।
२१ बुधवार—धूलिवन्दन छारंडी विषुवदिन।
२२ गुरुवार—होला १ मेला आनन्दपुर पंजाब।

२३ शुक्रवार—श्री संत तुकाराम जयन्ती । गुडफ्रायडे ।
२४ शनिवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय ६।२३
२५ रविवार—ईस्टर सण्डे ।
२६ सोमवार—रंगपंचमी ।
२८ बुधवार—शीतला सप्तमी ।

अप्रैल १९६२ ई०

ता० १ रविवार—पापमोचनी एकादशी व्रत ।
२ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत ।
३ मंगलवार—मेला पृथूदक (पिहोवा कुरुक्षेत्र)
४ बुधवार—अमावस्या, चांद्रसंवत्सर समाप्ति ।
५ गुरुवार—नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, श्रीगौतमजयन्ती
६ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन ।
७ शनिवार—गणगौरी पूजन श्रीमत्स्यजयन्ती ।
१२ गुरुवार—श्रीदुर्गाष्टमी, मेला श्रीमनसादेवी ।
१३ शुक्रवार—श्रीरामनौमी व्रत कुम्भमहापर्व हरिद्वार । मेषसंक्रांति मु० १५ मेला वैशाखी ।
१५ रविवार—कामदा एकादशी व्रत ।
१७ मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत श्रीजैनमहावीर जयन्ती अनंग त्रयोदशी ।
१९ गुरुवार—चैत्री पूर्णिमा, सत्यव्रत, सिद्धाचलयात्रा ।

—

संसार-दीपक

सं० २०१९ का 'संसारदीपक' यानि (भविष्यफल भास्कर) छप रहा है । जो सदैवकी भांति अपनी शत-प्रतिशत भविष्यवाणियोंसे सुसम्पन्न होके फरवरीके अंतिम सप्ताहमें पाठकोंको प्राप्त होगा जो समर्घ महर्घ और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बतलानेमें अग्रगण्य रहा है । सं० २०१७-१८ का भविष्यफल देखो गोवाके लिये क्या लिखा है । और अष्टग्रहोंके लिये क्या लिखा हैं । अपने मुँहसे अपनी बड़ाई करना शोभा नहीं देता । आप भविष्यफल देखेंगे जब मालूम होगा ।

मूल्य २) रु०, डाक खर्च अलग ।

पता—पं० नरहरि रामकुमार शर्मा
श्रीगंगा मन्दिर पो० रामगढ़ (जयपुर)

ज्योतिषशास्त्रका रहस्यमय स्कन्धत्रयात्मक ग्रंथ

'ज्योतिस्तत्व'

मूलग्रन्थकार—आचार्य श्रीमुकुन्द दैवज्ञ

भाष्यकार-ज्योतिषाचार्य पं० चक्रधर जोशी

यह महान् ग्रंथ दो भागोंमें विभक्त है । प्रत्येक भाग आठ सौ पृष्ठोंका है । सम्पूर्ण ग्रंन्थमें लगभग ८ हजार मूलश्लोक हैं, जिनमें ज्योतिष शास्त्रके २५० ग्रन्थोंका सार है । ज्योतिष-शास्त्रके प्रधान तीन अङ्गों—सिद्धान्त, संहिता और होरा—का तत्व ग्रहण कर इस महान् ग्रन्थकी रचना की गयी है ।

इसके सिद्धांत भागमें—ज्योतिषशास्त्रके व्यवहारमें आने वाले गणितमात्र, प्राचीन अर्वाचीन अनेक प्रणालियों द्वारा इष्टकाल-संशोधन एवं सूक्ष्मतम गणित द्वारा ग्रहोंका स्पष्टीकरण किया गया है ।

होरा विभागमें—राशिशील, ग्रहशीलसे लेकर द्वादश-भावों की सूक्ष्मतम विवेचनामें ५ हजार श्लोकोंका समावेश किया गया है—जो ज्योतिषके फल विभागकी क्रान्ति कही जा सकती है । फलादेशके सम्बन्धमें ऐसा अपूर्व ग्रंथ आज तक देखा तक नहीं गया ।

संहिता विभागमें—वृष्टि और समर्घ-महर्घ (तेजी-मंदी) का इतने विस्तारसे विवेचन किया गया है जो व्यापार जगत के लिए अचूक परिणामप्रद है । इसके आधार पर व्यापार करने वालोंको कभी निराशा या निष्फलता नहीं हो सकती । गणित एवं उदाहरणके सहित इनकी प्रयोगात्मक विधि इतनी सरल की गई है कि सर्वसाधारण भी उसका उपयोग कर सकता है ।

इस ग्रन्थका निर्माण ऐसे सरल ढंगसे किया गया है कि इस एक मात्र ग्रन्थके पास होने पर अन्य ग्रन्थोंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी, यह निर्विवाद सिद्ध है ।

पृष्ठ संख्या १६००, मूल्य (पूर्वार्द्ध-उत्तरार्द्ध)
दोनों खण्डोंका ५०) रु०

प्राप्ति-स्थान—मुकन्दाश्रम ज्योतिस्तत्व कार्यालय,
पो० अमोल (गढ़वाल U.P.)

साहित्य-समीक्षा

[समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां आनी आवश्यक हैं। एक प्रतिसे समालोचना नहीं होगी, केवल प्राप्ति स्वीकारमें नाम-मात्र प्रकाशित होगा। —सम्पादक]

'जन्मभूमि पंचांग' (गुजराती) सं० २०१८ वि० कार्तिकादि

सम्पादक—श्री अमृतलाल लक्ष्मीचन्द शाह, पं० कृष्णाजी विट्ठल सोमण और श्री लक्ष्मीप्रसाद मो० बारोट, प्रकाशक—जन्मभूमिप्रकाशन-मन्दिर, घोघास्ट्रीट बम्बई—१ मूल्य १.७५

'जन्मभूमि-पंचाङ्ग' ज्योतिष-जगत्में अपना विशेष स्थान रखता है। सूक्ष्मदृश्य दैनिक ग्रह, क्रांति शार ग्रहोंके अंशात्मक योग एवं अन्य बहुतसे गणित-फलित सम्बन्धी विषयोंसे सुसज्जित यह बृहत्काय पंचाङ्ग ज्योतिषियोंके लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। गत वर्षसे इस पंचाङ्गमें प्रति वर्ष विगत दशदश वर्षके साप्ताहिक ग्रह स्पष्ट (७-७ दिनके अन्तर पर) दिए जा रहे हैं, जो जन्मपत्र्यादि निर्माणके लिए परमोपयोगी हैं।

इसके फलित-विभाग (विशेषतः संशोधन विभाग) की अपनी विशिष्टता है। इसमें कई विवादास्पद एवं अस्पष्ट फलित सिद्धान्तोंका तात्त्विक विशकलन, वैदुष्यपूर्ण ढंगसे किया गया है। इस वर्ष 'अष्टग्रही' योग पर प्रकाशित लेख-माला वस्तुतः अध्येय है। प्रतिवर्ष नए-नए आधुनिक ज्योतिष सम्बन्धी विषयोंका परिचय देते हुए यह पंचांग उत्तरोत्तर लोकप्रिय बनता जा रहा है।

घट्यात्मक कालको अव्यावहारिक मानते हुए विज्ञ-सम्पादकोंने लगभग सभी जगह घण्टा मिनटों (I. S. T.) का ही प्रयोग किया है जो सर्वथा उपयुक्त है। जबकि तिथ्यादिके समाप्तिकाल I. S. T. में दिए गए हैं तो उनका स्थानीय सूर्योदयसे घट्यादि इष्ट कालमें भी निर्देश करना कोई उपयोगिता नहीं रखता। क्योंकि धार्मिक कृत्यकलापका निर्णय घण्टा मिनटोंमें दिए गए समाप्ति कालोंसे भी ज्ञात किया जा सकता है। घट्यादि इष्टकालका विरोध करते हुए इष्टकाल से लग्न स्पष्ट करनेकी विधि बतलाना वदतो-व्याघात ही प्रतीत होता है।

किञ्च जहां बम्बईके सूर्योदयास्त आदि स्थलोंमें सेकण्ड तककी सूक्ष्मताके लिए प्रयास किया गया है—वहां दूसरी ओर भौम आदि ग्रहोंकी विकलाओंको उपेक्षित कर सूक्ष्मताका त्याग किया गया है। यदि मान लिया जाए कि फलितमें विकलाएं उपेक्ष्य हो सकती हैं तो सूर्य एवं चन्द्रको विकलान्त निर्दिष्ट करना कोई महत्व नहीं रखता। सूक्ष्मताकी दृष्टिसे शीघ्रगति ग्रहोंकी विकलाएँ उतना महत्व नहीं रखती जितना कि मन्दगति ग्रहोंकी विकलाएँ। ३ कला गति वाले ग्रहकी आधी कलाकी उपेक्षासे आकाशमें उसकी स्थितिके कालका ज्ञान ४ घंटा व्यभिचरित हो जाएगा।

यह पंचांग कार्तिकादि है अर्थात् कार्तिक शुक्ला १ से प्रारम्भ होता है। पर्वव्रतादि निर्णयमें कहीं-कहीं भारी असावधानीसे जनतामें मतिभ्रम हो सकता है—जैसे इस पंचांगमें आगामी वर्षकी दीपमाला लक्ष्मीपूजन का. कृ. ३० रविवार २८ अक्टूबर १९६२ को लिखा है, जबकि होना चाहिए चतुर्दशी शनिवारको। प्रदोष और निशीथ व्यापिनी अमा. शनिवार २७ अक्टूबरको ही है, इसके अनेक प्रमाण हैं। अच्छा हो आगामी वर्षके 'जन्मभूमि पंचांग' में (जो दीपमालासे पहले ही छप जावेगा) विद्वान् सम्पादक इसका संशोधन कर दें।

इस पंचांगमें गुजराती एवं देवनागरी टाइपका सांकर्य शोभा नहीं देता। अच्छा हो इसे आमूलचूड़ देवनागरी टाइपमें ही प्रकाशित किया जाए। गुजराती एवं हिन्दी दोनों भाषाओंका उपयोग पंचांगको दोनों भाषाओंके वेत्ताओंके लिए उपयोगी बनानेके लिए किया गया है। परन्तु पंचांगकारोंकी हिन्दीकी ओर यह प्रवृत्ति इस पंचांग को राष्ट्रभाषामय बना देगी। ऐसा हमें विश्वास है।

सुव्यवस्थित, सुसम्पादित नवीनतम ज्योतिष-सामग्री से परिपूर्ण यह पंचांग ज्योतिषियोंके ज्ञानवर्धनका उत्कृष्ट साधन है।

—प्रियव्रत ज्योतिषाचार्य

[पृष्ठ १६ का शेष]

चतुर्थका स्वामी बृहस्पति पुनः बाधित है, किन्तु चतुर्थ ७वें, ८वें, ९वें घरका स्वामी है। 'भूमिकारक' मंगल ४ से १२वें में हैं। कृषि कर इससे लाभान्वित होंगे, परन्तु किसान आन्दोलन होंगे। गुजरात, केरल, और उत्तरी मैसूर के किसान सरकारसे संघर्ष करेंगे। सरकारकी भूमि नीति कल्पना शून्य रहेगी। ५मका स्वामी मंगल शनि युक्त लग्न में 'मांदी' के साथ है, इधर छठेका स्वामी शुक्र अश्विनीके त्रितारक मंगलीय क्षेत्रमें है। अतः हृदय विकार उदर-विकारसे, विशेषतः विशाखाके चांद्र मासमें (४-५-१९६२ से २-६-१९६२ तक) बड़ी संख्यामें मृत्युएं होंगी। क्योंकि तीसरे चन्द्र दिनका मंगलके नक्षत्र समूहसे योग हो रहा है, और इसमें पांच शनिवार होंगे। देशके बहुतसे भागोंमें महामारी फैलेगी। भारी प्रदर्शन होंगे, सरकारसे टक्कर होगी और शान्ति भंग होगी, विशेषतः मध्यप्रदेश, केरल, उत्तर-पश्चिम भारत, असम, पश्चिमी भारतमें। बस, रेल और नौ दुर्घटनाओंमें लोग भारी संख्यामें मरेंगे। इस वर्ष के स्वामी मेवका नाम 'नील' होगा इसका जन्म मेरुके दक्षिण पश्चिममें होगा। यह अच्छी वर्षा और अच्छी फसलका सूचक है। जूनके अन्तिम भागमें भारी वर्षा होगी, साथ ही तूफान भी आएंगे। वर्षा ऋतुमें गंगा गोदावरी सदृश बड़ी नदियोंमें बाढ़ें आएंगी किन्तु बाढ़से हानि पिछले साल की तरह अधिक न होगी। उत्तर-पूर्वका मधुवात (मानसून) बहुत सक्रिय होगा और देशका बहुत-सा भाग जलमग्न होगा 'भानुना पवनो वाति'' के अनुसार चांद्र ज्येष्ठ मासमें आंधी और प्रभंजनसे भारी विपत्ती आयगी। गर्मी तेज पड़ेगी, आंधी और प्रवातसे भारी हानि होगी। महामारी, रोगों और अकालके कारण बड़ी संख्यामें जीव हानि होगी। भूकम्प आवेंगे, ऋतुमें जल्दी-परिवर्तन, और आंधियां सदृश प्राकृतिक विपत्तियोंके कारण धन-जनका भारी नुकसान होगा। चांद्र मास कार्तिक (२८-१०-१९६२ से २७-११-१९६२ तक) एक या दो कारखाने आगसे भस्म होंगे, और गुजरात भयंकर व्याधिसे पीड़ित होगा। मईमें एक आय करसे अपवंचनके एक बड़े मामलेका पता चलेगा। सफल सट्टे पर एक विचित्र कर सम्भवतः लगेगा।

प्रधान मंत्रीकी कुण्डलीमें ९ वें में चंचल बुध, और १२ वें में राहू है। (आप इस समय राहू दशा और बुध भुक्तिमें हैं) अतः आप दैशिक और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का ठीक-ठीक सामना न कर सकेंगे। क्योंकि नए वर्षकी कुण्डलीमें नौवेंका स्वामी सूर्य और १०वें का स्वामी बुध ४थे (गृह मोर्चा) में है। सम्भव है नई दिल्ली घोषणा करे कि वह पंजाबी राज्यको सिद्धान्ततः स्वीकार करती है। अमृतसरमें सिंह नवांश उदय हो रहा है और मंगल योगकारक १० वें में है। प्रधानमंत्रीकी कुण्डलीका प्रभाव और इस बातके कारण उत्तरमें काश्मीर मुस्लिम बहुल राज्य है, और नागालैण्ड ईसाई बहुल राज्य है। सिखोंका अपना राज्य होनेकी मांगको मान लेंगे। जुलाईमें सूर्यग्रहण कर्कमें होगा और प्रधानमंत्री पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। उनको अपने स्वास्थ्य और अपनी सुरक्षाकी ओर विशेष रूपसे ध्यान देना चाहिए।

७वें का स्वामी बुध दुर्बल है और शनि नक्षत्र समूह में है। बुध उभय लिंगी है और तटस्थ ग्रह है। हमारी तटस्थताकी नीतिमें भारी परिवर्तन होगा और हम विचार आदर्शसे अधिकाधिक पश्चिमकी ओर झुकते जाएंगे। नई दिल्ली प्रस्तावोंके मसविदे बनाने और महत्वपूर्ण विश्व-समस्याओं पर अनिश्चित सिद्धान्तोंकी घोषणा करने मात्रसे सन्तुष्ट न होगी। हमारे देशकी सीमाका चीनी और अधिक अतिक्रमण करेंगे। यदि हम इस समय देश रक्षाके लिए दृढ़ और उचित नीति ग्रहण न करेंगे और इस भ्रमको दूर न करेंगे कि सीमा समस्या मैत्रीपूर्ण वार्तासे हल हो सकती है तो पड़ौसी चीनसे युद्ध होना सम्भव है। पाकिस्तानके साथ हमारा सम्बन्ध सुधरेगा नहीं। पाकिस्तानका रवैया भारतके प्रति और अधिक कठोर होगा। निस्सन्देह चीनी राजनयज्ञ शान्तिपूर्ण वार्ता द्वारा सीमा समस्याको हल करनेका संकेत देंगे, किन्तु यह भारत पर और नया आक्रमण करनेकी सूचना होगी। चीनी राजनयज्ञोंके धोखेमें हमें न पड़ना चाहिए।

१०वें का स्वामी बुध कुछ कुछ १० वें पर पड़ रही मंगलकी दृष्टिसे ग्रसित है। नवांशमें १० वें में केतु है। १०

वें का ग्रसित होना इस बातका सूचक है कि दैशिक और अन्तर्राष्ट्रीय विकट परिस्थितिका सामना करनेके लिए सरकार विशेष अधिकार लेगी। संविधानमें संशोधन होगा। दिल्ली का ८वां घर राहूकी स्थितिसे ग्रस्त है और इसका बुध नक्षत्र समूहसे सम्बन्ध है। इसका अर्थ है कि कर्कके मंगलीय संक्रमणके समय एक राष्ट्रपुरुष धराधामसे उठ जायगा। ब्रिटेनसे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण न होंगे, किन्तु सम्बन्ध बढ़ानेके कारण बढ़ेंगे। हमारी सरकारके लिए दोनों शक्तियों के मध्य सन्तुलन रखना सम्भव न होगा, जो कि इस समय वह कर रही है। कम्युनिस्टोंको भारी धक्का लगेगा। इन सब विपत्तियोंके होते हुए भी भारतको बहुत क्षति न होगी।

पाकिस्तान नेपाल बर्मा और सीलोन

दिल्ली और कराचीका लग्न एक ही है, किन्तु नवांश लग्न केतुसे ग्रसित है। अतः पाकिस्तानमें अस्थिरता रहेगी। कर्कमें मंगलीय संक्रमणके समय राजनीतिक उथल-पुथल होना सम्भव है। पठान बहुत दुख देंगे। जुलाईके सूर्यग्रहण के समय अयूबखांको अपदस्थ करनेके षड्यन्त्रका पता चलेगा। पूर्वी पाकिस्तान और अधिक स्वायत्त शासन मांगेगा चटगांव प्रदेशमें भारी तूफान, बाढ़ आयेंगे और भारी हानि पहुंचेगी। पाकिस्तान 'नाटो'के साथ रहेगा। परन्तु उसकी परराष्ट्र नीति अधिकाधिक तटस्थताकी होगी।

नेपालमें 'वेस्ट मिनिस्टर' ढंगका संविधान स्थापित होनेका कोई चिन्ह नहीं। यद्यपि राजा महेन्द्र शासनको उदार बनाएंगे। विभिन्न पार्टियोंका प्रतिनिधित्व करने वाली राष्ट्रीय सरकार बनाएँगे। भारत और नेपालके सम्बन्ध और अधिक नहीं बिगड़ेंगे।

कोलम्बोमें तीन अंशमें मकर उदय हो रहा है, नवांश लग्न बहुत ग्रसित है। १०वां गृह निस्संदेह प्रायः मुक्त है। परन्तु शनिकी दृष्टि १०वें गृह पर है अतः राजनीतिक स्थिति स्थिर न रहेगी। तामिल लोग कुछ राजनीतिक रियायतें प्राप्त करेंगे। जुलाईके सूर्यग्रहणके प्रभावसे वर्तमान सरकार कदाचित् ही बच सके क्योंकि नववर्षकी कुण्डलीके लग्नेशसे यह सातवेंमें हो रहा है। इसी समय कोलम्बो और जापानके आस-पास भारी उपद्रव होंगे। सरकार अशान्तिको दबानेके लिए कठोर उपायोंसे काम लेगी। निकट भविष्यमें हमारे इस पड़ौसी देशमें शान्ति न होगी। सूर्यग्रहणके समय किसी राजनीतिक नेताकी मृत्यु होगी।

रंगूनमें मकर १६वें अंशमें उदय हो रहा है और शनि उच्च है। उदयोन्मुख सूर्यमें लग्नेश शुभ है। किन्तु केतु ७ के अन्दर स्थित है। ८वें गृह पर ११वें के स्वामी मंगल की भारी दृष्टि है। अतः वर्माकी राजनीतिक स्थिति अस्थिर रहेगी। बौद्ध भिक्षु असन्तुष्ट रहेंगे। सेना और मंत्रिमंडलमें न बनेगी। चीनकी ओरसे बर्मा पर तटस्थता को छोड़नेके लिए भारी दबाव डाला जायगा।

—

चेतावनी

१. चांदी सोना आदि सर्व धातु चावल, पारा, कपूर, पिपरमेन्ट। २. तेलके बीज, मूंगफली, एरण्डा, बिनौला, सरसों, तोड़िया। ३. शेयर्स। ४. दाल, अन्न, अरहर, मटर, मसूर, उड़द, मूंग, मोठ, रमास (लोबिया) तेवड़ा, खेसारी आदि सभी कठोल। ५. गुड़, खांड, शक्कर, ६. रुई, पाट, बारदाना, रेशम, (चमक) कालीमिर्च, कपड़ा, सूत। ७. किराना, लौंग, दालचीनी, लालमिर्च, हल्दी। ८. ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ आदिके स्पैशल अनुभूत चांस वार्षिक फीस ३०१), अर्द्ध वार्षिक १७५), त्रैमासिक १०१), मासिक स्पैशल चांस फीस ५१॥≡), पाक्षिक २५॥≡), साप्ताहिक १५॥≡), मनीआर्डर पहले भेजकर मंगावें। हमारे यहांसे निकलने वाला मासिक पत्र "भविष्यदर्पण" वार्षिक मूल्य ५), एक अंक १), मनीआर्डर भेजकर मंगावें। वी० पी० किसी भी वस्तुकी नहीं की जाती, पत्रोत्तर भी जवाबी कार्ड पाकर दिया जावेगा।

तार व पत्र का पता—

राजाराम ज्योतिषी

फोन, पी. पी, २१ मैनपुरी (यू० पी०)

भारतीय संस्कृतिकी अग्रदूत राष्ट्रधर्मकी प्रमुख प्रचारक ज्योतिर्विज्ञानकी एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका

'ज्योतिष्मती' के लिए

राष्ट्रके उद्गार

'ज्योतिष्मती' में कई वेद सम्बन्धी तथा अन्वेषणात्मक शास्त्रीय लेख मुझे अत्यन्त प्रिय लगे। आपने ज्योतिष जैसे विषय पर भी उत्तम पढ़ने और विचार करने योग्य विषयका संग्रह करके 'ज्योतिष्मती' का प्रकाशन प्रारम्भ किया उसके लिए हर एक पाठक आपका कृतज्ञ रहेगा।

—(हस्ताक्षर) श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, २६-१२-५८

❀ ❀ ❀ ❀

'ज्योतिष्मती' और आपका पंचाग अपनी कीर्तिके अनुरूप ही है। भविष्यकी सूचनाओंको समझकर स्वकर्तव्यमें दत्तचित्त होनेकी योग्य प्रेरणा बहुतोंको मिल सकने के कारण आगामी वर्षकी स्थितिके दिग्दर्शनका मैं अभिनन्दन करता हूँ।

—(ह०) मा० स० गोलवलकर, नागपुर, २५-३-६०

❀ ❀ ❀ ❀

'ज्योतिष्मती' और 'विश्वविजयपंचांग' में एक खास खूबी यह है कि इनमें भविष्यवाणी भी निकलती है जो बहुत हद तक ठीक हुआ करती है। आजकलके समयमें जबकि लोगोंका विश्वास भविष्यवाणीमें कम हो गया है, 'ज्योतिष्मती' और विश्वविजयपंचांग' की भविष्यवाणी उनके विश्वासको दृढ़ बनाता है।

—(ह०) सत्यनारायणसिंह (राज्यमंत्री केन्द्रीय सरकार)

❀ ❀ ❀ ❀

'ज्योतिष्मती' के अंकोंमें मैंने न केवल ज्योतिष-सम्बन्धी लेख पढ़े, अपितु इसमें साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर भी सुन्दर लेख देखे। 'ज्योतिष्मती' के प्रकाशनको जनताका सहाय्य अपेक्षित है। गवेषणा तथा विद्वत्ताके प्रति पंडितजी की सेवाओं पर मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

19, Thornhill Road
Allahabad 25-7-1958 (Sd.) Panna Lal
(C. S. I., C. I. E., I. C. S., M. A. BSc., L. L. B., D. Litt. Bar-at-Law)

❀ ❀ ❀ ❀

"...यह त्रैमासिक पत्रिका अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। इसमें ज्योतिषशास्त्रके शोधपूर्ण और गहन विचारोंके अत्युत्तम लेखोंका संकलन रहता है। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञोंकी कुंडलियोंसे देश तथा परराष्ट्रों पर उनके प्रभाव की समीक्षा, व्यापारियोंके कामके अनुभूत सिद्ध निर्णय, विश्वभरकी उथल-पुथल आदिका विवेचन पत्रिकामें मिलेगा। पत्रिका ज्योतिषके साथ-साथ धर्म संस्कृति तथा अध्यात्मके प्रचार प्रसारमें सक्रिय सहायता दे रही है। इसके सुयोग्य सम्पादक श्रीत्रिवेदीजी 'स्वाध्याय' पत्रके रूपमें पहले भी निरन्तर १६ वर्ष तक ज्योतिषशास्त्रकी सेवा द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

—(दैनिक 'हिन्दुस्तान' नई दिल्ली, ३ अप्रैल १९६०)



पंजाब के राज्यपाल
अ० भा० संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन के कार्यवाहक—
अध्यक्ष
विद्वद्वर महामहिम
श्री नरहरि विष्णु गाडगिल
महोदय की
शुभ सम्मति

राज भवन,
चण्डीगढ़
दिनांक ७—६—६१

'ज्योतिष्मती' पत्रिका में समय-समय पर पढ़ता हूँ। इस त्रैमासिक में केवल ज्योतिष शास्त्र का ही विचार नहीं होता किन्तु अन्य सामायिक विषय पर भी चर्चा होती है। इसमें ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से जो लेख आते हैं वे तर्कशुद्ध और शास्त्रीय दृष्टिकोण से आते हैं, इस दृष्टि से यह त्रैमासिक वाचनीय और उपयुक्त है।

—न० वि० गाडगिल

हिमाचल के लोकगीत

प्रदेश के लोगगीतों का प्रथम

सचित्र प्रकाशन

जिसमें

प्रदेश के चुने हुए अस्सी गीत संग्रहीत हैं

१६० पृष्ठ और दो-रंगी छपाई

मूल्य : तीन रुपये मात्र

डाक व्यय अलग

लोक साहित्य के प्रेमियों के लिए
उपयोगी ग्रंथ है

●

हि म प्र स्थ

प्रदेश की एक-मात्र
सांस्कृतिक तथा साहित्यिक

हिन्दी मासिक पत्रिका

हिमाचल प्रदेश की जानकारी के लिए एक महत्वपूर्ण साधन

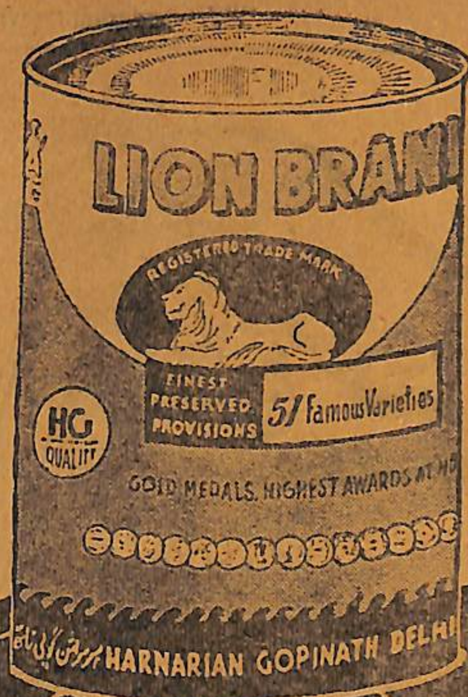
वर्ष में तीन विशेषांक : मूल्य फिर वही

वार्षिक शुल्क : तीन रुपये मात्र : एक प्रति २५ नए पैसे मात्र

संचालक, लोक सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला-४ द्वारा प्रसारित।

प्रीती भोज
हो या
जलपान

यह रुचिकारक
तथा पौष्टिक



शेर मार्का

REGISTERED TRADE MARK

चटनी अचार
व मुरब्बे

यह स्वादिष्ट "शेर मार्का" ५१ प्रकार के आचार व मुरब्बे बिना हाथ से छुये
वैज्ञानिक ढंग से इन शुद्ध और हवा निकाले हुए डिब्बों में मशीन से बन्द
किए जाते हैं और इस कारण सदैव ताजे रहते हैं और इनमें बार बार छूने से
होने वाली गंदगी का भय नहीं रहता। यह डब्बे हर शहर के श्रेष्ठ दुकानदारों
से मिल सकते हैं।

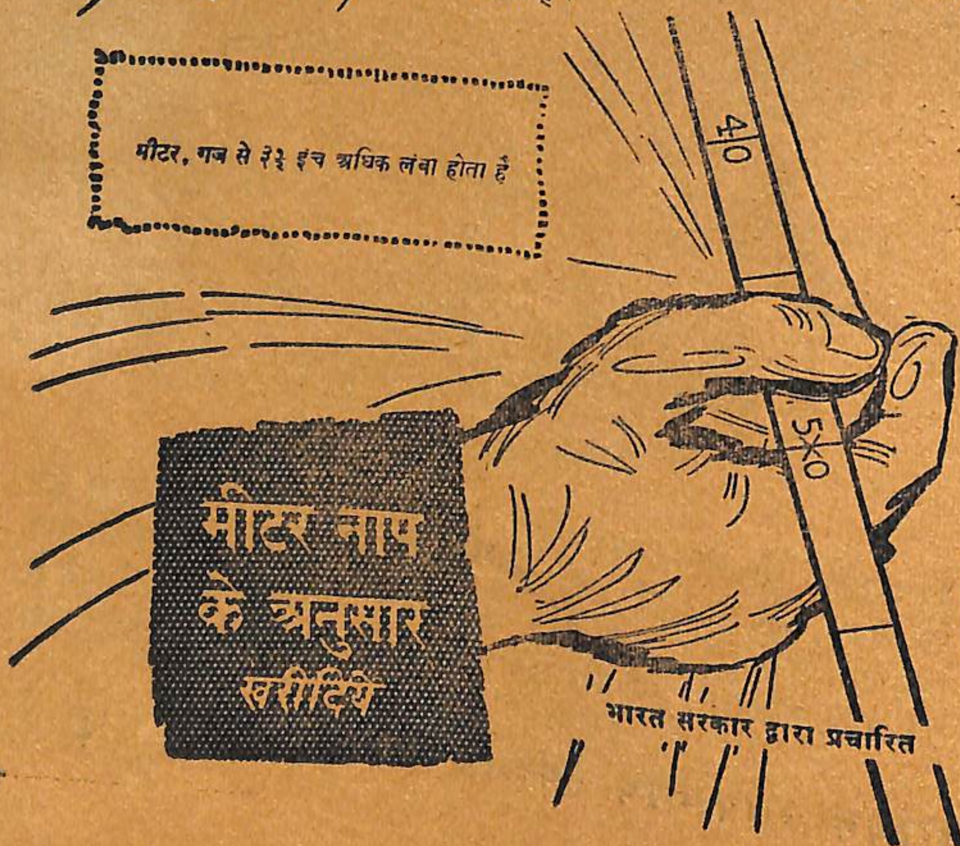
हरनारायन गोपीनाथ (स्थापित १८६०) देहली व नई देहली



मीटर नाप को अपनाइये

१ अक्तूबर से लम्बाई नापने के पैमाने के रूप में मीटर का प्रयोग शुरू हो चुका है। एक साल के बाद गज-फुट-इंच का प्रयोग कानूनी नहीं रहेगा।

कपड़े पर अब मीटर के निशान लगाये जाते हैं और कीमतें भी प्रति मीटर के अनुसार बताई जाती हैं।



डी ए ६२/५२९

राजस्थान को स्मरण रखिये

प्राचीन किले ❀ राजप्रासाद ❀ सुरम्य झीलें ❀ वन्य-जीवन-आवास ❀ तीर्थ स्थान ❀ चित्रकला ❀ मूर्तिकला ❀ सब प्रकार का हस्त उद्योग ❀ छपाई और बंधाई का काम ❀ केलिको की छपाई ❀ लाख की चूड़ियां ❀ पीतल, हाथी दांत तथा चन्दन के सामान ❀ जस्ते के बने प्रसिद्ध जोधपुरी बादले ❀ जोधपुरी मोजरियां ❀ कलापूर्ण सामान

- देश का सबसे बड़ा सूरतगढ़ यांत्रिक कृषि फार्म।
- विश्व की सबसे लम्बी राजस्थान नहर (निर्माण कार्य चालू है)
- सांभर का स्थलीय नमक उत्पादन क्षेत्र।
- देश का सबसे बड़ा ऊन उत्पादन करनेवाला प्रान्त।
- संगमरमर, चांदी तथा पन्ना की भारत प्रसिद्ध खानें।

राजस्थान प्रथम पंचवर्षीय योजनामें खाद्य स्वावलम्बी बन गया। द्वितीय योजना काल में १०.८६ लाख टन अतिरिक्त खाद्यान्न का उत्पादन किया। तीसरी पंचवर्षीय योजना में २१ करोड़ रुपये खर्च करने व १६ लाख टन अतिरिक्त खाद्य उत्पादन का लक्ष्य।

राजस्थान में सहकारिता का व्यापक प्रचार—आज राज्य में १६१२८ सहकारी समितियां काम कर रही हैं। उनकी संख्या तृतीय पंचवर्षीय योजना में २९९६३ हो जायगी। सहकारिता और सामुदायिक विकास योजना पर २२.५५ करोड़ रुपये खर्च करने का तृतीय पंचवर्षीय योजना में लक्ष्य।

राजस्थान में उद्योगों को प्रोत्साहन के लिए ९९ वर्ष की लीज पर भूमि, डेढ़ आना प्रति यूनिट सस्ती बिजली, बाहर से व राज्य से खरीदी जाने वाली मशीनों पर बिक्री कर व चूंगी की माफी व उद्योगों के लिए ऋण की सुविधाएं।

राजस्थान ७३९४ पंचायतों और १३९९ न्याय पंचायतों का राज्य।

जब कभी आप राजस्थान के गुलाबी नगर जयपुर में पधारें तो डीलक्स बस द्वारा जयपुर के दर्शनीय स्थानों, उद्योग केन्द्रों व मुख्य नगर का अवलोकन कीजिए। और राजस्थान स्टेट होटल के वातानुकूलित कमरों में ठहर कर आनन्द लीजिए।

राज्य सरकार द्वारा प्रसारित

पंजाब में

कृषि क्षेत्र में उत्पादन का रिकार्ड

पदार्थ का नाम	इकाई	आधार वर्ष १९५०-५१ में उत्पादन	वर्ष १९५५-५६ में उत्पादन	वर्ष १९६०-६१ का लक्ष्य	वर्ष १९६०-६१ में असली उपज	वर्ष १९६५-६६ के लिए उपज का निर्धारित लक्ष्य
खाद्यान्न	१००० टनों में	३३७९	४५०१	५९४१	६१६५	७८५०
गन्ना	,,	४४०	५५९	७८०	१००३	९५०
तिलहन	,,	१०६	१४४	१८५	२०५	३००
कपास	१००० कांटों में	३७१	६०५	१२५०	७८८	१२००
सब्जियां	१००० टनों में	—	—	—	६००	१२००
फल	,,	—	—	—	४२०	५६०

एक झलक अन्य सफलताएँ

१. पंजाब में प्रति एकड़ सबसे अधिक उत्पादन गेहूँ ८५ मन, धान १०० मन और मक्की १२० मन है।

२. खेतीहरों को उन्नत बीज सप्लाई करने और उनकी मिकदार बढ़ाने के लिए राज्य में इस समय २२३ सरकारी बीज फार्म हैं।

३. पंजाब सरकार किसानों को तृतीय पंचवर्षीय योजना के मध्य निम्नलिखित सहायता ऋणों के रूप में देगी।

छोटी सिंचाई योजनाओं के लिए ६४८ लाख रुपये, फलों के बगीचे लगाने के लिए ४५ लाख रुपये, उत्तम प्रकार के कृषि उपकरणों (हलों) के लिए और हस्तचालित पौधा सुरक्षा मशीनों के मूल्यों में रियायत करने के लिए क्रमशः २७ लाख और १४ लाख रुपए व्यय किये जाएंगे।

४. वर्ष १९६०-६१ में लगभग ३.४० लाख एकड़ भूमि में हरी खाद डाली गई और लगभग १०० लाख टन मिस्सी खाद तैयार की गई।

५. वर्ष १९६०-६१ में जापानी ढंग से धान की फसलों की बिजाई २,७९,५७१ एकड़ क्षेत्र में की गई।

६. फलों के वृक्षों के अधीन क्षेत्र वर्ष १९६०-६१ में ५५,००० एकड़ से बढ़कर वर्ष १९६५-६६ में ७०,००० एकड़ हो जायेगी।

कृषि सूचना सेवा, कृषि विभाग, पंजाब द्वारा प्रचारित।